देश-देश की कविताएँ

केदारनाथ अग्रवाल

देश-देश की कविताएँ

(पाब्लो नेरूदा और अन्य कवियों की कविताओं के अनुवाद)

केदारनाथ अग्रवाल

सम्पादक

डॉ० अशोक त्रिपाठी

साहित्य भंडार

इलाहाबाद 211 003

I S B N : 978-81-7779-209-6

❁

प्रकाशक

साहित्य भंडार

50, चाहचन्द, इलाहाबाद–3

दूरभाष : 2400787, 2402072

❁

लेखक

केदारनाथ अग्रवाल

❁

स्वत्वाधिकारिणी

ज्योति अग्रवाल

❁

संस्करण

साहित्य भंडार का

प्रथम संस्करण : 2010

❁

आवरण एवं पृष्ठ संयोजन

आर० एस० अग्रवाल

❁

अक्षर–संयोजन

प्रयागराज कम्प्यूटर्स

56/13, मोतीलाल नेहरू रोड,

इलाहाबाद–2

❁

मुद्रक

सुलेख मुद्रणालय

148, विवेकानन्द मार्ग,

इलाहाबाद–3

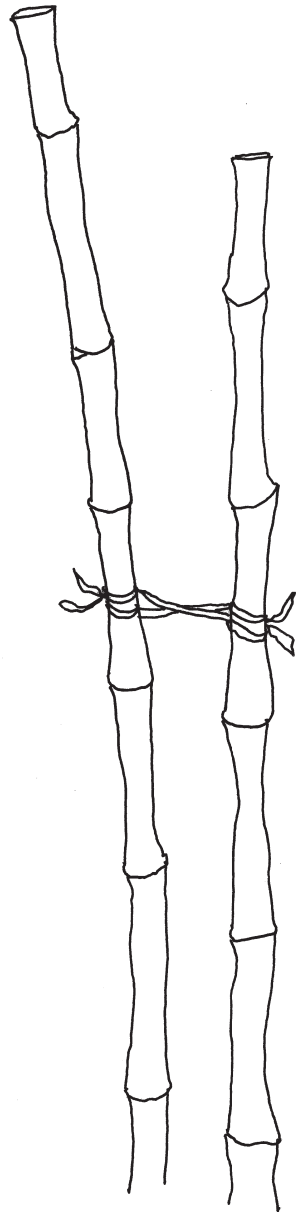

मूल्य : 250.00 रुपये मात्र

देश-देश की कविताएँ

पाब्लो नेरूदा
और
अन्य कवियों
की
कविताओं
के
अनुवाद

प्रकाशकीय

इस संकलन का प्रकाशन 'साहित्य भंडार' के प्रथम संस्करण के रूप में सम्पन्न हो रहा है। केदारजी के उपन्यास 'पतिया' को छोड़कर, उनके शेष समस्त लेखन को प्रकाशित करने का गौरव भी 'साहित्य भंडार' को प्राप्त है। केदारनाथ अग्रवाल रचनावली (सं० डॉ० अशोक त्रिपाठी) का प्रकाशन भी 'साहित्य भंडार' कर रहा है।

एक तरह से केदार-साहित्य का प्रकाशक होने का जो गौरव 'साहित्य-भंडार' को मिल रहा है उसका श्रेय केदार-साहित्य के संकलन-संपादक डॉ० अशोक त्रिपाठी को जाता है उसके लिए 'साहित्य-भंडार' उनका आभारी है। यह गौरव हमें कभी नहीं मिलता यदि केदार जी के सुपुत्र श्री अशोक कुमार अग्रवाल और पुत्रवधू श्रीमती ज्योति अग्रवाल ने सम्पूर्ण केदार-साहित्य के प्रकाशन का स्वत्वाधिकार हमें नहीं दिया होता। हम उनके कृतज्ञ हैं।

भाई आर. एस. अग्रवाल ने इस संकलन को कलात्मक सज्जा प्रदान किया इसके लिए उनका आभार।

सतीशचन्द्र अग्रवाल
विभोर अग्रवाल
2010

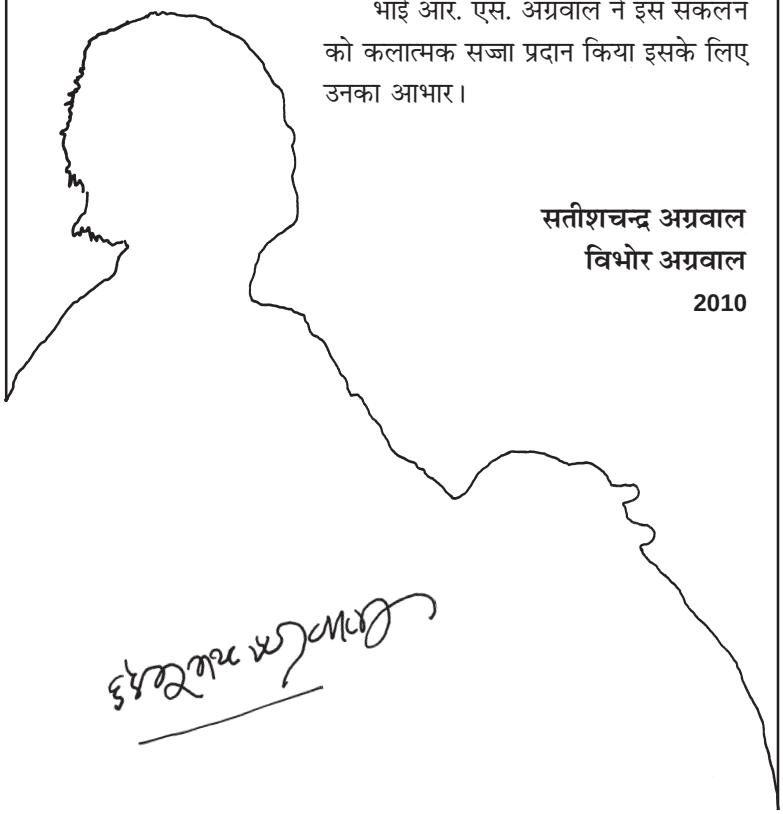

सम्पादकीय

'देश-देश की कविताएँ' वरिष्ठ प्रगतिशील कवि केदारनाथ अग्रवाल द्वारा अनूदित कविताओं का संकलन है। इसका पहला प्रकाशन सन् 1970 में हुआ था। उस समय इसमें पाब्लो नेरूदा की 04, नाज़िम हिकमत की 07, मायकोवस्की की 23, वाल्ट ह्विटमैन की 25, अलेक्सी सुरकोव की 05, एज़रा पाउण्ड की 11, याकूब कोलास की 03, निकोला वास्सरोव की 03, पुश्किन की 02, प्लेतान वोरोन्को की 01, मूसा जलील की 01, जॉन कॉर्नफोर्ड की 01, ऐंड्रियायी मैलीश्को की 01 तथा एक चीनी कविता, अर्थात् कुल 85 कविताओं के अनुवाद प्रकाशित हुए थे।

इस बीच केदार-साहित्य के खोजने-खँगालने के दौरान पाब्लो नेरूदा की 26 कविताओं के अनुवाद और मिले। इसके अलावा शेली की 02, डब्ल्यू. एस. लेण्डर की 01, कीट्स की 02, रवीन्द्रनाथ टैगोर की 01 तथा मूलकवि के नामोल्लेख के बिना 02 कविताएँ अर्थात् 34 अनूदित कविताएँ और मिलीं।

प्रस्तुत संकलन 20 कवियों की 119 कविताओं का संकलन है। इसके प्रकाशन के बाद भी यह कहना जोखिम भरा होगा कि केदारजी की सभी अनूदित कविताएँ, इस संकलन में शामिल कर ली गयी हैं। क्या पता कल कुछ और कविताओं के अनुवाद किसी पत्र-पत्रिका में या कहीं किसी के पत्र में फिर मिल जायें। यदि कहीं किसी को मिले तो उपलब्ध करा दें, अगले संस्करण में उन्हें भी शामिल कर लिया जायेगा।

ये सारे अनुवाद अंग्रेजी कविताओं को छोड़कर मूल भाषा से न होकर, अंग्रेजी में अनूदित कविताओं के हिन्दी अनुवाद हैं। कुछ को छोड़कर अधिकांश की मूल भाषा अंग्रेजी नहीं थी। लेकिन सभी अनुवाद अंग्रेजी भाषा से हिन्दी में किये गये हैं। यदि अंग्रेजी अनुवादक मूल

कविता के साथ कहीं न्याय नहीं कर पाया होगा, तो उसका ठीकरा केदारजी के सिर नहीं फोड़ना चाहिए।

अनुवाद कर्म दुहरी प्रक्रिया का कर्म है। अनुवादक को पहले मूल कविता में डूबना पड़ता है, फिर अनूदित भाषा में उसे रूपांतरित करना पड़ता है। एक तरह से उसे मूल रचना के समानांतर एक दूसरी सृष्टि करनी पड़ती है। अनुवाद का काम बहुत मुश्किल काम है।

हर भाषा का अपना मुहावरा होता है, उसकी अपनी संस्कृति होती है, उसके अपने भाषाई छल-छद्म होते हैं। यहाँ तक कि एक ही भाषा के अलग-अलग रचनाकारों का भी अपना-अपना अलग भाषाई मुहावरा होता है, उसके अपने भाषाई छल-छद्म् होते हैं, उनके अपने अलग-अलग भाषाई संस्कार होते हैं। यदि अनुवादक का दोनों भाषाओं पर समान अधिकार नहीं है, तो यह काम और भी मुश्किल हो जाता है। भाषाई परिपक्वता के बावजूद यह ज़रूरी नहीं है कि वह मूल रचना की पर्तों को भेदता हुआ, उसके मर्म की खोज कर ही ले।

यदि रचनाकार जीवित है तो बेहतर यही होगा कि अनुवादक मूल रचनाकार के साथ संवाद करके अनुवाद को अंतिम रूप दे। 'राग-दरबारी' का अंग्रेजी में अनुवाद करते समय उसकी अनुवादिका इसके लेखक श्रीलाल शुक्ल से बाकायदे अपने अनुवाद की परख कराती है।

अनुवाद एक मुश्किल, श्रम साध्य और समय खाऊ कर्म है, फिर भी यह गारंटी नहीं कि पाठकों के ताने सुनने को न मिलेंगे।

इन सारे जोखिमों को उठाकर भी केदारजी ने इस काम में हाथ क्यों डाला। अपनी मौलिक काव्य-सृष्टि के साथ अनुवाद के इस जटिल और तलवार की धार पर चलने के खतरे के समान, इस खतरे को उठाया तो इसके पीछे उनका यही लक्ष्य रहा होगा कि दुनिया के गिने-चुने जन-संघर्ष, जन-आकांक्षाओं, जन आक्रोश, युद्ध-विरोध, साम्राज्यवाद विरोध और नैसर्गिक सौन्दर्य जैसे विषयों के प्रति प्रतिबद्ध श्रेष्ठ रचनाकारों की रचनाओं से हिन्दी पाठक रू-ब-रू हो सके। इनकी क्रांतिकारी-चेतना हिन्दी पाठकों में विकसित हो सके। ये सभी कवि उनके पसंदीदा कवि थे। कुछ पर तो उन्होंने कविताएँ भी लिखी हैं।

इन अनुवादों में अक्सर आपको केदारपन की खुशबू मिले, तो आश्चर्य नहीं। हिन्दी के ठेठ मुहावरे, ठेठ शब्दावलियाँ और लयात्मकता इस खुशबू के पीछे हैं।

केदारजी अक्सर अपनी कविताएँ मूल और अनूदित दोनों रामविलासजी के पास भेजा करते थे, उनकी राय के लिए। 'मित्र-संवाद' (रामविलास शर्मा और केदारनाथ अग्रवाल के पत्रों का संकलन, सम्पादक–रामविलास शर्मा, अशोक त्रिपाठी) में संकलित 8-2-1957 के एक पत्र में केदारजी ने रामविलासजी को कीट्स की कविता "I stood tiptoe upon a little hill" की चार पंक्तियाँ (127 से 130), Hyperion के पहले स्टैंजा तथा शेली की एक कविता का अनुवाद भेजा। 8-3-57 के पत्र में शेली की The Moon, एक चीनी कविता तथा डब्ल्यू० एस० लेण्डर की कविता के अनुवाद भेजे। इन पर रामविलासजी की टिप्पणी इस प्रकार हैं–

''तुम्हारी चीनी कविता का अनुवाद बहुत साफ उतरा है। 'चहुँ ओर' चल जाती है। हर बंद की अन्तिम पंक्ति बराबर निखरती चली गयी है और अन्त में 'सुहागिन नारी हो' ने सादगी के साथ कविता को तार सप्तक पर पहुँचा दिया है।'' ''लेण्डर वाली कविता का शब्द-चयन निर्दोष है। उम्दा अनुवाद है।'' (रामविलास शर्मा का 13.3.57 का पत्र)

"Tip toe" का अनुवाद बहुत सुन्दर है, केवल 'सुस्पंदन' का 'सु' भरती का लगता है। Hyperion का अनुवाद बहुत सुन्दर हुआ है। तुमने Keats का घनत्व उतार लिया है, जो अत्यन्त कठिन है। गहन छाँह स्वस्थ श्वास। अनालाप सा वाणी वंचित और अंतिम दो पंक्तियों में भाषा की नयी परख दिखाई देती है। शेली के अनुवाद में काफी मार्दव है। ..... शेली का भाव ही नहीं, उसका संगीत भी खींच लिया है तुमने। (रामविलास शर्मा का 27-2-1957 का पत्र)

ये टिप्पणियाँ केदारजी के अनुवादों की श्रेष्ठता को उजागर करती हैं। इस संस्करण में अनूदित कवियों का अतिसंक्षिप्त तथ्यात्मक परिचय इस आशय से दिया जा रहा है, ताकि वे तमाम पाठक जो इन महान कवियों से परिचित नहीं हैं, उनसे परिचित हो सकें और कम से कम

यह जान सकें कि वे किस देश, किस भाषा, और किस समय के कवि हैं। इनमें से कुछ कवियों पर उन्होंने कविताएँ भी लिखी हैं—उन कविताओं को भी यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।

पाब्लो नेरूदा की 26 और कविताएँ उपलब्ध कराने और इस संकलन में शामिल करने की अनुमति देने के लिए मैं अग्रज अशोककुमार अग्रवाल और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती ज्योति अग्रवाल का आभारी हूँ। अग्रज सतीशचन्द्र अग्रवाल, प्रिय विभोर अग्रवाल, इस संकलन को प्रकाशित कर रहे हैं और अग्रज राधेश्याम अग्रवाल इसकी साज-सज्जा कर रहे हैं, इसके लिए इनका भी आभारी हूँ।

दिल्ली
28 अगस्त, 2009

—अशोक त्रिपाठी

अनुक्रम

शीर्षक या कविता की प्रथम पंक्ति **पृष्ठ**

पाब्लो नेरूदा

- रेल भंजकों को जगने दो 17
- आज मैं एक पवित्र लड़की के पास लेटा था 44
- अपार हिमपात और बर्फ 45
- विलाप के साथ एक गेय प्रशस्ति 46
- सामुद्रिक के प्रति 48
- उद्यानकर्मी लड़की के प्रति 52
- महासागर 55
- भोर की भंगुरता 57
- मृत्यु मात्र 59
- मई का मानसून 62
- नैश जागरण 64
- इधर-उधर चहलकदमी करते हुए 68
- ध्वस्त सड़क 71
- फेडरिको ग्रेसिया लोर्का के प्रति 74
- स्वप्न का घोड़ा 80
- कागज़ी कबूतर 82
- दिवंगत राजभक्तों की माताओं को समर्पित एक गीत 84
- महासागर 88
- सागर 88
- अतीत 89
- कविता 92
- शब्द 94
- नाच 97
- प्रत्येक दिन खेलती हो तुम 99

- आज रात मैं लिख सकता हूँ 101
- हो चुका अश्रुगान 103
- एकाकी सज्जन 107
- मत्स्यकन्या और पियक्कड़ों की पौराणिक कथा 109
- स्पेन जैसा था 110
- ओ धरा, मेरा इन्तजार करो 112

नाज़िम हिकमत

- तुम्हारे हाथ और उनके असत्य 117
- बीसवीं सदीं 117
- मैं कवि हूँ 118
- आओ साथी! अब दस्तों में मिलो हमारे 119
- यहाँ युद्ध के लिए घृणास्पद सेना का परिचालन होता 119
- वहाँ लाल, पीले, काले, गोरेजन 120
- और अधिक, डाक्टर, प्रभात में 121

मायकोवस्की

- मैं चौतरफा 125
- पेरिस में जीवन 135
- उसके गाने 135
- कवि की कविता 136
- मेरा दिल मुझसे सहमत है 136
- हमको दो वह ओजस कविता 137
- बंदूक की बराबरी 137
- पर जब वे तुक ताँत तानते 138
- जहाँ हवाएँ 138
- मैं कहता हूँ 138
- अब, अपनी ऊँचाई पाकर उठकर 139
- बारूदी पीपों के करतब 139
- ब्रिटिश पुतलियाँ 139
- अगर तुम्हारी आँख 140
- साथी लोगो 140
- शांति बढ़ाओ 141

- जन जहाज हैं 141
- मैं स्वयं को माँजा करता 142
- कुछ को जीवन महानंद है 143
- गन्दे ग्रन्थों को 143
- हम चलते हैं 144

वाल्ट ह्विटमैन

- मैंने बाज़ी नहीं लगाई 147
- अनगिन लुप्त अगोचर कलियाँ 147
- गरुण राज के चंगुल-सी जो नंगी-बूची परतदार हैं 148
- झर झर झरती मृदु फुहार से मैंने पूछा 148
- नहीं कभी कुछ नष्ट हुआ है और न होगा 149
- मैं खड़ा हूँ चोंच पर जैसे गरुण के जो बली है 150
- युगों युगों से हरी घास उगती आयी है 150
- मैंने लोगों को बतियाते बहुत सुना है, 151
- गंधों से भरे हुए गेह और कमरे हैं, 152
- घर की मज़बूत सुरक्षित दीवारों से 154
- जब दरवाज़े के आँगन में पिछली बार बकाइन फूली 154
- मधु वसन्त के वक्षस्थल पर 156
- मैं तुम्हारे पास होऊँ 157
- वह चाहे सब के पीछे हो, 157
- वसंत का प्रथम डैंडेलियन 158
- स्वर्ण, लोहित, बैंगनी, हीरक, हरा, मृगदेहिया 158
- मैंने लुसियाना में देखा 159
- क्यों आये हो और कहाँ से तुम आये हो? 160
- संतरणशील जलयान 160
- आत्मगीत का 21वाँ भाग 161
- आत्मगीत का 22वाँ भाग 162
- सुघर, कुठार, विवर्ण, दिगम्बर 163
- ऊहापोह-विवाद नहीं करती है वसुधा 163
- गायक को है गीत 164
- निश्चयपूर्वक शपथ-ग्रहणकर मैं कहता हूँ 164

अलेक्सी सुरकोव

- शांति 167
- परम अपावन पथ पर चलकर 167
- आग उगलती तोपें गरजें इससे पहले 168
- ऐसा कोई गेह नहीं है 168
- संसार का हृदय 171

एज़रा पाउंड

- मैं, हाँ मैं, हूँ वह 177
- आओ, हम यहाँ 179
- और दिन हैं 179
- कैसे यह शोभा 180
- परिवार की हालत ख़राब हो रही थी 180
- पेड़ प्रविष्ट हो गया है मेरे हाथों में 181
- ऐसी ठंढी 181
- इरिन्ना है एक आदर्श दम्पति 182
- ओ सफेद रेशम के पंखे 182
- मेरे बगल में चलता है काला चीता 182
- अवश्य, वह यहाँ से होकर निकल गई है 183

याकूब कोलास

- आओ 185
- कोई उनको जान न पाया 186
- अब लोगों के घर अपने हैं 186

निकोला वाप्त्सरोव

- हमने बल से बाँहें जकड़ीं 189
- मैं निशिदिन साँसें लेता हूँ 189
- एक कलघर 190

पुश्किन

- नहीं किसी ने निर्मित की मेरी समाधि है 193
- दीर्घ काल तक जनता मुझको प्यार करेगी 193

प्लेतान वोरोन्को
- ठौर चुना बंजर में हमने काम लगाया 195

मूसा जलील
- मेरा उपहार 198

जॉन कॉर्नफोर्ड
- नहीं कभी 199

ऐंड्रियाई मैलीश्को
- हाँ, निश्चय ही, अविचल रहकर अडिग खड़े वे 200

एक चीनी कविता
- कटैयों का गीत 201

शेली
- क्या तुम नभ पर चलते चलते 206
- कर्ण प्रिय कोमल स्वरों के पतन पर भी 206

डब्ल्यू. एस. लेण्डर
- विदाई 207

जॉन कीट्स
- कविता की गम्भीर पंक्ति 209
- गिरि गह्वर के गहन छाँह छाए विषाद में 210

रवीन्द्रनाथ टैगोर
- दिन अँधेरा–मेघ झरते 213

मूल कवि के नामोल्लेख से वंचित कविताएँ
- हे भगवान 215
- लुढ़कता रहा हूँ 215

●●

पाब्लो नेरूदा

स्पैनिश कवि पाब्लो नेरूदा का पूरा नाम था–नेफ्ताली रिकार्डो रेईस बसाल्टो (Neftali Ricordo Reyes Basoalto)। 'नेरूदा' तखल्लुस इन्होंने चेक लेखक और कवि जान नेरूदा (Jan Neruda ; 1834-1891) से लिया था। इनका जन्म 12 जुलाई, 1904 को पैरल (PARRAL), चिली में हुआ था। इनके पिता जोसडेल कारमेन रेईस मोराल्स (Joseoel Carmen Reyes Morales) रेल कर्मचारी थे और माँ रोजा बसाल्टो (Rosa Basaolto) स्कूल टीचर थीं, जो पाब्लो नेरूदा को जन्म देने के दो महीने बाद ही परलोक सिधार गयीं।

पाब्लो नेरूदा के लेखन में बहुत बैविध्य है। प्रेम और क्रांति उनकी कविताओं में एक ही तीव्रता के साथ व्यंजित होती हैं। नेरूदा कवि और गद्यकार होने के साथ-साथ कूटनीतिक और राजनैतिक हस्ती भी थे। वे चिली की कम्युनिस्ट पार्टी के सेनेटर थे। उनका पहला प्रकाशित साहित्य एक निबंध था, जो उन्होंने 13 साल की उम्र में लिखा था। अपनी राजनीतिक प्रतिबद्धता के कारण उन्होंने निर्वासित जीवन भी जिया।

उनके साहित्यिक अवदान को देखते हुए उन्हें 1971 का साहित्य का नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया। उनकी गणना बीसवीं शताब्दी के संसार की किसी भी भाषा के, सबसे महान् कवियों में होती है।

69 वर्ष की अवस्था में, उनका देहावसान दिल का दौरा पड़ने से, 23 सितम्बर, 1973 को चिली के सैण्टियागो शहर के सान्ता मारिया क्लीनिक में हुआ।

उनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं–Crepusculario (Book of Twilights), Veinte Poemas de amor y una Cancion deseperada (Twenty Love Poems and a Desperate Song), Espana en el Corazon (Spain in My Heart), Canto a Stalingrado (1942), Nuevo Canto de amor a Stalingrado (1943), Canto General आदि। उनकी अंतिम कविता थी Right Comrade, its the Hour of the Garden.

पाब्लो नेरूदा पर लिखी केदारजी की एक कविता भी यहाँ दी जा रही है।

पाब्लो नेरूदा के प्रति

मैं
खिल उठा
सूरजमुखी का फूल
तुम्हारे अभिवादन में
पाब्लो नेरूदा!
देखता हूँ
तुम्हें सामने खड़ा,
हाथ में लिए,
कविता की किताब
जैसे आग
अंक में लिये हो
खरा सोना।
पुरस्कृत हुए हो तुम
जमीन से
निकली धातुओं के गायक,
फौलाद की घंटियों को
दिल और दिमाग में
रात-दिन
बजाते-बजाते।

प्यार से घेरे
खड़े हैं तुमको
कीर्ति के कुरंग
हाथ चाटते तुम्हारे,
हर्ष की
बड़ी आँखों से
तुमको निहारते।
कल जो
विरोध था
नाक भौं सिकोड़ता—
तुम्हारे कृतित्व को
नकारता,
पाँव के पास
अब वही
घुटने टिकाये,
प्रशस्ति में झुका,
स्वीकारता है
तुम्हारे काव्य की महत्ता,
जनहित में लगी
जनवादी प्रतिबद्धता।

❐

रेल भंजकों[1] को जगने दो

[1]

कालोरिडो नदी के पच्छिम एक जगह है मुझको प्यारी,
मैं अपने अभ्यन्तर की प्रत्येक वस्तु ले,
मैं अपने पूरे अतीत के गये दिवस ले,
वर्तमान को ले, निहारकर, मुड़ता हूँ उस ओर।
वहाँ लाल ऊँची चट्टानें उठी खड़ी हैं
जो देहाती आबहवा के कोटि करों की दृढ़ कृतियाँ हैं।
वहाँ अतल के महागर्भ से ऊपर उठकर
सिंदूरी आकाश ताम्रवर्णी होता है,
अग्नि और बल का प्रतीक बनकर तपता है
अमरीका फैला है चहुँदिशि महिष-चाम-सा!
रात साफ है,
अन्धकार की भागदौड़ में
वहाँ तारिका-मण्डित शिखरों के प्रदेश में,
मैं पीता हूँ हरी ओस का तेरा प्याला।

हाँ अरिजोना के तपते भूतल से होता,
विस्कोन्सिन के जड़ पठार से होता,
मिल्वाँकी से होता—
जो आँधी से और बरफ से सीना ताने लड़ता,—

---

1. 'रेल स्प्लिटर' का अनुवाद। धर्मवीर भारती ने 'रेल स्प्लिटर' के लिए 'आराकश' शब्द दिया था। यह अधिक सटीक लगता है। (सं०)

वेस्टपाम के गरम दलदलों की धरती पर,
टैकम स्थित तरु देवदारु बागानों के अति समीप ही,
तेरे वन की अति सुगन्ध के उर-अन्तर में,
मैं घूमा हूँ धरती माता!

नीले पत्ते जहाँ झलकते,
जहाँ अनेकों निर्झर झरते,
चक्रवायु की तरह प्रकंपित गीत-गान की तरह उमड़ते,
सरिताएँ सुस्तवन लीन हैं मठनिवासिनी जैसे होवें,
जहाँ हंस वन बीच विचरते,
जहाँ सेब के फल लगते हैं,
मिट्टी, पानी और अपरिमित शान्ति जहाँ है, गेहूँ उगता;
वहाँ आत्म-अस्तित्व-शिला के मध्य बिन्दु के भीतर से मैं
खोल सका दृग, कान, हाथ अपने समीर में,
और लगा सुनने बहु बातें पुस्तक, इञ्जन, बरफ, कलह की,
फैक्टरियों की, कब्रिस्तानों, तरु-पाँतों की,
पदचापों की मनहट्टा टापू के शशि की,
स्वर मशीन के, भूमि निगलनेवाले लोहे की कलछुल के,
ध्वनि बरमे की जो अमरीकी गिद्धों जैसा हृदय बेधती,
और सभी वह गोचर होता
जो दुख देता, और काटता, सीता रहता,
जो मनुष्य को अरु मशीन के सब पहियों को
अविरत गति के और जन्म के चक्कर में हरदम रखता है।

मुझे प्यार है कृषक-कुटी से।
नव माताएँ सुप्त सुगन्धित प्रिय इमली के शरबत जैसी;
लोहा किये अभी के कपड़े :
संघी खेतों घिरे हजारों घर की आगें :

नदी तीर के वे मनुष्य जो
नीर-गर्भ के कंकड़ जैसे कर्कश स्वर में गाते :
तम्बाकू जो अपने चौड़े पत्तों से उठ
व्याप गयी है गेह-गेह में
बन अगियाबैताल दहकती :
आओ यहाँ मिसारी में, देखो पनीर औ' दाना,
देखो जहाज की छतें महकती, लाल चिकारे जैसी,
देखो मनुष्य को जौ-खेतों के सिन्धु हैलते,
देखो उद्धत नया बछेड़ा श्याम-नील रंग
जो अलफेलफा घास चबाता सूँघा करता :
टुनटुन बजती घंटी देखो :
मस्त पोसता देखो हिलता :
लाल अगिन की जीभ निकाले
लोहारों की भट्ठी देखो :
और इसी गड़बड़ में वन के चलचित्रों के
प्रेम निपोरे है देखो अपने दाँतों को
भू के जन्मे एक स्वप्न में।

हमको प्रिय है शान्ति, तुम्हारी, नहीं नकाब।
नहीं तुम्हारे योद्धाओं के मुख हैं सुन्दर
हे उत्तर अमरीका!
तुम हो विपुल विशाल और छवि-आकर।
जन्म तुम्हारा भी विनीत है ज्योंकि रजक का,
तुम उज्ज्वल हो अपनी नदियों के समीप हो।
मधुकोषों की शान्ति तुम्हारी
जो अजान में रची गयी है
वही रुचिर है और मधुर है।
हमें तुम्हारे जन प्यारे हैं

ओरेगन की रज से जिनके हाथ अरुण हैं।
हमें तुम्हारा नीग्रो प्यारा
जो गजदन्तों के प्रदेश से
प्रिय संगीत तुम्हें लाया है।
हमें तुम्हारा नगर सुहाता, सार सुहाता,
ज्योति सुहाती, कलें सुहातीं,
हमें तुम्हारे मधुकोषों का लघु शहरों का
शान्तात्मन मधु बहुत सुहाता,
अक्खड़ लड़का ट्रैक्टर चढ़ता प्यारा लगता,
जैफरसन से मिले वरासत में जो तुमको जई-खेत हैं
हमको प्रिय हैं।
वह पहिया जो चालू रहकर गरज रहा है
और तुम्हारी समुद्रीय सीमा को हरदम नाप रहा है
हमें सुहाता।
धुआँ फैक्टरी का प्यारा है,
और हमें अतिशय भाते हैं
नयी व्यवस्था के हजार गिनती में चुम्बन :
हमें तुम्हारा उद्योगी शोणित प्यारा है,
और तुम्हारे श्रमजीवी के तेलसने मैले हाथों से
हमें प्रेम है!
बहुत दिनों से स्वर्गनिशा की छवि के नीचे,
गूढ़ शान्ति में, महिष चर्म पर, अगणित अक्षर
और हमारी सत्ताओं के पूर्वकाल के गीत कर्णप्रिय
मूक पड़े हैं सोये-सोये।
मेलवाइल है सदाबहारी समुद्रीय तरु,
उसकी शाखों से प्रकटे हैं
वक्र-कुटिल पोताग्रभाग बहु
और काठ का और पोत का एक दीर्घ कर।

ह्विटमन खेतों के पसार-सा जो अपार है,
पो अपनी गणितीय शाम में,
ड्रेजर, उल्फे,
हरे घाव हैं जो कि हमारी अनुपस्थिति में,
और लोकरिज जो कि हाल में अभी मरा है
और अनेकों जो कि रसातल चले गये हैं
छायाओं में लोप हुए हैं,
जिनके ऊपर दहक रहा है वही सबेरा,
हम जिनसे ही बने-गढ़े इंसान आज हैं,
बली बालगण अन्धे कैप्टन,
और कृत्य बहु और पातदल, भय उपजाते समय-समय पर,
सुख-दुख के विघ्नों से पूरित,
तृण के मैदानों में कुचले क्रय-विक्रय से,
समधरती के मरे न जाने कितने मानव,
पहले कभी न आये कोई पीड़ित नादानों के सम्मुख,
नये प्रकाशित आगम वक्ताओं के आगे,
घास-भूमि के महिष-चाम के ऊपर चलकर।
ओकीनावा फ्रांस, लियत से
(जैसा नारमन मेलर ने लिपिबद्ध किया है),
उग्र अनिल औ' जल-तरंग से,
लगभग सब-के-सब लौटे हैं युवा सिपाही।
मिट्टी और पसीने की वह कथा तिक्त है और हरित है :
वह प्रवाल की चट्टानों के उर से उठता
यदा कदा ही सुन पाये हैं जल-तरंग से गुंजित गाना,
सम्भवतः, द्वीपों में जाकर मर जाने को,
छू न सके वह तीव्र महकती पुष्प-गन्ध को :
रक्त, और मल, कूड़ा-करकट सौ-सौ चूहे,
और लड़ाकू थका भग्न दिल,

रण में उनको रहे खदेड़े,
अब वे लौटे वापिस आये,
उनका स्वागत किया तुम्हीं ने अपने व्यापक खुले देश में
और आज वे मौन पड़े हैं
बन्ध कमल की नामहीन पलकों के भीतर
पुनर्जन्म को और भूलने को गत गाथा।

[2]

किन्तु उन्होंने घर में एक अतिथि को पाया,
या लाये वे नूतन-आँखें (या पहले ही से अन्धे थे)
या घर्षणरत शाखाओं ने पलकें फाड़ीं
या अमरीकी धरतीतल में नयी-नयी चीजें प्रकटी हैं।
वे ही नीग्रो जो कि तुम्हारे साथ लड़े हैं,
डटकर और मधुर मुसकाते,
देख रहे हैं :
लोगों ने रक्खा है उनके नगर-भाग में क्रूश प्रदीपित
लटकाया है और जलाया है लोगों ने
एक ख़ून के तव भाई को,
लोगों ने ही उसे बनाया व्यक्ति समर का,
और आज देते हैं उसके मुख पर ताला
और हरण करते हैं उसकी मति निर्णायक;
चाबुक क्रूश लिये बधिकों का
अन्धरात्रि में जमघट जुटता
(सिन्धु-पार की कथा और थी, युद्धस्थल में।)
मेरे सैनिक साथी!
आज तुम्हारे घर बैठा है
एक अप्रत्याशित मेहमान, घेरा मारे हुए महान्
जैसे एक वृद्ध अठपैरू दाँत काटने वाला जीव।

प्रेस पुराना जहर उगलता है बर्लिन में छना-छनाया :
('न्यूज़वीक', 'टाइम' इत्यादि)
कटु निन्दा के घृणित प्रकाशित मैगज़ीन हैं।
हार्स्ट, नाज़ियों को जिसने संगीत प्रेम का गाया
अब हँसता है और तेज़ करता है पंजे
ताकि पुनः तुम लड़ने जाओ,
मूँगे की चट्टान जहाँ हैं और घास के चौरस थल हैं,
घर बैठे अभ्यागत के हित।
वे तुमको अवकाश न देते हैं रत्ती भर :
वे इच्छुक हैं सदा बेचते जावें गोली,
और बने बारूद कि जो बिकती ही जाये,
पूर्व की बाहें नये-नये हथियार उठायें।
मालिक लोग घरों में ठहरे हुए तुम्हारे
सभी जगह अब फैलाते हैं बड़े विषैले अपने पंजे,
प्रेम-पियाला स्पेन और फ्रैंको को देते
किन्तु पिलाते तुम्हें खून से भरा पियाला :
(एक बधिक है सौ बध करता) : मार्शल का मद!
नये रक्त की भेंट चाहते हैं मालिक गण :
चीनी खेतिहर, स्पेनी बन्दी बलि के बकरे के समान हैं,
ख़ून पसीना कूबा के इखई खेतों का,
अश्रुपात उन महिलाओं का
जो चिली के क्वैले-ताँबे की खानों में कर्मलीन हैं
तौल रहे हैं लूट–तुला पर बन्दूकों के बाँट चढ़ाकर।
फिर ताकत के मार रहे हैं भारी गदके,
और भूलते नहीं बरफ घन
और रामधुन यह दुहराना :
'आओ रक्षा करें इसाई संस्कृति की हम।'
क्या यह कड़ुवा घोल नहीं है?

तुम इसके अभ्यस्त बनोगे, और पियोगे, सैनिक-साथी!
यह दुनिया के किसी देश में चन्द्र-ज्योति में या भिंसारे,
जो बलवर्धक सुखदायक है,
किसी बड़े होटल में तुमको मिल सकता है
दाम चुकाकर लम्बे बिल का
जिस पर आकृति अङ्कित है वाशिंगटनजी की!!
यह भी तुमको खूब पता है,
चार्ल्स चैपलिन ने दुनिया में दयावान पितु गँवा दिया है,
बुरा बना है,
और युद्ध से धनी बने बनियों के जालिम न्याय-गेह में,
अनअमरीकी भावों के हित,
हावर्डफास्ट सरीखों को भी,
कलाकार विज्ञानविशारद लोगों को भी,
और और लेखक लोगों को
लाया गया ज़बरदस्ती अभियुक्त बनाकर
और खड़ा ही उनको होना पड़ा वहाँ पर।
दूर-दूर तक हर कोने में इस जग में भय व्याप गया है।
समाचार जब यह पढ़ती है मेरी चाची
थर्रा उठती है तब डर से।

प्रतिहिंसा की और शर्म की निम्न कोटि की ये अदालतें
सारी दुनिया देख रही है आँखें खोले।
यही न्याय है, ख़ून-निचोड़ू हर बैबिट का,
हर ग़ुलाम के हर मालिक का,
लिंकन के भी हत्यारों का :
बैंकों चकलों की मेजों पर
गोल सुनहरे बजनेवाले सिक्कों के प्रति
जिज्ञासा होती है केवल

और यही तो है सर्वोपरि;
वहाँ नहीं होती जिज्ञासा कभी क्रूश के लिये एक पल
जो दारुण है और गूढ़ है;
न्याय करे ऐसी जिज्ञासा यह उसको अधिकार नहीं है।

मारीनिगो, त्रु जीलो,
गोन्जालिज, वीडेला, दूत्रा और सोमोजा,
हुए फौज में बोगोटा में भरती,
और किया अभिनन्दन।
नौजवान अमरीका! तुम तो नहीं जानते उनको,
हाय हमारे नभ के हैं वे मन्द-मलिन-प्रभ भूत,
उनके पंखों की छाया है तिक्त :
मृत्यु, घृणा, बन्दीघर, प्राणोत्सर्ग :
दक्खिनवाले देश अनेकों
अपने नाईट्रेट तेल से
पैदा करते हैं राक्षस ही।

चिली में रजनी के तम में,
दीन मलीन खनक के घर में
हत्यारे का हुक्म पहुँचता,
बच्चे जग पड़ते हैं रोते।
कई हज़ारों व्यक्ति जेल में बन्द पड़े हैं, सोच रहे हैं।
पैरगुवे में, गहरे वन की सघन छाँह में,
बधित देशप्रेमी की हड्डी छिपी हुई है,
खूनी गोली वहाँ ग्रीष्म में सन्नाती है।
वहीं सत्य ने प्राण गँवाया।
वैन्डरवर्ग, आर्मर, मार्शल और हार्स्ट ने,
क्यों पच्छिम को नहीं बचाया व्यवहित होकर

सैन्टोडोमिन्गो में जाकर?
निकरगुआ का प्रेसीडेण्ट क्यों गया सताया,
रात जगाया, और भगाया
और मरा क्यों निर्वासन में?

आज़ादी को नहीं, बचाना होगा केले,
और सोमोजा काफी होगा इसके खातिर।
यही बड़े विजयी विचार सब
ग्रीस चीन में पैठ गये हैं
ताकि वहाँ की सरकारों को मदद प्राप्त हो
जो कि मलिन दरियों के सम ही दागदार हैं,
अरे सिपाही!!

[3]

ऐ अमरीका! मैं तेरी धरती के बाहर भी जाता हूँ
वहाँ बनाता हूँ अपना अटिकाऊ घर मैं,
दिन भर बातें करता, उड़ता और घूमता गाता रहता।
और एशिया, संघ सोवियत, यूरल में मैं रुक जाता हूँ,
निर्जनता से, शाल वृक्ष से व्याप्त प्राण विस्तृत करता हूँ।
दिग्दिगन्त में जो मानव ने प्रेम और संघर्ष निरत रह रचा-रचाया
मैं करता हूँ उसे प्यार ही।
यूरल में जो मेरा घर है,
देवदारु की पूर्व निशा से
और शहद के लम्बे छत्ते के समान ही अनालाप से
अब भी वैसा घिरा हुआ है।
यहाँ आदमी के हाथों से और वक्ष से
लौहसार गोधूम जन्म ले प्रकट हुआ है,
और हथौड़ों की ध्वनियों से वृद्ध अरण्य प्रसन्न हुए हैं
जैसे कोई नीला लोक।

और यहाँ से
मैं मानव लोगों का विस्तृत आरपार भूगोल देखता
औरत, बच्चों, फैक्टरियों का,
प्रेम-प्रीति के मधु-गीतों का, चटसारों का,
जो कि विलसते हैं पाटल से उस कानन में
जिसमें कल तक रही विचरती वन्य लोमड़ी।
इसी विन्दु से, आरपार जैसे नक्शे में,
मेरा हाथ टटोल रहा है हरे शाद्वलों,
कोटि कारखानों से उठता धुआँ उमड़ता,
गन्ध मिलों की, चमत्कार सन्निद्ध शक्ति का।
मैं दोपहरी बाद लौटता नयी बनायी सड़कों से हो
और रसोईघर में जाता जहाँ करमकल्ला चुरता है
और जहाँ से जग के खातिर एक बहेगा नूतन निर्झर!

व्यक्ति यहाँ भी नौजवान बहुतेरे लोटे,
छूट गये पर लाखों की संख्या में पीछे,
फाँसी के झूले पर झूले, मुरदा बनकर फूले,
दहे दहन के खासतौर के बने कुण्ड में,
क्षार हुए, निज अंश न छोड़ा,
स्मृति में केवल नाम शेष है उनका।
ध्वंस हुई थी उनकी नगरी :
बधी गयी थी प्यारी धरती :
लाखों लाख काँच के टुकड़े और हड्डियाँ
टूट-टूटकर एक हुई थीं :
पशु, फैक्टरियाँ, झरने खोये,
अरे! युद्ध ने उनको निगला;
इतने पर भी, नौजवान थे वापिस आये,
और देश का प्रेम बनाया जिसने उनको

वह तो इतनी अधिकाई से मिला रक्त में
बोल उठे प्रत्येक स्नायु से 'मेरी धरती',
वे गाते हैं लाल रक्त से अपने गाने
संघ सोवियत की गुन-गाथा।
बर्लिन के हत्यारों की आवाज अभी तक
जोर-शोर से गूँज रही थी जब वे लौटे
पुनर्जन्म शहरों, पशुओं, झरनों का करने!
श्वेत काँस की दाढ़ी ह्विटमन ऊपर कर लो,
और विलोको इस धरती से तुम मेरे सँग
बड़ी महकती ऊँचाई से।
कहो, देखतो हो क्या ह्विटमन?
मैं लखता हूँ, धीयमान भाई भी मेरा मुझसे कहता,
कैसे उस आलोक-नगर स्तालीनग्राड में,
फैक्टरियाँ सब काम निरत हैं चालू रहकर,
जो मृतकों की यादगार हैं;
मैं लखता हूँ कैसे लोहित समर-भूमि से,
पीड़ाओं से, ज्वालमाल से,
आर्द्र प्राप्त में जन्म प्राप्त करता है ट्रैक्टर
और झनकता चलता है खेतों की ओर!
ह्विटमन! मुझको अपना स्वर दो
और दफन की अपनी छाती का वह बल दो
जिससे उन नव निर्माणों के मैं मनमोहक गाने गाऊँ।
आओ हम तुम दोनों मिलकर
उस सबका अभिवन्दन कर लें
जो पीड़ा के उर से प्रकटा,
अनालाप के अतल सिन्धु से
और मन्द-प्रभ-मलिन विजय से
ऊपर उठकर लहरा हहरा!

उमड़ रही है लोहे की आवाज तुम्हारी स्तालिनग्राड!
गेह गेह के फर्श-फर्श पर,
फिर से प्यारी आशा प्रकटी
जैसे सामूहिक घर प्रकटे,
और पुनः आन्दोलन बढ़ता है आगे को,
शिक्षा देता,
गाना गाता,
रचना रचता।
स्तालिनग्राड रुधिर से ऊपर यों उभरा है
जैसे पानी, पत्थर, लोहे का अरकेस्ट्रा,
घर में फिर से रोटी जन्मी,
चटसारों में झरना जन्मा,
नये मचानों, नव पेड़ों पर,
वायु लहरती चढ़कर दौड़ी,
किन्तु कठिन दृढ़ वृद्ध वोल्गा
अपने शान्त हृदय से धड़की।
देवदारु के और चीड़ के साफ नये टाँडों पर आकर,
मृत बधिकों की कब्रगाह के सिर से ऊपर,
एक-एक से मिलीं किताबें,
भग्नस्थल पर बनीं नाट्यशालाएँ सुन्दर,
प्रत्याघातों बलिदानों पर आच्छादित हैं :
स्मृति-चिन्हों की तरह चमकती हुई किताबें :
एक-एक खस खस धरती के लिए मरे जो एक एक भट
एक एक उन सब सुभटों पर एक एक पुस्तक विरचित है,
निर्विकार इस कीर्ति-कंज के एक एक दल के ऊपर ही
एक एक पुस्तक अर्पित है।

संघ सोवियत! यदि हम तेरे, संघर्षों में
बहे अपरिमित विपुल रक्त को कर सकते बस संचित,

जिसको तूने दिया जगत को माता बनकर
ताकि जिये मरती आजादी,
तो बन जाता हर सागर से एक वृहत्तर नूतन सागर
हर सागर से एक गहनतर नूतन सागर,
सब सरिताओं के सम झंकृत,
आराकानी ज्वालामुखियों की ज्वाला की तरह प्रकम्पित।
इस सागर में हाथ डुबाओ
सब देशों के सभी निवासी
फिर कर खींचो, और डुबाओ इस सागर में।
सब कुछ भूला, सब कुछ लांछित,
सब कुछ मिथ्या, सब कुछ दागी,
उनको सबको जो पच्छिम के गोबर-गिरि के
सौ सौ लघु लेंडू कुत्तों के साथ लड़े थे,
अपमानित कर तेरा लोहू,
ओ स्वतन्त्र जनता की जननी!!

यूरल पर्वत के सौरभमय देवदारु के तरु शिखरों से
देख रहा हूँ वह ग्रन्थालय जो कि रूस में निर्मित होता,
वह प्रयोगगृह जहाँ स्वयं ही मौन कर्म में लग्न-लीन है;
देख रहा हूँ रेलगाड़ियाँ भार वहनकर,
गीत वहनकर, नये-नये नगरों को जातीं,
और इसी तहदार शांति में एक कम्प पैदा होती है
जैसे कोई नये हृदय में,
कन्याएँ पंडुकियाँ लौटीं हरे घास के चौरस थल पर
उसकी उज्ज्वलता को हरतीं,
स्वर्ण वर्ण हो जाते हैं नारंगी के तरु,
रोज-रोज हर रोज सवेरे
एक नया परिमल बहता है हाट-बाट में

जो कि अनिल के ऊपर उड़कर उस ऊँची धरती से आता
जहाँ वृहत्तर प्राणों का उत्सर्ग हुआ था,
मैदानों का नक्शा कँपता
जिस पर अपनी संख्या लिखते हैं इंजीनियर,
और जगत की एक नयी कुहरिल हिमरितु के आरपार तक
जलमार्गों के लम्बे-लम्बे कुंचित अजगर लेटे दिखते।

महापुरातन क्रेमलिन गढ़ के त्रय कमरों में
जोजेफ स्तालिन एक व्यक्ति रहता है नामी।
रात रोशनी बड़ी देर में उसके कमरे की बुझती है।
देश न उसका और न दुनिया उसको देते हैं विश्राम।
अन्य भटों ने रूस देश को सत्ता दी थी,
स्तालिन ने ही रूस देश को प्राण दिये हैं।
स्तालिन ने ही सोचा और बनाया, उसकी रक्षा की है,
स्तालिन का ही अंश रूस है,
चैन नहीं स्तालिन को पलभर क्योंकि रूस को चैन नहीं है।
स्तालिन ने ही लिया मोरचा अन्य समय में
बर्फ और बारूद बीच जा धूर्त ठगों से
जो कि चाहते थे अब जैसा पुनः जिलाना,
दण्ड-दमन को औ' दुर्गति को, कृषकदासगण की कटु पीड़ा,
दीन-हीन लाखों मनुष्य की गुप्त व्यथाएँ।
स्तालिन ही था कट्टर दुश्मन पच्छिम के उन सब गुण्डों का
जो 'संस्कृति की रक्षा' के हित भेजे आये।
हत्यारों के उन गुण्डों की तन से चमड़ी गयी उतारी,
स्तालिन ने ही वृहत सोवियत-संघ-भूमि पर
रात और दिन काम किया था।
किन्तु बाद को सीसकनिर्मित एक लहर-से
खूनपियक्कड़ : चैम्बरलेनी पाले पोसे, जरमन आये।

स्तालिन ने उनसे टक्कर ली हर मोरचे पर, हर सीमा पर,
हर भगदड़ पर, हर बढ़ने पर,
दूर नगर बर्लिन तक धँसकर,
स्तालिन के सुत चक्रवायु की तरह स्वजन के,
उमड़-उमड़कर दौड़े आये,
महाव्यापिनी शान्ति रूस की प्रतिक्षण लाये।

वहाँ मलोटव विरोशिलव हैं,
बड़े-बड़े सेनापतियों के साथ उन्हें मैं देख रहा हूँ,
वे अदम्य दुर्दम सैनिक हैं;
हिम-आच्छादित सुदृढ़ ओक-तरु के सम दृढ़ हैं!
नहीं किसी के पास हर्म्य हैं।
नहीं गुलामों की पल्टन है।
नहीं एक भी धनी बने वह कभी युद्ध में रक्त बेचकर।
नहीं एक भी मोर सदृश
राआ-डि-जिनरो बोगोटा की यात्रा करता,
ताकि वहाँ के सूबेदारों, खूनचुसक्कड़ जल्लादों को आज्ञा देवे।
नहीं किसी के पास वस्त्र हैं दो सौ जोड़ी।
नहीं किसी का उन फैक्टरियों में हिस्सा है
जो कि युद्ध के अस्त्र बनातीं,
हाँ, उनका सबका हिस्सा है
मोद और निर्माण-कार्य में महादेश के
जहाँ सबेरा गूँज रहा है काल-रात्रि से उठकर ऊपर।
जग को कहा उन्होंने 'साथी'।
राजा किया लकड़हारे को।
कोई ऊँट न जा पायेगा अब इस सुन्दर सुई-आँख से।
मैले गाँव बनाये निर्मल।
भूमि बाँट दी।

कृषकदास को ऊपर खींचा।
भिखमंगों को मुक्त बनाया।
जल्लादों को जड़ से मारा।
ज्योति जगाई गहन निशा में।

इस कारण से, हे अरकंससघासी लड़के!,
वेस्टप्वाइन्ट के बड़े रंगीले अरे जवान!,
हे डेट्राइट के कारीगर!,
न्यूआरलियन्स के हे जहाज के कुली पुराने!
मैं तुम लोगों से कहता हूँ : दृढ़ हो विचरो,
कान खोल लो, सुनो सकल मानव के जग को,
मैं तो कोई राज-व्यवस्था के विभाग का नहीं व्यक्ति हूँ!
और नहीं जालिम फौलादी मैं नवाब हूँ
जो तुमसे बातें करता है अति स्वारथ से,
मैं तो धुर दक्खिन अमरीकावासी कवि हूँ,
पटगुनिया की रेल-सड़क का एक मजूर पिता है मेरा,
मैं अमरीकी–हवा 'आडियन' के समान ही आज चपल हूँ
जो कि प्रवाहित होती है उस एक देश से
जहाँ जुल्म, सन्ताप, जेल है शासन करता,
जहाँ तेल ताँबा क्रमशः बनता है सोना
वैदेशिक पूँजीपतियों के लोभ-लाभ को।
तुम वैसी तो मूर्ति नहीं हो
एक हाथ में जिसके सोना, दूजे में है एटम का बम।
तुम तो वह हो जो कुछ मैं हूँ,
तुम तो वह हो जो कुछ मैं था,
तुम तो वह हो जो कुछ हमको रखना होगा निश्चय रक्षित।
तुम तो शुचि अमरीका ही की
अधःपरत की भ्रातृ-भावना की मिट्टी हो।

तुम हो जनमार्गों सड़कों के जनसाधारण।
मेरा भाई जुअन तुम्हारे बन्धु जॉन-सा जूत बेचता।
मेरी जुअना बहन तुम्हारी जेनी बहना के समान ही
आलू का अनुभव करती है।
मेरे तन में नाविक लोगों, खनकों का ही वही खून है
जो कि तुम्हारे तन में बहता है सरिता सम।
पीटर! हम तुम द्वार उघारेंगे इस खातिर
ताकि हवा मसि के परदों से प्रिय यूरल की उड़कर आये।
हम तुम दोनों गुस्सेवर से बात कहेंगे
अरे हमारे प्यारे सहचर! यह धरती हम लोगों की है,
यहाँ सुनाई नहीं पड़ेगी किसी तोप की कोई सीटी,
किन्तु सुनाई देगा हमको गीत-गान ही
एक एक के बाद दूसरा और तीसरा।

[4]

हे अमरीका! यदि तुमने हथियार थमाये निज अतिथों को
ताकि ढहा दें वे शुचि सीमा
और शिकागो के हत्यारे पार पहुँचकर,
अपने दुर्दम कटु शासन से,
मुक्त हदय के गीत चुरा लें जो हमको प्रिय,
सरल धूप की तरह व्यवस्था शीघ्र मिटा दें जो हमको प्रिय,
तो हम पत्थर तोड़ हवा से निकल पड़ेंगे तुम्हें काटने
तो हम खिड़की से आखीरी निकल पड़ेंगे तुम्हें काटने
तो हम लहरों से निकलेंगे सींग मार कर तुम्हें गिराने
तो हम कुड़ से मुट्ठी बाँधे निकल पड़ेंगे तुम्हें ढहाने
तो हम निकलेंगे निश्चय ही भूख प्यास से तुम्हें सताने
तो हम निकलेंगे निश्चय ही नरक-अग्नि में तुम्हें जलाने!
अस्तु सिपाही! पाँव न रखना मृदुल फ्रांस में

क्योंकि वहाँ अंगूरलताओं की रखवाली में हम होंगे
जो शौक्तिक ही शौक्तिक देंगी,
और अनेकों कन्याएँ भी निश्चय होंगी
जो तुमको दिखलायेंगी वह ठौर-ठिकाने
जहाँ मिलेगा पड़ा रक्त जरमन का ताजा।
अरे सिपाही! तुम मत चढ़ना
स्पेन देश की शुष्क मेरुमाला के ऊपर
क्योंकि वहाँ की एक-एक चट्टान लपट में बदल जायेगी।
और हजारों साल चलेगी वीर लड़ाई।
अरे सिपाही! जैतूनी बागों में जाकर कहीं न खोना
वरना लौट न पाओगे तुम ओक्लाहोमा।
सुनो सिपाही! ग्रीस न जाना
क्योंकि आज का बहा तुम्हारा खून वहाँ का
निश्चय ही तुमको रोकेगा उठकर ऊपर।
नहीं फँसाना मछली टोकोपिला नगर में
क्योंकि चमकती यह असि-मछली जान जायेगी
तुम्हीं चोर हो और तुम्हीं ले गये लूट धन।
और एक अनजान खनक आरोकनिया का
गड़े पुराने तीर उखाड़ेगा अपघाती
राह विजेताओं की अब तक रहे देखते गड़े-गड़े जो।
अरे सिपाही! गायक का विश्वास न करना जो गाता है अपना गाना
और न करना पैकिंगघर के मजदूरों का
क्योंकि तुम्हें सर्वज्ञ मिलेंगे आँखों मुट्ठी वाले वे जन
जो विन्जुलियाई लोगों की भाँति छली हैं
एक हाथ में लिये छतारा दूजे में पेट्रोलियम बोतल।
अरे सिपाही! तेरे आने से पहले तक सन्दीनो वन में सोता है,
उसकी रैफल को वल्लरियों और मेघ ने छाप लिया है,
बिना पलक का उसका मुख है,

किन्तु, घाव जो मार चुके तुम वह जिन्दा हैं
प्वैरतारीकों के हाथों सम
जो छुरियों का तेज चाहते हैं मनचाहा।

दुनिया तो निर्दयी तुम्हारे प्रति होगी ही।
नहीं द्वीप ही उजड़े होंगे किन्तु हवा भी उजड़ी होगी।
नहीं सुनेगी शब्द तुम्हारे जिसका सुनना है उसको प्रिय।
उन्नत पेरू में तुम जाकर नहीं धृष्टता ऐसी करना
नहीं माँगना मांस मनुज का :
ध्वंसों के जर्जर कुहरे में
वहाँ हमारे रक्त-राग के सहृदय पूर्वज
नीलमणी अपनी तलवारें
तव विरोध में तेज करेंगे,
और वहाँ की हर घाटी में रण के कर्कश शंख बजेंगे
अपने अपने गोफना लेकर योद्धाओं के आ जाने को,
अमरू के प्यारे पुत्रों के आमंत्रण में।
नहीं मैक्सिकी मरुस्थली में ऐसे-ऐसे मनुज खोजना
जो सूर्योदय के विरोध में आगे आवें।
जापाटा की और रैफलें नहीं सुप्त हैं,
तेल लगी हैं,
वे टेक्सा की ओर निशाना साध चुकी हैं।
नहीं प्रकट होना कूबा में जहाँ समुद्री तेज-चमक में,
मीठे गन्ने के खेतों में,
एक अकेली काली चितवन बाट तुम्हारी जोह रही है,
और अकेली एक तुम्हें ललकार रही है वहाँ पुकार
जो कि मरेगी या मारेगी।
और न इटली के पार्टीजन क्षेत्रों में ही बढ़ना :
एक तरह की वर्दीवाले उन सैनिक लोगों के आगे,

जिन्हें रोम में तुम रक्खे हो,
पार न जाना।
पार न जाना मुनि पीटर के देवाश्रम के
क्योंकि पार के प्राकृत मुनिजन ग्राम निवासी,
मीन-शिकारी और समुद्री मुनिवर सारे,
प्यार घास के मैदानों के महादेश को नित करते हैं,
महादेश में जहाँ कि दुनिया नयी बही है।
पार न जाना बल्गेरिया में किसी सेतु के ऊपर चलकर
क्योंकि वहाँ के सेतु पाँव मत रखने देंगे अपने उर पर।
रोमनिया की सरिताओं में, रक्त उबलता
हम उलचेंगे, आतताइयों की निन्दा में।

वंदन करना नहीं कृषक का,
अब किसान यह जान गया है जमींदार की कब्र खुदी है,
अब किसान होशियार खड़ा है हल-रैफल ले निज रक्षा में
नहीं देखना—नहीं देखना अब किसान की ओर लोभ से
नहीं जला देगा किसान अब तुम्हें क्रोध से
नभ में जलते हुए नखत-सा।
नहीं चीन के सिंधु-तीर पर तुम जहाज से नीचे आना
क्योंकि च्यांग तो दास दाम का, शत्रु देश का, वहाँ न होगा
होगा केवल वहाँ किसानों की हँसियों का वन फौलादी,
होगा केवल वहाँ बरूदी अग्निमुखी गिरि उल्कापाती।

अन्य रणों में जलपूरित खन्दक होती थीं,
और कँटीले तार नुकीले नख फैलाये पंजे खोले
अन्तहीन घेरे रहते थे।
किन्तु आज है खन्दक चौड़ी,

चौड़ी से भी अतिशय चौड़ी,
किन्तु आज है पानी गहरा
गहरे से भी अतिशय गहरा,
और तार की धातु और है,
और तार है अतिशय दुर्जय।
जीवन के नाना रूपों की एक-एक अगणित गाँठों से
बने तार हैं घोर दु:ख के,
यही तार हैं तार पुराने
दूर-दूर के देश-देश के सब जनगन के,
सब झंडों की सब जनता के,
सब जलयानों की जनता के,
सब खोहों के सब लोगों के जहाँ इकट्ठा किये गये वे।
यही तार हैं तार पुराने घोर दु:ख के,
सब मछलीजालों के जन के
चले गये जो जालों के बल वात्य नाँघते।
यही तार हैं तार पुराने घोर कष्ट के,
सब नरकों के अग्नि कुण्ड में जलते जन के,
धरती की छाती के कुड़ के सभी जनों के।
यही तार हैं तार पुराने घोर कष्ट के,
करघे और ढलाई में रत हर मनुष्य के,
हर लोकोमोटिव के चालक हर मनुष्य के।
बार-बार यह महातार यह
सहसबार यह आर पार जग को घेरे है,
जग खंडित, उन्मूलित लगता।
यही तार जब पूरी धरती को लपेटकर भर लेता है
अनायास ही यह चुम्बक से जुड़ जाता है।
किन्तु दूर से और दूर भी,
पूर्ण प्रदीपित, और पूर्ण दृढ़,

अवर्णनीय, फौलादी,
गीत-गान के लिए प्रकम्पित,
युद्ध हेतु कटिबद्ध निरन्तर,

टैगा टुंड्रा के नर-नारी,
मृत्यु-विजेता, शूर समर के,
नदी वोल्गा-तट के वासी,
स्तालिनग्राड निवासी बच्चे,
दीर्घकाय भट यूकरेन के

—यह सब शोणित और उपल की,
लौहसार की, और गान की,
शौर्य और आशा महान की,
एक विपुल ऊँची दिवार हैं:
ताक रहे हैं राह तुम्हारी।

यदि तुमने दीवार छुई यह तो क्वैला की तरह जलोगे,
निश्चय ही तुम भस्म बनोगे।
रोचेस्टर के भीम शरीरी छाया के आकार ग्रहणकर
बिन जोती धरती के ऊपर हवा घास में बिखर जायेंगे
ताकि बरफ में दुबके सोयें।
वे रणरागी वहाँ मिलेंगे,
जो पीटर से लेकर अब तक सब शूरों से बढ़े-चढ़े हैं,
किया जिन्होंने जग को चकृत,
वही तुम्हारे प्रिय पदकों से निश्चय ही गोलियाँ गढ़ेंगे
जो सन्नातीं और चीखतीं,
आज मोद की महामही में अविरत चलती चला करेंगी।
पर प्रयोगशाला आच्छादित लतागुल्म से
मुक्त-शक्ति के अणु छोड़ेंगी तव गर्वित नगरों की ओर!!

[5]

अब यह सब कुछ मत होने दो।
रेल-भंजकों को जगने दो।
अब तो ऐबी को आने दो,
लिये कुल्हाड़ी, प्लेट काठ की,
और उसे अब तो खाने दो
साथ साथ कृषकों के भोजन।
वृक्ष-त्वचा सा अब उसका सिर,
अब बलूत-तरु के कंधों के
अब तख्तों के छेदों जैसे उसके लोचन,
हरियाली से ऊपर उठकर,
सिकुआ पेड़ों से भी ज्यादा ऊँचे उठकर,
दुनिया लखने को फिरने दो।
अब तो उसको क्रय करने दो।
कुछ तो औषधि घर में जाकर।
बस में चढ़ टेम्पा जाने दो।
अब तो उसको एक सेब में
पैने दाँत गड़ाने ही दो,
और सिनेमा में घुसने दो
ताकि वहाँ वह भी बतियाये सरल जनों से।

रेल-भंजकों को जगने दो।
अब तो ऐबी को आने दो
अब तो उसके वृद्ध झाग को,
इलीनास की हरी भूमि को,
इलीनास की स्वर्ण-भूमि को,
उन्नति से उन्नत करने दो।
अब तो उसकी तेज कुल्हाड़ी,

दास-मालिकों और दमन पर,
और विषैले छापेघर पर,
और खून से सनी बजारू हर व्यापारिक सामग्री पर,
स्वीय नगर ही में चलने दो।

अब तो उजले युवक गणों को,
अब तो नीग्रो नौजवान को,
सीने की दीवार ढहाने,
विद्वेषक को मार गिराने,
और रुधिर के व्यापारी की हर हड्डी को चूर बनाने,
पल्टन लेकर चढ़ आने दो!
अब हँसने दो, अब गाने दो,
और उन्हें जय वर लेने दो!!

रेल-भंजकों को जगने दो।
शांति द्विभाओं को जो आयें,
शांति सेतु को, शांति मद्य को,
शांति छंद को जो मेरा अनुसरण किये हैं
जो कि रक्त में मेरे जन्मे,
जो मेरे पहले के गाने भूमि-जाल में प्रेम-जाल में
बार-बार ही फाँस रहे हैं!
शांति नगर को प्राप्त जहाँ है,
जहाँ रोटियाँ जग पड़ती हैं।
शांति-शांति है मिसीसिपी को,
जहाँ जन्म पाती हैं नदियाँ।
शांति बन्धु की प्रिय कमीज को।
शांति किताबों को समीर की मुद्रा जैसी।
शांति कीव को, कोलखोज को।

शांति शहीदों की सुभस्म को।
शांति ब्रूकलिन के लोहे को।
शांति डाकिये हरकारे को
द्वार-द्वार जो दिन सम जाता।
शांति कोरिओग्राफर को भी।
शांति दाहिने कर को मेरे
जो लिखता है बस रोजारियो।
शांति बल्वियावासी जन को
गुप्त रहस्यी वङ्ग-पिंड जो।
शान्ति तुम्हें, तुम शादी कर लो।
शान्ति तुम्हें भी मिल बिसबिस की
जिनमें आरा चालू रहता।
शान्ति तुम्हारे टूटे दिल को
स्पेन-निवासी छापामारो!
शान्ति अजायबघर तुमको भी,
जहाँ एक सबसे प्रिय तकिया
दिल से कढ़ी हुई रक्खी है।
शान्ति तुम्हें भी हे रसोइये!
शान्ति तुम्हारी हर रोटी को।
शान्ति स्वच्छ चिकने आटे को।
शान्ति तुम्हें भी रबी फसल के
आगे आने वाले गेहूँ।
शान्ति प्रेम को, सब सनेह को,
जो कि खोज लेगा ही निश्चय
लटकन से शोभित निज आश्रय।
शान्ति जगत के सब जिन्दों को।
शान्ति सकल जल, थल, समीर को!

अब मैं तुमसे विदा माँगता,
अब मैं अपने घर पहुँचा हूँ;
यहाँ स्वप्न में, मैं पटगुनिया
पहुँच गया हूँ, जहाँ समीरण
खलिहानों में खड़खड़ करता,
और जलधि है हिम छितराता।

मैं केवल कवि, और नहीं कुछ :
मुझे प्यार है तुम लोगों से,
मैं अपने प्रिय जन में फिरता;
मेरे प्यारे इस प्रदेश में
वे खनकों को जेल भेजते,
और हुक्म देते हैं सैनिक
बड़े-बड़े न्यायाधीशों को!
किन्तु मुझे मेरे स्वदेश की
एक-एक जड़ तक प्यारी है।
बार बार मैं जन्म अगर लूँ,
बार बार मैं जन्म यहीं लूँ
जहाँ जंगली देवदारु हैं,
दक्खिन की अंधड़ समीर है,
नयी खरीदी किंकिणियाँ हैं!
मुझको याद करे मत कोई
याद करें हम सब दुनिया को
और प्यार से मेज घेर लें।
नहीं चाहता रक्त बहे फिर
रोटी जिसमें सने लाल हो,
उड़द डूबकर जिसमें तैरे,
और मधुर संगीत न भाये।

यही चाहता हूँ मैं अब तो :
खनक और लघु लड़की, नाविक,
वह वकील, वह गुड़ियावाला,
मेरे साथ सिनेमा देखें और देखकर बाहर आवें,
लाल-सुरा की लाल जवानी ओठ खोलकर जी भर पीवें।
मैं तो गाना गाने आया और गवाने तुमको आया।

❐

आज मैं एक पवित्र लड़की के पास लेटा था

आज मैं एक पवित्र लड़की के पास लेटा था,
क्षीर-सागर के तट पर जैसे मैं लेटा था,
मंथर आकाश के दहकते नक्षत्र के बीचोबीच जैसे मैं लेटा था।
उस पवित्र लड़की की चितवन से
प्रलम्ब हरा प्रकाश
कठोर हीर-नीर की भाँति निपतित हो रहा था
नूतन शक्ति के अगाध पारदर्शी आवर्तों के साथ।
उसके उरोज दो लौ वाली आग के समान थे
जो दो उन्नत प्रदेशों में प्रज्ज्वलित थी,
जो दो धार की नदी के समान उसके पद तल तक
प्रवहमान थी,
वृहत और विमल!
उस लड़की के शरीर के दैनिक रेखांतरों को
एक शारदीय सोने का जलवायु
अति साधारण रूप से परिपक्व कर रहा था
और यथेच्छ फलों से भरपूर
और एक अप्रकट वैश्वानर से परिपूर्ण कर रहा था।

❐

अपार हिमपात और बर्फ

अपार हिमपात और बर्फ के इस पूर्ण प्रकोप की ऋतुएँ
ओ मपाचो नदी! तुम जो प्रकम्पित हो
उत्तरी पलक और जमी हुई छोटी बिजली के समान,
कौन तुम्हें भस्मीय घाटी में यहाँ बुला लाया है,
कौन तुम्हें गरुड़राज की चोंच से खींचकर निकाल लाया है
मेरे जन्म स्थान की इस विकट, दुर्गम चिथड़ही धरती पर?
नदी! तुम क्यों प्रवाहित हो वह रहस्यमय शीतल जल लिए
मेरी जन्म भूमि के नगर के क्षत-विक्षत चरणों के पास,
जिसे कठोर पाषाणी प्रभात अपने महामंदिर में
प्रविष्ट नहीं होने देता?
जाओ, तुम लौट जाओ, ओ कुटिल नदी!
अपने हिमानी उद्‌गम स्थान की ओर,
जाओ, तुम लौट जाओ, विस्तीर्ण तुषार की अपनी घाटी को,
जाओ, अपनी रजत-जड़ को अपने जन्म की जगह गाड़ दो,
अथवा अन्य किसी अश्रु-हीन सागर के अन्तराल में
अपने को समाहित कर दो।
मपाचो नदी! जब रात आती है
और वह एक भू-लुंठित श्याम मूर्ति की तरह,
शक्ति और क्षुधा के दो स्थूलाकार गरुड़ों से सताये हुए
काले सिरों के जमघट के साथ,
तुम्हारे पुलों के नीचे सोती है,
तब तुम ओ नदी! बर्फ से उत्पन्न ओ कठोर नदी!
क्यों नहीं उठ खड़ी होती हो, भुलाये गये व्यक्तियों के लिए
एक बैताल की तरह,
सितारों के एक नवीन पुंज की तरह?

किन्तु नहीं,
बहती ही चली जाती है तुम्हारी भस्म
बगल से उस फूटी बाँह के जो लोहे की पत्तियों के नीचे
नृशंस समीर से काँपती है,
मपाचो नदी! जहाँ को तुम बहाये लिये चली जा रही हो
निरंतर आहत बर्फ के पखने,
क्या तुम्हारे नील-कृष्ण किनारे पर सदैव ही
कीटाणुओं से डरे हुए वनफूल ही जन्म लेते रहेंगे
और मेरे उजाड़ देश के कपोलों को
तुम्हारी हिमानी जिह्वा चाट-चाटकर छीलती ही रहा करेगी?
आह! ऐसा न हो—कभी न हो
और यही हो कि तुम्हारे तल की महीन मिट्टी से,
तुम्हारे काले फेन का एक बुलबुला
आग का एक कुसुम बनकर उद्‌भूत हो
और वही एक बूँद मनुष्य के बीज का रूप धारण करे।

❐

विलाप के साथ एक गेय प्रशस्ति

ओ गुलाबों के बीच खड़ी लड़की, ओ कपोत-भार,
ओ मत्स्य और पाटल-प्रसून की झाड़ियों की कारा,
तेरी आत्मा है काँच का एक पात्र पिपासित क्षार से आपूर्ण
तेरी त्वचा है एक किंकणी द्राक्षाफलों से भरपूर।
अभाग्यवश कुछ नहीं है मेरे पास जो तुझे दूँ सिवाय नाखूनों के
या सिवाय पलकों या द्रवित पिआनों के
या सिवाय स्वप्नों के जो मेरे हृदय से निःसृत होते हैं झाग के समान,
या सिवाय धूसरित स्वप्नों के जो दौड़ते हैं असित अश्वारोहियों से
वेग प्रखर, अनिष्टकारी।

मैं कर सकता हूँ तुझे प्यार केवल चुम्बनों और पोस्तों के दानों से,
बरस गये जल से भीगी हुई फूल-मालाओं से,
भस्मीय रंग के अश्वों और पीले कुत्तों को निहारता।
मैं कर सकता हूँ तुझे प्यार केवल अपनी पीठ की तरंगों से,
गंधक और मंत्रमुग्ध नीर के अस्फुट कशाघातों के बीच,
तैरता हुआ उन समाधिस्थलों के विरुद्ध जो प्रवाहित हैं नियत नदियों में
जहाँ समाधियों के शोक संकुल उपलेप पर गीली घास उग आती है,
तैरात हुआ आप्लावित हृदयों के पार
और असमाधिस्थ बालकों की पीली कापियों के पार।
मेरे त्यक्त मनोभावों और निराश्रय चुम्बनों में
अधिकांश मृत्यु और अनेक अन्त्येष्टि घटनाएँ हैं;
जब कि मेरे केश बढ़ रहे हैं,
मेरे सिर पर पानी-ही-पानी पड़ रहा है,
जो समय के समान है, श्याम है और बाँध तोड़कर छूटा है,
जिसकी आवाज अन्धकार की आवाज है
जिसकी गुहार बरसात के पक्षियों की तरह आवाज है,
उन जल-भीगे पंखों की अछोर-अनंत छाया की तरह है
जो सुरक्षित रखते हैं मेरी अस्थियों को;
जब मैं वस्त्र पहनता हूँ
और दर्पण में अपने आप को लगातार निहारता हूँ
तब मैं किसी एक को अपने पीछे आता हुआ सुनता हूँ,
किसी एक को अपने को पुकारता हुआ सुनता हूँ
किसी एक को
समय से संत्रस्त कारुणिक स्वर में सिसकियाँ लेते हुए सुनता हूँ।
भूमि पर खड़ी हुई
पंक्तिबद्ध दशनावली से विभूषित
विकीर्ण करती तू विद्युच्छटा।
प्रसारण करती है तू चुम्बनों का

और बध करती है चींटियों का।
रुदन करती है तू स्वास्थ्य,
प्याज से, मधुमक्खियों से,
जलती हुई मदरसे की किताबों से।
तू है एक शस्य श्याम तलवार,
स्पर्शमात्र से तरंगित एक सरिता।
आ तू मेरी आत्मा में ओ श्वेतवस्त्रा,
रक्ताभ गुलाबों की एक शाखा के समान,
दाख की सुराहियों के समान।
आ तू एक सेब और एक अश्व के साथ
क्योंकि जहाँ एक तमांध संलापकोष्ठ
और एक मग्न दीप वृक्ष है,
क्योंकि यहाँ शीत की प्रतीक्षा में
कुछेक आकुंचित कुरसियाँ हैं,
और यह मरा हुआ एक कपोत है, एक के अंक के साथ।

❐

सामुद्रिक के प्रति

सागर-तट पर
चीड़ वनों के
ऊपर उड़ते
सामुद्रिक को
वायु-वेग से
सीटी जैसे
बजते अक्षर
मेरी कृति के

तैरो
तिरो
काव्य में मेरे
प्रभा-कांतिमय पोत,
दो पंखों के परचम,
रजत शरीर,
खड़ा करो
अपना सलीब-सा केतु
शीत-समाहित नभ के
महा पटल पर,
हे कोमल
उड़ रहे
प्रेम-संगीत
भ्रमण के,
हिम के बाण, प्रशान्त
पोत पारदर्शी प्रवात के,
तुम अपनी समतोल-तुला को ऊँचा रक्खो
जब
कर्कश वातास गगन के चरागाह में
भ्रमणशील हो।
लम्बी यात्रा के उपरांत
पंखिल चम्पा,
त्रिभुज हवा के रोके, ऊँचे ठहरे,
तुम धीरे से आओ
अपने प्राकृत रूप में,
बंद किये परिधान रुपहला अपना,
अपनी दीपित निधि को
अंडाकार बनाये,

फिर उड़ान की श्वेत कली हो,
गोल बीज हो,
रूप-डिम्ब हो।

यहीं
अन्य कवि
अंत करेगा
अपने जय का गान।
लेकिन
मुझे अभीष्ट नहीं है
केवल व्यर्थ फेन का
श्वेत विषय-सुख।
क्षमा करो, मुझको,
जल-कुक्कुट,
मैं यथार्थवादी कवि ठहरा,
मैं अनंत का एक दार्शनिक
तुम खाओ,
बस खाओ,
खाओ :
कुछ भी नहीं
अभक्ष्य तुम्हें तो
पत्तन के पानी के ऊपर
तुम किकियाओ
भिखियारी के कुत्ते जैसा,
तुम दौड़ो
मछली की अँतड़ी के

अंतिम टुकड़े के पीछे,
चंचुप्रहार करो तुम
अपनी धवल भगिनियों पर,
और चुराओ
उनका दुखद इनाम
जलनिधि के कूड़े-कचरे का ढेर,
खोज निकालो तुम कुरेदकर
खाड़ी के त्यागे कूड़े से
दबे टमाटर।

लेकिन तुम
प्रत्येक वस्तु को
स्वच्छ पंख में,
सित ज्यामिति में,
निज उड़ान की शांत पंक्ति में बदल रहे हो
उसी वजह से,
उड़ते हुए
हिमानी लंगर,
मैं गुणगान तुम्हारे सब का करता;
दुर्दमनीय तुम्हारे पेटूपन का,
और तुम्हारे वर्षाकालिक चिचियाने का,
या कि तुम्हारे सुस्थिर तन का
(जो प्रवात से मुक्त हुआ हिमलव के सम है),
शांति तुम्हारी और उड़ान तुम्हारी का,
तुम्हें समर्पित करता हूँ मैं सिंधु-विहंग
अपने भूमि-विहारी शब्द,

ऊँचे मँडराने का अपना मंद प्रयास,
शायद देख सकूँ मैं तुमको
अपनी कविता में उड़ान के अंकुर बोते।[1]

21.4.77

❐

उद्यानकर्मी लड़की के प्रति

हाँ, मैं जानता था तुम्हारे हाथ
प्रस्फुटित लवंग, रुपहले
कुमुद थे :
तुम्हें काम करना पड़ता था मिट्टी से ही
कुसुमित करना होता था धरती को ही,
लेकिन
जब मैंने तुम्हें देखा खोदते, खोदते,
छोटे पत्थरों को हटाते,
जड़ों को अग्रगामी बनाते,
अनायास तब मैंने जाना
मेरी किसानिन,
कि

---

1. यह कविता LOTUS (INDIA) पत्रिका के सितम्बर , 1974 के अंक में, अंग्रेजी में, पृष्ठ 12 से पृष्ठ 14 तक छपी है। शीर्षक है : ODE TO A SEAGULL. अनुवादक का नाम नहीं, दिया गया। उसी का यह मेरा हिन्दी रूपान्तरण है, 'SEAGULL' को 'सामुद्रिक' कहा गया है : देखें अंग्रेजी–हिंदी कोश : डॉ. बुल्के। इस शब्द का हिंदी अर्थ 'जल कुक्कुट' भी प्राप्त होता है। देखें, THE STUDENT'S ENGLISH—SANSKRIT DICTIONARY, V.S.A.की, प्रथम संस्करण, पूना, 1884.

न केवल
तुम्हारे हाथ ही मिट्टी के थे
वरन् दिल भी तुम्हारा
मिट्टी का था,कि
तुम उस जगह थीं
अपने मूलतत्व में,
स्पर्श करती हुई
आर्द्र द्वार-पथों को
जिनसे होकर
परिभ्रमण करते हैं
बीज।
और तभी
तुम गयीं
प्रत्येक
नये पौधे से
पौधे तक
पंक-विचुम्बित
अपना चेहरा लिये,
गयीं
और लौट आयीं तुम फूलों में
बगल से होकर बढ़ गयीं आगे
उत्तोलित हो उठी तुम्हारे हाथ से
अल्स्ट्रोमेरिया के डंठल की
निभृत चारुता,
सोनजुही ने
कर दिया अलंकृत
गंध-ओस के तारकों से
कुहिर तुम्हारे माथ का।

भूमि भेदती हुई
निरवशेष तुम हुईं सयानी
क्षण-क्षण हुईं प्रकाश हरित,
पर्णावली
समृद्धि।
सौंप दिये तुमने मिट्टी को
अपने बीज—
मेरा प्यार,
पाटल-प्रमुदित मालिन;
तब करने
सम्बोधित धरा को
मित्र के हाथ के तुल्य
और उल्लसित मुकुलन तभी हुआ इसका।
इस प्रकार, प्रिय,
जल का तुम्हारा हाथ
दिल मिट्टी का
दे पाये
मेरे गीतों को
उर्वरता
सामर्थ्य।
तुमने
मेरे सोते में ही
छू ली मेरी छाती
मेरे सपने से
फुलियाये पेड़,
मैं जागा तो
मैंने अपनी आँखें खोलीं,
(देखा मैंने)

तुमने मुझमें रोप दिये हैं
आवृत तारे
जो
उगते हैं
मेरे गीतों के संग साथ।
इसीलिए तो मालिन,
प्यार हमारा
धरती का है :
और तुम्हारा मुँह प्रकाश का
एक प्ररोह,
और एक दलपुंज,
मेरा दिल जड़-जड़ में जाकर
मेहनत करता।[1]

23-4/ 30-5-77

❐

महासागर

यदि तुम्हारी नग्नता उभरी हरी है,
यदि तुम्हारा सेब अपरिमेय है,
यदि अंधकार में होता है तुम्हारा 'मजूरका',
तो बताओ तुम, कहाँ है, तुम्हारा उद्‌गम ?

---

1. यह कविता भी LOTUS (INDIA) के सितम्बर, 1974 के अंग्रेजी अंक के पृष्ठ 15-17 पर छपी थी। अनुवादक का नाम नदारद था—उसी का मेरा यह हिन्दी अनुवाद है।

रात
रात से मधुरतम
नमक,
माँ के समान, रुधिराक्त नमक, नीर की वक्र माँ के समान,
फेन और मज्जा से छाप लिया गया ग्रह :
तारकीय देशांतर रेखांश की दैत्याकार मिठास :
हाथ में लिये एकाकी तरंग की रात :
समुद्री गरुण के खिलाफ उठा तूफान
अथाह तूतिया के हाथों के नीचे अनयन :
अत्यधिक रात में दफनाया तहखाना,
आवाज ही-आवाज और आक्रमण का 'दलपुंज',
सितारे में बलात् दफनाया गया महामंदिर।

घायल घोड़ा दौड़ता है तुम्हारे तट की आयु में,
हिमानी आग के द्वारा प्रस्थापित,
रूपांतरित हुआ पक्षति में आरक्त बनाव-शृंगार
और घुल गया तुम्हारे काँचिया पाशविक हाथों में,
और द्वीपों में लड़ाई लड़ता रहा अविच्छिन गुलाब
और सुधांशु और सलिल का किरीट पहनाया तुमने।

मेरे देश, तुम्हारी धरती के लिए
इतना सारा तमांध आकाश!
इतना सर्व-सार्विक फल,
इतना सब प्रलापी राजमुकुट!
तुम्हारे लिए है फेन की यह सुराही जहाँ विद्युत

विसर्जित करती है अपने आपको
एक अंधे समुद्री पक्षी की तरह,
जहाँ उदय होता है दक्षिणी मार्तण्ड,
देखता हुआ तुम्हारी पावन स्थिति।[1]

❐

भोर की भंगुरता (प्रत्यूष की नश्वरता)

अभागों का दिन, पांडुर दिन प्रकट हुआ
हृदयविदारक शीतल सुगंध के साथ,
अपने धूसर सामर्थ्य के साथ,
झनझनाती घंटियों के बगैर, सर्वत्र टपकता हुआ प्रत्यूषः
शून्य में हुआ पोत-भंग है यह, रुदन के पर्यावरण के साथ
क्योंकि बहुतेक जगहों से प्रयाण कर चुकी है
आर्द्र अनालापी छाया,
बहुतेक व्यर्थ बकवासों से,
बहुतेक सांसारिक स्थानों से

---

1. यह कविता पाब्लो नेरूदा की कविताओं के सन् 1946 के संकलन–Residence On Earth and Other Poems-के पृष्ठ 201 की OCEAN नाम की कविता का मेरा अनुवाद है। रूपांतरण अंग्रेजी से हिन्दी में है। मूल स्पेनिश से नहीं। अनुवाद पंक्तिवार है। नेरूदा ने 'Salt' को 'Mother' कहा है। मैंने 'नमक' को 'माँ के समान' कर दिया है। नेरूदा का 'Corolla' हिन्दी का 'दलपुंज' है। वैसे ही अंग्रेजी का 'Cathodral' हिन्दी का 'महामंदिर' है। 'Diadem' हिन्दी में 'किरीट' हो गया है। 'Plumage' 'प्रक्षति' हो गया है। 'Sulphate' 'तूतिया' है। 'Red spruce' 'आरक्त बनाव शृंगार' है। 'Albatross' 'समुद्री चिड़िया' है। यह कविता Carito General De Chile नाम की लम्बी कविता का अंश है। इस कविता का स्पेनी शीर्षक OCEANO है।

बिछा देना चाहिए था जहाँ इसको जड़ों का जाल भी,
अत्यधिक सुस्पष्ट रूपाकार में
बचाव कर लेता जो स्वयं अपना।
विलाप करता हूँ मैं आक्रांताओं के बीच, सम्भ्रम के बीच,
वृद्धि पा रही सरसता में, कान दिये अपना विशुद्ध प्रचार में,
अनुवर्ती हुआ दिशाहीन होनी के पथ का,
अनुवर्ती हुआ उसका जो व्यक्त होता है लोहित वर्ण और
जंजीरों से युक्त,
स्वप्न देखता हूँ मैं,
बरदाश्त करते हुए अपने नैतिक अवशेष।
न कुछ हड़बड़ी है वहाँ, न आनंददायक या अहंकारी प्रदर्शन,
सब कुछ होता चला जा रहा है जैसे अपने आप
प्रत्यक्ष निर्धनता से,
पृथ्वी का प्रकाश पृथ्वी की पलकों से निकलता है
घंट-ध्वनि की तरह नहीं बल्कि आँसुओं के समान निश्चय:
दिन का महीन मलमल, इसका नश्वर क्षौम,
प्रयुक्त हो सकता है पट्टी की तरह,
रूमाल की तरह लहराया जा सकता है बिदाई के समय,
अनुपस्थिति के पीछे-पीछे,
यह रंग है सिर्फ प्रतिस्थापन करने का इच्छुक,
आच्छादित करने का इच्छुक, घुटुक जाने का इच्छुक,
विजय प्राप्त करने का इच्छुक,
दूरियाँ कायम करने का इच्छुक।

अकेला हूँ मैं चूर-चूर हो रहे पदार्थों के बीच,
पानी पड़ रहा है मेरे ऊपर,
मुझसे मिलता-जुलता पानी,
असंयम में अपने मुझसे मिलता-जुलता पानी,

मृत दुनिया में पृथक-अकेला,
गिर पड़ने पर नामंजूर,
और हठीले रूप के बग़ैर।[1]

31-5-77/1-6-77/बाँदा

❐

मृत्यु मात्र

उधर हैं एकाकी कब्रस्तान
नि:स्वन हाड़-भरी कब्रें,
सुरंग से गुजरता दिल,
तमस, तमस, तमस,
पोत-भंग में जैसे भीतर से मरते हैं हम
दिल में जैसे डूबते हैं हम,
त्वचा से जैसे निक्षेपित होते हैं हम आत्मा में।

उधर हैं शव
उधर हैं ठंढी चिपकती हुई मिट्टी के पाँव,

---

1. यह कविता, पाब्लो नेरूदा के काव्य-संग्रह : 'Residence On Earth' : के सन् 1946 के संस्करण के पृष्ठ 19 की 'Frailty of Dawn, नाम की कविता का, मेरा हिन्दी अनुवाद है। "Shipwreck" 'पोतभंग' है। 'Void' 'शून्य' है। 'Earthly' सांसारिक' है। 'Design of roots' 'जड़ों का जाल' है। 'Dressed in Chains and Carnoteous' 'लोहित वर्ण और जंजीरों से युक्त' है। 'Moral Vertiges' 'नैतिक अवशेष' है। 'Futile Cavillings' 'व्यर्थ बकवासों' है। 'Ginglebells' 'झनझनाती घंटियाँ' हैं। 'Evident Poverty' 'प्रत्यक्ष निर्धनता' है। 'Obstinate Form' 'हठीले रूप' है। यह कविता 1925 से 1931 के बीच लिखी गयी थी। स्पेनिश शीर्षक है : DEBIL DELALBA.

उधर है हड्डियों के भीतर मौत,
विशुद्ध नाद के समान,
श्वान-रहित भौंक के समान,
नि:सृत हो रही कई घंटियों से, कई कब्रों से,
आँसुओं या वृष्टि के समान आर्द्रता बढ़ाये।

अकेला, देखता हूँ मैं, कभी-कभार
पाल ताने शव-पेटिकाएँ,
लिये चली जा रहीं विवर्ण मुरदे, परासु केशोंवाली औरतें,
आपूपिक ज्यों श्वेत फरिश्ते,
'पब्लिक नोटरीज़' को ब्याही विषण्ण लड़कियाँ
मुरदों की अनुलम्ब नदी में
    आरोहण करतीं शव-पेटिकाएँ,
नील-लोहित नदी,
धारा-प्रतिकूल, पालों में भरे मृतकों की आवाज,
मौत की आवाज से सम्पूरित,
मौत आती है अनुनादी तट पर
पैर के बगैर जूते के समान,
    देह के बगैर अँगरखे के समान,
बिना नग की, अँगुली बगैर, अँगूठी से खटखटाने,
बगैर मुँह के चिल्लाने, बेजबान और कंठहीन।

तिस पर भी इसकी पगध्वनि गूँजती है,
इसका पहनावा सरसराता है, निस्तब्ध जैसे वृक्ष,
मैं जानता नहीं, सिर्फ थोड़ा समझता हूँ,
    मुश्किल से देखता हँ,
लेकिन सोचता हूँ कि इसके गान का रंग

आर्द्र बनफ्शों का रंग है,
मिट्टी के अभ्यस्त बनफ्शों का रंग है,
क्योंकि मौत का मुँह हरा है,
और मौत की दृष्टि हरी है,
बनफ्शे की पत्ती की भेदक आर्द्रता के साथ
और शीतकालीन इसके धुँधले रंग के साथ,
किन्तु मौत भी चक्कर काटती है दुनिया में प्रच्छन्न
एक बुहारी के समान,
फर्श को चाटती, मुरदे की तलाश में
मौत है बुहारी में,
मुरदा खोजती है मौत की जबान,
धागा खोजती है मौत की सुई।
मौत है टूटदार खाटों में,
काहिल गद्दों में काले-कम्बलों में
उतान रहती है यह
और फूँक मारती है अचानक :
फूँक से इसके मनहूस आवाज निकलती है
कि चद्दरें फूल जाती हैं,
और तैरते चले जाते हैं बिस्तर बन्दरगाह की तरफ
जहाँ इन्तजार करती है मौत,
नौ सेनाध्यक्ष के लिबास में।[1]

❐

---

1. यह कविता पाब्लो नेरूदा के काव्य संकलन–"Residence On Earth"—की उन कविताओं में है जो सन् 1932 से सन् 1935 के बीच में लिखी गयीं हैं। इसका अंग्रेजी शीर्षक है–"Death Alone"— स्पेनी भाषा का शीर्षक है–"Solo la Murte" यह काव्य संकलन के पृष्ठ 51 में छपी है।

मई का मानसून

मौसम की हवा, हरी-हरी हवा,
दिक् और जल से लदी, दुर्घटना-प्रवीण,
तहाती है अपने शोकात्मक चमड़े का केतु,
और म्लान सार से, मिले भीख में रुपये जैसी,
शीतल और रुपहली होकर, अपने को आच्छादित करती है
एक दिन,
जैसे दैत्य की सुकुमार मणिभ तलवार हो,
अनेकानेक शक्तियों के बीच
जो आश्रय प्रदान करती
इसकी त्रस्त उसाँस को,
गिरने पर इसके आँसुओं को
इसकी निरर्थक बालू को,
काटती-कूटती और करकती शक्तियों से घिरी,
रण-स्थल में एक निरवसन आदमी के समान,
ऊपर उठाये अपनी सफेद शाखा,
अपना अनिश्चित निश्चय,
कम्पित नमक की अपनी बूँद आक्रांताओं के बीच।
क्या आराम है यह आरम्भ करना,
क्या क्षीण आशा है प्यार करना
ऐसी निर्बल लपट और ऐसी क्षणभंगुर आग से ?
किसके विरुद्ध उठाये क्षुधित कुल्हाड़ी ?
बेदखल करे किस पदार्थ को,
बचाव करे किस गाज से ?

कठिनाई से बना इसका प्रकाश देशांतर रेखांश और कम्पन से
घिसटता है जैसे एक उदास दुलहन की साड़ी का छोर
विभूषित है जो मर्त्य नींद और पांडुरपन से।

क्योंकि वह सब जिसे छाया ने छुआ
और व्यतिक्रम जिसके लिए ललका
केन्द्र की ओर आकृष्ट करता है, तरल, प्रलंबित, शांति से वंचित,
दिकों के बीच अरक्षित, मृत्यु से हारा।
हाय रे, प्रतीक्षित दिन की नियति,
कि जिसकी ओर पत्र, पोत और सौदे भागदौड़ में लगे,
मरने-मरने को है, स्थानबद्ध और आर्द्र
अपने आकाश के बिना।

कहाँ है सुगंध का इसका तम्बू,
इसकी पीन पर्णावली,
अंगार का इसका क्षिप्र पूर्वाभास
इसकी जीवित साँस ?
गतिहनि, अवरुद्ध प्रभास से परिधानित,
और एक ठोस मत्स्य-शल्क,
यह देखेगा वृष्टि को इसके दो अर्धांश में
बाँटते हुए
और नीर-पोषित वायु को उन पर
आक्रमण करते हुए।[1]

❐

---

1. यह कविता "Residence On Earth" नाम के पाब्लो नेरूदा के काव्य संकलन के पृष्ठ 31 में है। यह हिन्दी का रूपान्तरण मेरा है। Copy right 1946, by New Directors, 500 Fifth Avenue, New York City 18, United States. यह सन् 1925 से सन् 1931 के बीच की लिखी है। इसे अंग्रेजी में–Monsoon in May" शीर्षक से और स्पेनी भाषा में–Monzon De Mayo–शीर्षक से जाना जाता है।

नैश समाहरण

मैंने परास्त कर दिया नींद के फरिश्ते को,
मातमी प्रतीक-कथा वाले को;
उसका प्रयास चलता रहा, उसकी सांद्र पद-चाप आई
समुद्री शक्तियों और रइयाओं से वेष्टित,
समुद्रवर्ती, उग्र फलों से सुवासित।

पवन है यह जो प्रकम्पित करता है—मुँहों को,
रेलगाड़ी की सीटी को,
पर्यंक पर के तापमान के पथ को,
असीम में गिरे चिथड़े के समान
छाया की एक अपारदर्शी आवाज को,
दूरियों के एक आवर्तन को, संदिग्ध रंग की एक शराब को,
रँभाती गायों की एक धूलिया पद-चाप को,
कभी-कभार उसकी श्याम टोकरी गिर पड़ती है मेरे वक्ष पर,
प्राधिकार के उसके झोले- चोट पहुँचाते हैं मेरे कंधों को,
नमक का उसका ढेर, उसका अर्धोन्मीलित अनीक
छिन्न-भिन्न और अस्तव्यस्त करते हैं नभोमंडल के पदार्थ;
सरपट दौड़ता है उसका श्वसन और चुम्बनों से बनी होती है
उसकी पद-चाप;

उसका आश्वस्त जल प्रदान करता है पलकों को
तात्त्विक ओजस्विता और पुण्य प्रयोजनः

एक 'लार्ड' के समान प्रवेश करता है वह
सजाये गये अपने स्थानों में;
उसका नि:शब्द भाव उपस्कृत करता है सहसा,
उसका पैगम्बरी पोषाहार
प्रचार करता है अटल दृढ़ता से।

प्राय: पहचानता हूँ मैं उसके सैनिकों को,
वायु से संक्षारित उसके हथियारों को,
उसके आयामों को,
और दिविग्जय की ऐसी हिंसक उसकी आवश्यकता को
कि उसके निमित्त वह घुस आता है मेरे हृदय तक
उसे तलाश करता :
वह स्वामी है अगम्य पठारों का,
वह नाचता है त्रासिक नाच दैनिक व्यक्तियों के साथ;
रात को उसका वायवीय तेजाब मेरी त्वचा को भेदता है
और मैं अभ्यंतर में सुनता हूँ उसके वाद्ययंत्र का प्रकम्पन।

सुनता हूँ मैं पुराने साथियों और परमप्रिय औरतों की नींद
नींद जिसकी धड़कनें मर्माहत करती हैं मुझे:
चुपचाप चलता हूँ मैं उसके दरी-जैसे उपादान पर
उन्मादित हुआ मैं दंशित करता हूँ उसके पोस्त-प्रकाश को।
सोये शव जो बहुधा नाचते हैं
मेरे उर-भार से चिपके
कैसे कैसे सांधकार नगरों की यात्रा करते हैं हम।
मेरा श्याम प्रच्छाय युद्धाश्व प्रांशु होता है
एक दैत्य के समान,
और प्राचीन द्यूत-गृहों के ऊपर,
घिस गईं सीढ़ियों पर चल रहे कुटनाई के
अवैध व्यापार के ऊपर,

नग्न बालिकाओं के बिस्तरों के ऊपर,
फुटबाल के खेलाड़ियों के मध्य,
हम गुजरते हैं वायु को वलयित करते :
और तब हमारे मुँहों में आ टपकते हैं प्रकाश के
वे मसृण फल,
विहंग, महिला-मठीय घंटों का निनाद, और पतंगें;
सम्भवत: उसी ने हमको पास से कौंधते जाते देखा
जिसने स्वयं को पोषित किया अनामय भूगोल और स्पंदन से।

साथी लोग जिनके सिर पीपों का सहारा लिये हैं
एक विखंडित हुए पलायनशील पोत पर, दूर कहीं,
निठुर मुखाकृतिवान औरतें, मेरी सखियाँ अश्रुविहीन :
मध्य रात्रि आ पहुँची,
और मृत्यु का घंटा घहरा मेरे चारों ओर
जैसे सागर घहरा।
मेरे मुँह में नमक भर गया एक प्रसुप्तिक का,
मेरा स्वाद हुआ नमकीन।
प्रकट हुआ निद्रालु राज्य का पांडुरपन
दण्डाज्ञा की तरह सुनिष्ठित
व्यक्ति-व्यक्ति को जिसने दोषी पाया :
एक जलमग्न निष्प्राण मुसकान,
थकी आँखें जैसे थके मुक्केबाज,
श्वसन जो बधिरवत् निगलता है भूतों और प्रेतों को।

जन्म की इस आर्द्रता में, इस अंधकारपूर्ण अनुपात के साथ :
सुरागार के समान बंद, समीर है अपराधी :
दिवालों का रंग है उदास घड़ियाली,
एक बदनसीब मकड़ियाया बुनावट;

गुलगुले गलीचे पर चलना पिशाच के शव पर चलना है :
अपरिमित श्याम अंगूर, परितृप्त,
भग्नावशेषों में लटके हैं शराब की मशकों के समान,
ओ कप्तान,आबंटन के हमारे इस अवसर पर
मौन सिटकनियाँ खोलो
और प्रतीक्षा करो मेरी :
नितांत आवश्यक है मातमी लिबास में वहाँ खाना खायें हम :
मलेरिया का रोगी पहरेदारी करेगा फाटकों पर खड़ा।

देर हो गई है मेरे दिल को
और अब एक भी किनारा नजर नहीं आता,
घृणित मेजपोश की तरह सूखने के लिए बाहर टँगा दिन
प्रदोलित होता है व्यक्तियों और वितान से घिरा :
कुछ-न-कुछ है प्रत्येक जीवित व्यक्ति का पर्यावरण में;
सतर्कता से विलोकते निकल पड़ेंगे भिखारी,
विधिज्ञ, डाकू, डाकिये, दरजिनें,
और हरेक पेशे का अवमानित अवशेष
अपनी भूमिका अदा करना चाहता है हमारे भीतर।
साल-दर-साल खोजता रहा हूँ मैं,
हेकड़ी हीन जाँच-परख करता रहा हूँ मैं,
पराजित, निस्संदेह, सन्ध्या-वंदना द्वारा। [1]

❐

---

1. यह कविता अंग्रेजी में —"Nocturnal Collection"—नाम से अनूदित्त हुई है। हिन्दी में यह नाम ''नैश समाहरण'' हुआ। यह पाब्लो नेरूदा के काव्य संकलन–"Residence On Earth"—पृष्ठ सं० 25 की–कविता है, जो कवि ने सन् 1925 और 1931 के बीच में लिखी थी। इसका स्पेनी शीर्षक है COLLECTION NOCTURNA.

इधर उधर चहलकदमी करते हुए

यह होता है कि मैं आदमी होने से थक चुका हूँ,
यह होता है कि मैं दरजियों की दुकानों
और सिनेमा घरों में जाता हूँ
विषण्ण, गहन, नमदे के हंस के समान
तैरते–पार करते उद्‌भव का जल-पसार
और अवसान की मसानी भस्म,

नाइयों की दुकानों की गंध मुझे जोर से रुलाती है।
मैं तत्काल चाहता हूँ पत्थरों और ऊन से निवृत्ति,
मैं तत्काल चाहता हूँ नहीं देखना प्रतिष्ठानों, बगीचों,
उत्थापकों, पण्य की वस्तुएँ और चश्मों को।

यह होता है कि मैं थक चुका हूँ अपने पाँवो, अपने नखों,
अपने बालों, और अपनी परछाई से,
यह होता है कि मैं आदमी होने से थक चुका हूँ।

तिस पर भी यह सुखद होगा
कि 'नोटरी' को डराया जाय 'कटलिली' से
या कि मर्माहत किया जाय परिव्राजिका को
कान में ठुनकी मारकर।
यह भी शोभनीय होगा
कि हाथ में लिये हरा चाकू सड़कों पर घूमा जाय
जोर जोर से चिल्लाते जब तक कि बर्फ में जमकर
मृत्यु न हो जाय।

मैं नहीं चाहता होते चले जाना अंधकार में की एक जड़,
ढुलमुल, प्रसरित, तंद्रा-कम्पित,
अधोमुखी, आर्द्र भूमि के गर्भाशय में समायी
लीन-तल्लीन, विचार-मग्न, दिनाहारी।
मैं नहीं चाहता इतनी अधिक चिन्ताओं का बोझ
मेरे सिर पर रहे।
मैं नहीं चाहता होते चले जाना जड़ और मकबरा,
भू-गर्भित एकाकी, मरे हुए आदमियों का शव-कक्ष,
शीत से सुन्न, वेदना से गतप्राण।

वही कारण है कि सोमवार
पेट्रोलियम की तरह जलने लगता है
जब मुझे बंदी की तरह मुँह लटकाये हुए आता देखता है
और हुआने लगता है अपने मार्ग पर
एक घायल चक्र के समान,
खौलते खून के डग भरता रात की ओर जाते-जाते।

और मुझे हाँक देता है आश्रय ग्रहण करने के लिए
किन्हीं कोनों में, किन्हीं सीलन-भरे घरों में,
अस्पतालों में जहाँ से हड्डियाँ खिड़कियों से
बाहर फेंक दी जाती हैं,
जूतों के किन्हीं गोदामों में जहाँ से गंध आती है सिरके की,
सड़कों में जो उतनी ही दारुण हैं जितनी टूटी-फूटी हैं।

उधर हैं घरों के दरवाजों से लटके हुए
गंधक के रंग और विकराल अंतड़ियों
के पखेरू,
घिन लगती है मुझे;

उधर हैं भूल से छूट गये काफी के प्याले में पड़े
नकली दाँत,
उधर हैं आईने
जो शर्म और खौफ से अवश्य रोये होंगे,
उधर हैं सब कहीं छाते, जहर और जहर
और नाभियाँ।

मैं चहलकदमी करता हूँ प्रशान्त भाव से, सनयन, जूते पहने,
सरोष, भूला-भूला,
मैं आगे बढ़ता हूँ
और दफ्तरों और विकलांग-विज्ञान की दुकानों से होकर
गुजरता हूँ।
और 'पछीत' की अँगनाइयों के पास जाकर देखता हूँ :
अलगनी से लटके झूलते कपड़े :
जाँघिये, तौलिये, और कमीजें,
टपटप टपकते हैं जिनके रोये हुए आँसू
मंद, मलिन।[1]

❐

---

1. इसे नेरूदा ने 1931-1935 के बीच में लिखी थी। यह मूल स्पेनी भाषा की कविता, नेरूदा के काव्य संकलन–"Residence On Earth'— में पृष्ठ 58 और 60 में छपी है और उसी का अंग्रेजी अनुवाद पृष्ठ 59 और 61 में छपा है। इसी अंग्रेजी अनुवाद का यह मेरा हिन्दी रूपान्तरण है। स्पेनी भाषा में भी इसका शीर्षक "WALKING AROUND' है और अंग्रेजी भाषा में भी यही शीर्षक है। हिन्दी में यह शीर्षक 'इधर-उधर चहलक़दमी करते हुए' हो गया है। 'Cut Lily' का अर्थ नहीं मालुम हो सका। इसी से उसे ही हिन्दी में ज्यों-का-त्यों रख दिया गया है। Until Frogen to death, का अनुवाद 'बर्फ में जमकर मृत्यु न हो जाय'। 'Wheel' 'पहिये' के बजाय 'चक्र' अधिक अर्थवान है और अर्थ भी विशेष देता है।

ध्वस्त सड़क

चोटिहल लोहे के ऊपर, खड़िया-मिट्टी की आँखों के ऊपर
समय से भिन्न वर्षों की एक जीभ चलती है,
यह दुम है घोड़े के खुरदरे बालों की,
गुस्से से भरे पथरीले हाथों का ताँता है,
और घरों का रंग चुप्पी साधे है,
और घर हैं कि उन्होंने स्थापत्य के निर्णयों को
ध्वंस कर दिया है।
एक भारी-भरकम भयंकर पांव बारजों को दूषित करता है;
काहिली से, संपुंजित छाया छोड़ते,
शीत और सुस्ती से नसाये गये मुखौटे लगाये,
उन्नत-मस्तक दिन मटरगस्ती करते हैं चन्द्र-शून्य घरों में।

जल और रीति-रिवाज और सफेद मिट्टी तारे से झरी,
और खास तौर से घंटियों की प्रकोप से प्रचालित, हवा,
यह सभी जीर्ण-शीर्ण कर देते हैं, चीजों को,
पहियों को छूते और सिगार के कारखानों में उन्हें
चलने से रोक देते हैं,
और कारनिसों पर उग आता है, एक लाल बाल
प्रलम्ब प्रलाप के समान,
जबकि गहरे गिर जाती हैं चाभियाँ और घड़ियाँ
और विस्मरण के अभ्यस्त फूल भी वहीं पहुँच जाते हैं।

कहाँ है अभी हाल में पैदा हुआ बनफ्शा ?
कहाँ है गुलूबंद और कहाँ है
अक्षत यौवना रतनार पछुआ हवा ?
शहरों के ऊपर भ्रष्ट धूल की एक जीभ
अग्रगमन करती है
घेरे तोड़कर, रंग खुरचती हुई,
बे आवाज हुआती हुई काली कुरसियों को
आच्छादित करती हुई सीमेंट के 'फ्लिडरान्स',
ध्वस्त धातु के बुर्ज, बाग-बगीचा और ऊन,
वृष्टि से जख्मी हुए जलते छायाचित्रों की
वृहदाकार प्रतिमूर्तियाँ,
प्रकोष्ठों की प्यास,
सिनेमा के दीर्घ-देही विज्ञापन
(जिनमें प्रदर्शित होता है संघर्ष
तेंदुए और मेघ की गुरु गर्जना का,)
''जेरैनियम' के बरछे,
खराब हो गई शहद से भरे गोदाम,
खाँसी की खुरखुराहट, दमकते धागों के बुने वस्त्र;
प्रत्येक वस्तु पर आवरण पड़ा है
पश्चगमन और आर्द्रता और अनिष्ट के
मरणशील आस्वाद का।

सम्भवत: ग्रंथिल वार्तालाप, देह से देह की रगड़,
धुएँ में सुख से बसी उकतायी औरतों की शुचिता,
बुरी तरह से बर्बरता से मौत के घाट उतारे गये टमाटर,
उदास रेजीमेंट के घोड़ों का मार्ग,
प्रकाश, अनेकानेक अनाम अगुँलियों का दबाव,
यही सब कुछ तो छिजा देते हैं चूने का सरल सूत्र,

घेर लेते हैं चौतरफा से पुराभागों को
चाकुओं के समान, तटस्थ पवन से,
जबकि दाँत से कुतरता है खतरे का माहौल
परिस्थितियों को, ईंटों को,
जबकि छलककर बह चलता है पानी के समान नमक
और धच्च-धच्च करती हुई आगे बढ़ती हैं
मोटी धुरी की गाड़ियाँ,
मनमारे गुलाबों और छेदों की लहर!
सुगन्धित नसों का भविष्य!
अकरुण वस्तुएँ!
कोई न हिले-डुले! कोई न पसारे अपने हाथ
हाय रे आन्दोलन, हाय रे बुरी तरह से घायल नाम,
हाय रे चम्मच-भर संदिग्ध समीर, और चाबुक की मार खाया रंग।
हाय रे घाव जहाँ गिरकर मर जाते हैं नीले गिटार![1]

❐

---

1. इस कविता का स्पेनी शीर्षक है LA CALLE DESTRUIDA. इसे नेरूदा ने सन् 1931-1935 के बीच में लिखा था। यह कविता नेरूदा की पुस्तक "Residence On Earth" के पृष्ठ 73 व 75 के अंग्रेजी अनुवाद का हिन्दी अनुवाद है। 'Gypsum' 'खड़िया मिट्टी' है। 'Horse chair' का अर्थ नहीं मालुम इससे अंग्रेजी का रूप ही हिन्दी में रखा गया। 'Balcony' 'बारजा' है। 'Lentitude' 'काहिली' है। 'Accumulated' 'संपुंजित' है। 'Masks' 'मुखौटे' है। Cravat है 'गुलूबंद'। Vergainal Red Zephyr है 'अक्षत यौवना रतनार पछुआ हवा'। Chairs horse without voice हो गया 'कुरसियों को बेआवाज हुहुआती हुईं'। Longlament हो गया 'प्रलम्ब प्रलाप'। Accustomed to forgetfulness—'विस्मरण के अभ्यस्त'। Rottern 'भ्रष्ट' है। dust धूल है। जेरैनियम का हिन्दी पर्याय नहीं मालुम है। इससे वही रख दिया है। Warehouses 'गोदाम'। Mortal taste 'मरणशील आस्वाद'। Retrocession 'पश्च (वापसी)' है। Humidity 'आर्द्रता' है। Injury 'अनिष्ट' है। Knotted 'ग्रंथिल' है। Tered 'उकताई' Pressure 'दबाव' है' Fibre 'धागा' है। Facades 'पुराभाग (महल का) आगे का' Fat-axled 'मोटी धुरी'। Flagellated कोड़े या चाबुक खाया–Joggle along 'धच्च धच्च करती आगे बढ़ती' है।

फेडरिको ग्रेसिया लोर्का के प्रति

अगर मैं रो सकता भयग्रस्त एक सुनसान घर में,
अगर मैं नोंचकर अपनी आँखें खा सकता उन्हें,
तो मैं ऐसा करता अवश्य,
शोक-संतप्त संतरे के पेड़ों की तुम्हारी आवाज के लिए
और तुम्हारी कविता के लिए
उद्‌भूत होती है जो अभिव्यक्त करती हुई क्रंदन।
क्योंकि तुम्हारे लिए वे अस्पताल को नीला रँगते हैं
और पाठशालाएँ और समुद्रवर्ती उपनगर बढ़ते जाते हैं,
और घायल फरिश्ते स्वयं को सँवारते हैं पिच्छ-प्रसाधन से,
और वैवाहिक मछलियाँ स्वयं को आवृत करती हैं शल्कों से,
और जल-साहियाँ आकाश की तरफ उड़ती हैं :
क्योंकि स्याह झिल्लियों वाली दरजियों की दुकानें
स्वयं को भरती हैं चम्मचों से और खून से,
और निगल लेती हैं फटे-फटाये फीते,
और मार डालती हैं स्वयं को चुम्बनों से,
और पहन लेती हैं श्वेत-शफ्फाफ कपड़े।

जब तुम हवा में उड़ते फिरते हो पीले लिबास में
शफतालू की तरह दिखते,
जब तुम हँसते हो प्रभंजित चावल की हँसी,
जब तुम गीत गाने के लिए स्पंदित करते हो
धमनियों और दाँतों को—कंठ और अँगुलियों को,
तब मैं तुम जो मिठास हो, तुम्हारे लिए मर सकता था,

तब मैं मर सकता था उन लाल झीलों के किनारे
जहाँ, मध्य शरत् में, तुम रहते हो
भू-लुंठित युद्धाश्व और रक्त-रंजित ईश्वर के साथ,
तब मैं मर सकता था कब्रगाहों के पास
जो भस्मीय नदियों के समान जल और मकबरों से भरे उमड़े हैं
रात के समय, सन्नाटे में डूब गईं घंटियों के बीच :
लबालब भरी हैं नदियाँ बीमार सिपाहियों की बारिकों जैसी,
उफन जाती हैं जो अचानक मृत्यु की ओर,
संगमरमरी संख्याओं और बेकार किरीटों को बहाये लिये
अन्त्येष्टि के तेल के साथ :
मैं मर सकता था तुम्हें देखने के लिए रात में
जब तुम निहारते होते बाढ़-से बहे ज़ा रहे सलीब,
खड़े-खड़े, रोते-रोते,
क्योंकि मृत्यु की नदी के पास तुम्हीं रोते हो
आत्मसमर्पित, क्षत-विक्षत,
क्योंकि तुम्हीं रोते हो रोना-धोना,
आँसुओं-आँसुओं-आँसुओं से भरी अपनी आँखों से।

अगर मैं रात को दयनीय अकेले,
काले धुँआर से निकालकर,
रेलगाड़ियों और जहाजों
और मर्मभेदी मसानी भस्म पर,
संचित कर सकता छाया-धुआँ-और विस्मरण
तो मैं ऐसा करता अवश्य,
उस पेड़ के लिए जिस पर तुम उगते हो,
उन बसेरों के लिए जो तुम्हारे संचित किये हुए सुनहरे पानी
के बसेरे होते हैं

और उन अंगूर-लताओं के लिए जो तुम्हारी हड्डियों को वेष्टित किये हैं
रात का रहस्य तुमको बतातीं।

आर्द्र प्याजों की गंध से गमकते नगर
तुम्हारी प्रतीक्षा करते हैं कि तुम सामने से गुजरो
भर्रायी आवाज में गाते हुए,
हरे अबाबील घोंसला बनाये हैं तुम्हारे बालों में,
और शुक्राणु के चुप-चुप जहाज तुम्हारा पीछा करते हैं,
और अलावा इनके,शम्बूक और अठवारे,
कुंडलित मस्तूल और 'चेरीज' यह सब
निश्चय ही चक्कर काटते हैं जब तुम्हारा विवर्ण सिर
अपनी पंद्रह आँखों के रहते हुए भी
खून में डूबा मुँह लिये-लिये भी
अस्पष्ट-धुँधला दिखायी देता है।

अगर मैं भर सकता टाउनहालों में कालिख-ही-कालिख
और, सिसकते-सिसकते, अश्रु-विगलित कर सकता घड़ियों को
तो मैं ऐसा करता अवश्य
ताकि देख पाऊँ कैसे आती है तुम्हारे घर में
टूटे ओठों की ग्रीष्म रितु,
कैसे आते हैं मरणासन्न लिबास में बहुत से लोग,
कैसे आते हैं विषाद भव्यता के इलाके,
कैसे आते हैं गतप्राण हल और पोस्ते,
कैसे आते हैं कब्र-खोदने-वाले और घुड़सवार
कैसे आते हैं ग्रह-गण और नकशे रक्त-रंजित,
कैसे आते हैं मसानी भस्म से वेष्टित गोताखोर
कैसे आते हैं किशोरियों का अपहरण करने वाले
छल-छंदी लोग

जो लम्बे चाकुओं से घायलकर उन्हें घसीट ले जाते हैं,
कैसे आती हैं जड़े, नसें और चीटियाँ,
और कैसे आते हैं अस्पताल और कुएँ,
कैसे आती है रात
बिस्तर में लिटाये एकाकी 'हुसार' को
जो मकड़ियों के जाले में फँसा मरणासन्न है,
कैसे आता है गुलाब घृणा और आलपीनों का,
कैसे आता है पियराया पोत,
कैसे आता है, एक बच्चा लिये प्रभंजनी दिन,
कैसे आता हूँ मैं और मेरे साथ में आते हैं यह सब
आलीवीरियों, नोराह, विसेन्टे, अलकिजाड्रे, डेलिया,
मारुका, मालवा मारिना, मारिया लुइसा, और लारको,
ल रूबिया, रफाएल डगार्ते,
कोटापोस, बाबे, मनोलो अल्तोलागुयेरे,
मोलिनारी,
रोसेल्स, कोंचामेन्डेज,
और दूसरे लोग जिन्हें भूल रहा हूँ मैं।

अभिषिक्त करने दो मुझे,
स्वास्थ्य और तितलियों के यौवन,
इतना निर्मल है, तुम्हारा यौवन
जितनी निर्मल है निरंतर मुक्त विद्युत की एक श्याम शिरा,
और अब जब कोई नहीं है यहाँ सिवाय शिलाओं के,
आओ हम आपस में बात करें,
सहज-सरल शब्दों में
सहज-सरल जैसे हम दोनों हैं :
किस काम की हैं कविताएँ यदि ओस के काम की नहीं हैं ?
किस काम की हैं कविताएँ यदि उस रात के काम की नहीं हैं

जिस रात में हमें कोंचती है तिक्त कटार ?
किस काम की हैं कविताएँ यदि उस दिन के लिए नहीं हैं
उस द्वाभा के लिए नहीं हैं और उस टूटे कोने के लिए नहीं हैं
जब और जहाँ आदमी का मर्माहत दिल मरने के लिए
उद्यत होता है ?

विशेषकर रात में,
रात में होते हैं असंख्य तारे,
सब एक नदी के भीतर समाये,
घरों के भीतर समाये रहते हैं जैसे गरीब-गुरबे तमाम
खिड़कियों से लटकाये एक पट्टी।

कोई मर गया है, शायद
दफ्तरों -अस्पतालों की
उत्थापकों-खदानों की
अपनी नौकरियों से निकाल दिये गये हैं आदमी,
बुरी तरह से आहत महसूस करते हैं आदमी
और सर्वत्र प्रयोजन और प्रलाप परिव्याप्त है
जबकि एक अंतहीन नदी में सितारे भागते-दौड़ते हैं
तब बहुत अधिक रोवा-धोई होती है खिड़कियों के भीतर,
कि दहलीजें विषण्य हो जाती हैं रोवा-धोई से,
कि कमरे तर-बतर हो जाते हैं रोवा-धोई से,
रुलाई क्या आती है कि लहरें चली आती हैं
गलीचों पर छपछपाने।

फेडरिको,
देखो न दुनिया, सड़कें, सिरका,
स्टेशन में हो रहीं बिदाइयाँ,

उठ रहे धुएँ को अपने कृत-संकल्प पहियों पर चढ़े हुए
उस ओर जाते
जहाँ पत्थर और पटरियाँ हैं–
बिरह-विच्छेद और बिदाइयाँ हैं।

लोग-ही लोग-तमाम-तमाम लोग
सर्वत्र पूछते हैं प्रश्न-पर-प्रश्न
देखो न, वह रहा उस ओर लोहू-लुहान अंधा आदमी,
वह रहा वहाँ कुपित आदमी,
वह रहा उधर हताश आदमी,
और वह रहा वहाँ बदनसीब आदमी,
और तो और वह रहा–देखो न-उधर कील ठुँका पेड़,
और उस दस्यु को जिसकी पीठ पर ईर्षा की गठरी लदी है।
ऐसी है जिंदगी, फेडरिको
यही सब दे सकती है मित्रता
एक चिंतित पुरुषोचित पुरुष की मित्रता।
पहले ही अपने आप तुम बहुत-कुछ बूझ चुके हो
और अब शेष जो अबूझ है
उसे भी उत्तरोत्तर, अवसर आने पर बूझ लोगे दूसरों से।[1]

❐

---

1. यह मूल कविता 1931-1935 के बीच में लिखी गई थी। यह कविता नेरूदा के काव्य-संकलन–Residence On Earth से है जो वहाँ पृ० सं० 95, 97, 99 व 101 पर छपी है, अंग्रेजी में। उसी अंग्रेजी अनुवाद का यह मेरा हिन्दी रूपान्तरण है। लोर्का स्पेन का एक नगर है। सम्भवत: नगर का यह नाम ही कवि के नाम के अंत में जुड़ा है। इसका जीवन काल 1899-1936 है। इसका स्पेनी शीर्षक है। ODA A FEDERI CO GRACIA LORCA.

स्वप्न का घोड़ा

अकारण, स्वयं को आईनों में देखकर,
अठवारों,चलचित्रों और समाचारपत्रों का स्वाद चखकर,
मैं खींच लाता हूँ अपने हृदय से बाहर नरक के कप्तान को,
मैं प्रमाणित करता हूँ अकथनीय रूप के विषण्य वाक्यांशों को।

मैं भटकता हूँ एक जगह से दूसरी जगह,
आत्मसात करता हूँ मरीचिकाएँ-भ्रांतियाँ,
वार्तालाप करता हूँ दरजियों से उनके दरबों में :
वे अक्सर, गाते-गुनगुनाते तितर-बितर करते हैं सम्मोहनों को,
अपने उदासीन भाग्यवादी कंठ-स्वर से
वहाँ, आसमान में फैला है एक विस्तृत प्रदेश
बिछे हैं जहाँ इन्द्रधनुष के और
सांध्य तारकीय वनस्पतियों के
अंधविश्वासी कालीन :
वहीं जाता हूँ मैं, थका हारा
हाल में बनायी गईं कब्रों के लिये उलट-पलट दी गई मिट्टी को
रौंदता हुआ,
मैं स्वप्न देखता हूँ संदिग्ध वनस्पतियों के उन्हीं पौधों के बीच।

मैं चलता हूं व्यवहार में प्रयुक्त हुए दस्तावेजों के बीच,
पूर्वजों के बीच,
एक मौलिक और हताश आदमी की वेश-भूषा में :
मैं प्यार करता हूँ मान-सम्मान के चुके शहद को,
मधुर प्रश्नोत्तर को जिसके पल्लवों में पड़े
सोते हैं वृद्ध मुरझाये बनफ्शे,

और झाड़ुओं को, सहायता के विलोड़कों को,
जिनके रूप-रंग में बिला शक व्यथा और अवश्यमभाविता है,
मैं उद्दलित करता हूँ शेखी बघारते गुलाब को
और उच्छिन्न करता हूँ उन्मत्त चिंता को
मैं तार-तार करता हूँ परमप्रिय अतिवादिताओं को :
और इसके अतिरिक्त मैं राह देखता रहता हूँ एक रूपी
अपरिमेय समय की :
एक रुचि है मेरी आत्मा में जो मुझे उदास किये है।

कैसा घटित हुआ है यह दिन!
कैसा बोझिल दूधिया प्रकाश-सघन-आंगुलिक
मेरी तरफदारी करता है!
मैंने सुना है इसके लाल घोड़े को हिनहिनाते,
निहंग, बिना नाल के, दीप्तमान।

इस पर सवार मैं उड़ान भरता हूँ गिरजाघरों के ऊपर,
सरपट दौड़ता हूँ सिपाहियों से खाली हो गये बारिकों के पास से,
और एक कलंकित सेना मेरा पीछा करती है,
छाया पर डाका डालती हैं इसकी
युकलिप्टस आँखें,
घंटानुमा इसका जिस्म
सरपट दौड़ता और चोट करता है।
मुझे चाहिए अटल कांति की एक विद्युत-रेखा,
मुझे चाहिए अपना उत्तराधिकार पाने के लिए
एक संगत समारोह।[1]

❐

---

1. यह कविता नेरूदा ने 1925-1931 के बीच में लिखी थी। यह उनके काव्य संकलन–Residence On Earth के पृष्ठ 15 और 17 पर अंग्रेजी में अनुवादित होकर, छपी है। इनका स्पेनी शीर्षक है CABALLO DE LOS SUENOS.

कागजी कबूतर

कबूतर के पेट में पहुँच गये है गिरे-पड़े कागज,
दगहिल है उसका सीना जूतों के निशान
और हत्फों के धब्बों से,
लाश से ज्यादा सफेद सोख्तों से सुखाये गये चिन्हों से,
और रोशनाइयाँ आतंकित हैं कबूतर के अनर्थकारी रंग से।

आओ मेरे साथ मंत्रिमंडलों की छाया-तले,
मुख्य अधिकारियों के मंद, पीले पड़ गये,
नाजुक मिजाज रंग-रूप के पास,
जंत्रियों के समान गहन-गूढ़ गहरी सुरंगों में,
सहस्र पृष्ठी काँखते-कराहते, चक्कर-काटते, पहिये के निकट।

आओ हम जाँच करें परख करें शीर्षक-सिरनामों और शर्तों की,
खास अभिलेखों की, रात की जगाई के कामों की,
शारदीय मौसम के मतली-प्रद दाँतों की खिसनिपोर मांगों की,
भस्मांगी नियतियों और दुखदायी फैसलों के प्रचंड उन्माद की।

यह एक किस्सा है चोट खायी हड्डियों का,
कटु घटना-चक्रों का, निरन्त पहनावों का,
सहसा गम्भीर हुई सौम्य जुर्राबों का।
यह एक गहन हुई रात है, शिरा-शून्य सिर जैसी-
अकस्मात् जिससे बाहर निकल आता है दिन
बिजली से टूट गई बोतल से जैसे।

यह हैं पाँव, घड़ियाँ और अंगुलियाँ,
मृतपाय साबुन का एक इंजन,
सिताई हुई धातु का लोनहा आसमान,
और एक 'पीली नदी' मुस्कुराहटों की।

हर एक चीज चली आती है अँगुलियों की नोकों तक
फूलों के समान,
नाखूनों तक बिजलियों के समान,
पुरानी-धुरानी आराम कुर्सियों तक,
हर एक चीज चली आती है मौत की रोशनाई तक
और 'एलेक्ट्रिक बेल्स' के बनफ्शई मुखमंडल तक
आओ हम रोयें आग और धरती की मृत्यु के लिए,
तलवारों और अंगूरों की मृत्यु के लिए,
कामवासनाओं के व्यापक सुदृढ़ साम्राज्य की मृत्यु के लिए,
जहाजों के साथ चलते शराबों के जहाजों की मृत्यु के लिए,
और सुगंध की मृत्यु के लिए
जो रात भर नाचती है, अपने घुटनों पर,
बेध गये गुलाबों के एक ग्रह को
घसीटते हुए।

कुत्ते के लिबास को लिये,
कलंक का दाग माथे पर लगाये
आओ हम कागजों की गहराइयों में गिर जायँ
बंदी बने शब्दों के आक्रोश में समा जायँ,
हठात् चुक गये अवतारणों में खो जायँ,
पीली पत्तियों से लिपटी व्यवस्थाओं में लुक जायँ।

लुढ़क चलो मेरे साथ दफ्तरों की ओर
मंत्रिमंडलों की अस्थिर गंध की ओर,

मकबरों की ओर स्टाम्पों की ओर।
आओ मेरे साथ स्वच्छ सफेद दिन की ओर
जो मरणासन्न है
कत्ल कर दी गई दुलहिन की तरह चीख –पुकार करता।[1]

❐

दिवंगत राजभक्तों की माताओं को समर्पित एक गीत

वे मर नहीं गये हैं।
बारूद के बीच मौजूद हैं, वे,
तने खड़े हुए हैं वे,
जलती हुई दियासलाई की डोरियों के साथ।

उनकी पावन छायाएँ
एकत्रित हो गयी है ताँबे के रंग की घासस्थली में
क्वचित वायु के परदे के समान,
क्रोधावेश के रंग के घेरे के समान,
आकाश के अतिशय अदृश्य संदूक के समान

---

1. यह मूल कविता अपने अंग्रेजी अनुवाद के साथ नेरूदा के काव्य-संकलन– Residence On Earth के पृष्ठ 65 से लेकर 71 पृष्ठों तक छपी है। स्पेनी भाषा में इसका शीर्षक है DESES PENDIENTE और अंग्रेजी भाषा में है DISPROCEEDINGS.हिन्दी में इस तरह का एक शब्दी शीर्षक नहीं मिल सका। अत: 'कागजी कबूतर' शीर्षक गढ़ना पड़ा। यह नेरूदा ने 1931 और 1935 के बीच के समय में लिखी थी। हमारे यहाँ ऐसे प्रशासन को 'कागज का शेर' कहा जाता है (Paper Lion) परन्तु लैटिन अमरीका में चिली में (Paper Pigeon)– कागजी कबूतर कहा जाता है, सम्भवत:।

माताओ!
वे खड़े हैं गेहुओं के खेतों में वहाँ,
प्रलम्ब जैसे गहन दोपहरी,
सुविस्तृत मैदानों पर अधिकार जमाए।
निरानन्द वाणी की घंटियों की आवाज हो गये हैं वे
जो हताहत हो गये फौलाद के जिस्मों के पार
जय-गान घनघनाती हैं
पतित मिट्टी के समान,
भग्न हृदया, बहनो!
वे मात्र जड़ें नहीं हैं रक्तरंजित पत्थरों के नीचे की,
बहनो, उनकी दीन गिरी हुई ध्वंसित हड्डियाँ
भूमि को ही उपजाऊ नहीं बनातीं
बल्कि उनके मुँह भी सूखी बारूद को दाँत से काटते हैं
और लोहे के महासागरों की भाँति आक्रमण करते हैं
और उनकी बँधी हुई मुट्ठियाँ
स्वर्ग में मृत्यु को झुठलाती हैं।

क्योंकि इन तमाम देहों से
एक अदृश्य जीवन उद्‌भूत होता है,
माताएँ, झण्डे और बेटे
एक जीवन्त देह बन जाते हैं जीवन जैसे :
भग्न आँखों का एक चेहरा अंधकार को घूरता है
पार्थिव आशाओं से आपूर्ण एक तलवार के समान :—
फेंक दो उधर, एक तरफ,
अपने शोक-विह्वल लबादे,
एकत्रित कर लो एक साथ सब अपने आँसू

जब तक न वे परिणत हो जाएँ धातु में
ताकि हम दिन रात प्रहार कर सकें,
ताकि हम दिन रात ठोकर मार सकें,
ताकि हम दिन रात थू-थू कर सकें,
जब तक कि न उखाड़कर फेंक दिए जाएँ
घृणा के दरवाजे!

मैं नहीं भूला हूँ तुम्हारी विपत्तियों को, मैं जानता हूँ
तुम्हारे बेटों को,
और यदि मुझको उनके उत्सर्ग पर गर्व है
तो मुझको उनके जीवन पर भी गर्व है।

उनकी हँसी
बहरा कर देने वाली फैक्टरियों में बजी है,
सुरंग-पथों के स्टेशनों में
उनके पाँव मेरे पाँव के साथ रोज-ब-रोज
आवाज करते चले हैं,
और मैने देखा है उनकी हृदयाग्नि की लपटें,
और पुरुषार्थ को,
पूर्व के संतरों के प्रांत में, दक्खिन के मछलीमार
जालों के प्रदेश में,
छापेखानों की रोशनाई में,
इमारतों के सीमेन्टी-शरीर पर प्रतिबिंबित।

और माताओ,
मेरे हृदय में भी उतनी ही मौत और उतना ही मातम है

जितनी मौत और जितना मातम तुम्हारे दिलों में है
कि यह मौत और मातम का यह माहौल एक रक्तार्द्र
जंगल की शकल में बदल गया लगता है
संतुष्ट हो गयी हैं जिससे उनकी मुस्कानें,
और फिर इसे आवृत करता है अनिद्रा का उन्मत्त कोहरा
दिनोंदिन के अकेलेपन से विदीर्ण करता हुआ

किन्तु
मनोव्यथा और मृत्यु से स्तंभित माताओ,
रक्त के प्यासे भेड़ियों को कोसने के अलावा उससे और आगे,
अफ्रीकी खाड़ियों से आई मृत्यु की पार्थिव घरघराहट को
कोसने के अलावा, उससे और आगे
जन्म ले रहे नेक दिन के अंतरंग में देखो
और पहचानो
कि तुम्हारे मर गये स्वजन भूमि के गर्भ में मुस्कराते हैं
और अपनी बन्द मुट्ठियों को गेहूँ के खेतों पर ताने हुए हैं।[1]

❐

---

1. यह कविता नेरूदा के काव्य संकलन 'Residence On Earth And Other Poems' के पृष्ठों में 122 से 125 तक स्पेनी व अंग्रेजी भाषा में छपी है और इसका स्पेनी शीर्षक "CANTO A LAS MADRES DE LOS MILICIANOS MUERTOS' है और अंग्रेजी शीर्षक 'Song to The Mothers of Dead Loyalists' है।

महासागर

लहर से अधिक परिशुद्ध काया,
नमक प्रक्षालित सागर-रेखा,
और चमकती चिड़िया
बिना भूमि-गर्भी मूलों के उड़ती।[1]

❐

सागर

एक अकेली हस्ती, लेकिन शोणित-वंचित हस्ती।
एक अकेला प्रेम-दुलार, प्राण-हरण का अथवा फुल्ल गुलाब का।

---

1. यह कविता मूल स्पेनी कविता के अंग्रेजी अनुवाद का अनुवाद है। मूल कविता Pablo Neruda की लिखी है। अंग्रेजी में रूपान्तरण किया है ALASTAIR REID ने। यह द्विभाषी संस्करण की एक CONDOR BOOK के पृष्ठ 11 की कविता है। अनुवाद का कापीराइट 1967-69, 1970-1975 का ALASTAIR REID का है। यह पुस्तक मुद्रित हुई है ग्रेट ब्रिटेन में। मुद्रक हैं FLETCHER & SON LTD., NORWICH अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार है :
   Body more perfect than a wave,
   Salt washing the Sea line,
   and the shining bird
   flying without ground roots.
   इसके छपने का प्रेस है : Souvenir Press (E. & A) Ltd.

सागर भीतर घुस आता है और हमारे जीवन को संयोजित करता
और अकेले स्वयं आक्रमण करता,
और अकेले स्वयं पसरता
और अकेले ही गाता है
रातों और दिनों में—जीवधारियों और मनुष्यों में,
सार-तत्व है इसका—ऊष्मा और प्रशीत;
आन्दोलन, आन्दोलन।[1]

❐

अतीत

हमें त्यागना है अतीत को
और, बनाता कोई जैसे
एक एक फर्श, एक एक खिड़की,

---

1. यह कविता मूल स्पेनी कविता के अंग्रेजी अनुवाद का अनुवाद है। मूल कविता Pablo Neruda की लिखी है। अंग्रेजी में रूपान्तर किया है ALASTAIR REID ने। यह द्विभाषी संस्करण की एक CONDOR BOOK के पृष्ठ 15 की कविता है। अनुवाद का कापीराइट 1967-69, 1970-1975 का ALASTAIR REID का है। यह पुस्तक मुद्रित हुई है ग्रेट ब्रिटेन में। मुद्रक है Fletcher & Son Ltd. Norwich प्रेस है SOUVENIR PRESS (E & A) LTD. अंग्रेजी अनुवाद है :

A single entity, but no blood
A single cares, death or a rose.
The sea comes in and puts our lives together
and attacks alone and spreads itself and sings.
in nights and days and men and living creatures,
Its pressence is—fire and cold.
movement movement.

और इमारत हो जाती है बनकर एक खड़ी,
इसीलिए हम त्यागते चलते हैं
पहले, टूटे खपड़े,
फिर अहंकारी दरवाजे,
जब तक अतीत से
झर न जाय धूल
मानों कि यह
फर्श पर भरभरा कर गिर पड़ेगी,
धुआँ उठता है
जैसे कि इसे आग लग गयी हो,
और प्रत्येक नया दिन
चमकता है
एक खाली 'प्लेट' के समान,
कुछ भी नहीं है वहाँ, कुछ भी नहीं था वहाँ सदैव,
इस सब को भरना है
एक नयी प्रसरणशील
फलदायिकता से;
तब, तले
गिरता है कल
एक कुएँ में जैसे
गिरता है कल का जल,
उस सब के हौज में
जो अवाक और अग्निहीन है।
कठिन है
हड्डियों को लुप्त होने का अभ्यस्त बनाना,
कठिन है
आँखों को बंद होना सिखाना,

किन्तु
हम यही करते हैं
अनिच्छुकता से।

सब-कुछ था सप्राण,
सप्राण, सप्राण, सप्राण
एक लोहित मीन के समान,
किन्तु समय
बीतता गया वस्त्र और अंधकार से
और पोंछता रहा
मीन का मांस।
पानी पानी पानी
गिरता चला जाता अतीत
हालाँकि इसकी पकड़ में
गिरफ्त हैं
काँदें
और जड़ें,
यह गया, यह गया, और अब
निरर्थक हो गयी स्मृतियाँ।
अब बोझिल पलकें
अंदर नहीं आने देतीं आँख की रोशनी
और जो कुछ जीवित था पहले
अब नहीं रह गया जीवित;
जो कुछ थे हम, अब नहीं रहे हम
और शब्द हैं कि वे बदलते हैं,
हालाँकि अक्षरों में
विद्यमान है अब पारदर्शिता और नाद,
और मुँह है कि वह बदलता है,

वही मुँह अब एक दूसरा मुँह है;
बदलते हैं ओठ, त्वचा, और रक्त-प्रवाह;
एक दूसरी आत्मा ने घर कर लिया है हमारे कंकाल में;
जो कुछ था हमारे भीतर पहले अब नहीं है.
इसने छोड़ दिया, किन्तु यदि वे पुकारें, हम जवाबते हैं
''मैं यहाँ हूँ'' और हमें एहसास है इस बात का कि हम नहीं हैं
कि जो कुछ था एक बार, था और अब खो गया है,
खो गया है अतीत में, और अब लौटकर नहीं आता।[1]

❐

कविता

और यह हुआ उस उम्र में—कविता आयी
मेरी तलाश में, मैं नहीं जानता, नहीं जानता मैं कहाँ से
यह आयी, प्रशीत से या किसी नदी से।
मैं नदीं जानता कैसे और कब,
नहीं, ध्वनियाँ नहीं थीं वे, नहीं थे वे
शब्द, न अनालाप था,
बल्कि एक सड़क से बुला लिया गया था मैं,
रात की शाखाओं से,
यक-ब-यक दूसरों के द्वारा,

---

1. यह मूल स्पेनी कविता के अंग्रेजी अनुवाद का हिन्दी अनुवाद है। अंग्रेजी अनुवाद करने वाले हैं ALA STAIR REID ! यह द्विभाषी संस्करण की CONDOR BOOK के पृष्ठ 103 की कविता है। अनुवाद का 1967-69, 1970-1975 का कॉपीराइट ALA STIAR REID का है। ग्रेट ब्रिटेन में मुद्रित हुई है यह पुस्तक। मुद्रक है FLETCHER & SON LTD. NORWICH. प्रेस है SOUVENIR PRESS (E & H) LTD.

हिंसक ज्वालाओं के बीच
अथवा अकेले लौटते हुए
मैं था वहाँ बगैर चेहरे के
और यह छू गया मुझे।

मैं नहीं जानता था कहूँ तो क्या कहूँ, मेरा मुँह
अपरिचित था
नामों से,
अंधी थी मेरी आँखें,
और कुछ शुरू हो गया मेरी आत्मा में,
बुखार हो या भुलाये जा चुके पखने हों,
और बना ली मैंने अपनी राह,
गूढ़ार्थ निकाल लिया मैंने उस आग का,
और लिखी मैंने पहली दुर्बल पंक्ति,
दुर्बल, बिना सार की, शुद्ध
अनाप-शनाप
मूढ़ व्यक्ति के निश्छल विवेक की
और तब अनायास मैंने देखा
अनवरुद्ध
और खुले
नभ-लोक
ग्रह-गण
स्पंदित रोपस्थलियाँ,
छायाछिद्रित
पहेलियाँ बनीं
तीरों से, आग और फूलों से,
छल-छंदी रात
और सृष्टि से।
और मैं, एक अत्यल्प प्राणी,

रहस्य की प्रतिमूर्ति की सादृश्यता वाले
ताराकीर्ण महाशून्य से विमुग्ध,
अपने तईं हो गया
वितल का एक विशुद्ध अंश,
मैंने चक्कर लगाये सितारों के साथ,
मेरा दिल हवा में उन्मुक्त विहार करने लगा।[1]

❐

शब्द

शब्द
पैदा हुआ था रक्त में
बढ़ा अँधेरे शरीर में, धड़का,
और उड़ा मुँह और ओठों से
दूराति दूर होकर भी निकटतर
अब भी, अब भी यह आया
मृत पुरखों और घुमक्कड़ी जातियों से
पथरा गये प्रदेशों से,

---

1. यह कविता Memorial De Isla Negra (1964) से ली गई है। यह मूल स्पेनी कविता के अंग्रेजी अनुवाद का अनुवाद है। स्पेनी में इसका नाम है La Poesia— अंग्रेजी में शीर्षक है Poetry। स्पेनी Poesia का शाब्दिक अर्थ Poem भी है। हिन्दी में मैंने Poetry का शाब्दिक अर्थ 'काव्य' न रखकर, आजकल की आम मान्यता के अनुसार 'कविता' मान लिया है जो स्पेनी शब्द का अर्थ भी है और अपने अनुवाद में यही शीर्षक रख दिया है। यह संग्रह स्पेनी और अंग्रेजी में अनूदित कविता का Penguin Poets सिरीज की Pablo Neruda की कविताओं का है। इसे संपदित किया है Nathaniel Tarn ने। यह द्विभाषीय संस्करण है जो 1975 में प्रकाशित हुआ। ग्रेट ब्रिटेन में छपा। प्रकाशक हैं हमेल वाटसन एंड विने लि० Aylesbury Bucks, Set in Monotype, Bembs.

निढाल हो गयीं वहाँ की आदिम जातियों से,
क्योंकि जब दर्द ने अपना लिये रास्ते,
बस्तियाँ प्रारम्भ हुईं और आबाद हुईं
और नये भू-भागों और पानी का पुनर्मिलन हुआ
कि बोयें अपने नये शब्द नये सिरे से,
और ऐसा, यह है उत्तराधिकार-
यह है तरंग दैर्घ्य जो हमें जोड़ता है
मृत पुरुष से और उषा-काल से
जो अब तक प्रकाश में न आ पाये व्यक्तियों का है।

अब भी प्रकम्पित है वायुमंडल
आद्य शब्द से
परिधानित
आतंक और उच्छ्वास से
यह उद्‌भूत हुआ
अंधकार से
और अब तक वहाँ कोई नहीं है गर्जन
जो अब भी गड़गड़ाता
उस शब्द की समग्र लौह-धातु से,
प्रथम उच्चरित शब्द—
यही था शायद केवल एक छोटी लहर, एक बूँद,
तिस पर भी झराझर-झराझर झरता चला जाता है—
झरता-चला जाता है उसका महाजल-प्रपात।
बाद को, शब्द भरता है अर्थ।
यह रहा सगर्भ् और भर गया जिंदगानियों से।
प्रत्येक वस्तु को सरोकार था जन्मों और ध्वनियों से
स्वीकरण, स्पष्टता और शक्ति से,
प्रतिवाद, संहार और मृत्यु से

क्रिया ने प्राप्त कर ली समग्र क्षमता
और एकमएक कर दिया इसने अस्तित्व और सार-तत्व को
अपने सौन्दर्य की बिजली में।

मानवीय शब्द, अक्षर,संचयन
फैले प्रकाश और सुनार की ललित कला का
वंशानुगत चषक जो उपलब्ध करता है
रक्त के संदेश–
यहाँ है जहाँ एकत्रित किया गया था अनालाप
मानवीय शब्द की सम्पूर्णता में
और, आदमियों के लिए, न बोलना मृत्यु है
जल तक की होती है भाषा,
बिना चलाये और भी बोलता है मुँह–
अनायास शब्द हो जाती हैं आँखें।

मैं ग्रहण करता हूँ शब्द और जाँच-पड़ताल करता हूँ इसकी
जैसे कि यह आदमी की शकल से अधिक कुछ न हो,
चकित करते हैं मुझे इसके विन्यास और मैं खोजता हूँ अपनी राह
उच्चरित शब्द के प्रत्येक रूपांतरण में
बोला नहीं मैं कि मैं हूँ और बिना बोले मैं पहुँच जाता हूँ
शब्दों और अनालाप की सीमा पर।

शराब पीता हूँ मैं शब्द के सम्मान में, उठाये
एक शब्द या कि उठाये एक चमकता प्याला,
इसी से पीता हूँ मैं
भाषा की असल शराब
या कि अक्षय जल,
शब्दों का मातृक स्रोत,

और प्याला, पानी और शराब
उठान देते हैं मेरे गीत को
क्योंकि क्रिया स्रोत है
और तेजस्वी जीवन है—यही है रक्त
रक्त जो अपना सार व्यक्त करता है
और उपलक्षित करता है अपना निजी प्रशमन
शब्द ही देते हैं काँच को काँच का गुण, रक्त को रक्त,
और स्वयं जीवन को जीवन।[1]

❐

नाच

कंचुकित उरोज जैसी घृणा को छूता हूँ हैं;
अविरत आता हूँ मैं परिधान से परिधान तक,
दूर पर सोते हुए।
न मैं हूँ, न किसी काम का मैं हूँ, न जानता हूँ
किसी को, न हथियार हैं मेरे पास महासिंधु के अथवा काठ के,
न मैं रहता हूँ इस घर में
रात और पानी से भरा है मेरा मुँह।
स्थायी चंद्रमा निर्धारण करता है
उसे जो मेरे पास नहीं है।

---

1. इसका स्पेनी शीर्षक है 'La Palabra'. अंग्रेजी शीर्षक है 'The Word". स्पेनी से अंग्रेजी में अनुवाद किया है Alstair Reid ने। यह द्विभाषी संस्करण की पुस्तक है। पुस्तक का नाम है : Pablo Neruda Selected Poems. संकलन के सम्पादक हैं Nathanial Tarn. संकलन Panguin Books की भेंट है। Penguin Books Ltd., Harmondsworth, Middlesex, England से प्रकाशित हुई है यह पुस्तक. यह कविता Plenos Ponderes (1962) से ली गयी है।

वह जो मेरे पास है तरंगों के मध्य है।
जल की एक किरन, मेरे तईं का एक दिन,
एक लौह-गहराई।

न प्रतिकूल ज्वार-भाटा है कोई, न कवच, न पोशाक
न समाधान है कोई खास, अत्यधिक गहरा, कि थाह लिया जाये,
न अनैतिक पटल
अकस्मात् जीवन-निर्वाह करता हूँ मैं और
अन्य वक्तों में अनुसरण करता हूँ।
अकस्मात् एक चेहरे को छूता हूँ मैं जो मुझे मार डालता है।
समय नहीं है मेरे पास।

न करो मेरी तलाश पसारते हुए
आम पाशविक धागा या कि
रक्त-स्रावी जाल।

न पुकारो मुझे; वह मेरा धंधा है
न पूछो मेरा नाम अथवा मेरी स्थिति
छोड़ दो मुझे मेरे निजी चन्द्रमा के बीच
मेरी घायल जमीन में।[1]

❐

---

1. अंग्रेजी में अनुवाद करने वाले हैं W.S. Merwin. यह कविता कवि की काव्य-पुस्तक Terecera Residencia (1947) से ली गई है। इसका स्पेनी शीर्षक है 'Vals'. अंग्रेजी शीर्षक है 'Waltz'. द्विभाषीय संस्करण की पृष्ठ सं. 83 की यह कविता है। सम्पादक हैं—Nathaniel Tarn.

प्रत्येक दिन तुम खेलती हो

प्रत्येक दिन तुम खेलती हो विश्व के प्रकाश से।
विचक्षण आगन्तुक, तुम अवतरित होती हो फूल और पानी में।
तुम हो इस शुभ्र सिर से अधिक जो मैं कसकर पकड़ता हूँ।
फूलों के गुच्छे के समान, रोज-ब-रोज, अपने हाथों से।

तुम किसी के समान नहीं हो क्योंकि मैं प्यार करता हूँ तुमको।
प्रसारित कर लेने दो मुझे तुमको पीले पुष्प-हारों के बीच।
कौन लिखता है तुम्हारा नाम धुएँ के अक्षरों से दक्षिणी सितारों में ?
उफ, याद कर लेने दो मुझे तुमको जैसी कि तुम थीं
अपने अस्तित्व से पहले,
दैवात् चीत्कार करता है प्रवात और खड़खड़ाता है मेरी बंद खिड़की।
आसमान है एक जाल मायिक मीनों से ठुँसा।
यहाँ से गुजर जाने देती हैं देर-सबेर सब हवाएँ, उन सबों को।
वृष्टि उतार लेती है उनकी पोशाक।

निकल भागते हैं पखेरू।
हवा है हवा।
अकेला मैं संघर्ष कर सकता हूँ आदमियों के जोर-जबर के खिलाफ
तूफान चक्कर खिलाता है काले पत्तों को
और खोल देता है सबकी सब नौकाएँ जो कल रात में
आकाश से बाँध दी गयीं थीं।
तुम यहाँ हो, उफ, न भागो तुम।
तुम मुझे उत्तर दोगी अंतिम पुकार तक।

लिपट जाओ तुम मुझसे चारों ओर जैसे कि तुम भय-विह्वल
बना दी गयी होओ
इस पर भी एक अजीब छाया दौड़ गयी एक बार तुम्हारी आँखों में।

अब अभी,लघुत्तम अद्वितीया, तुम मुझे पान कराओ मधु,
और तुम्हारे स्तन तक मधुमय महकते हैं।
जबकि विषण्ण वायु हत्या करती चली जाती है तितलियों की
मैं प्यार करता हूँ तुम्हें, और मेरा आनंद आस्वाद लेता है तुम्हारे मुँह के
बदरी फल का।
कैसे सहन किये होंगे तुमने कष्ट अभ्यस्त होने में मुझसे,
मेरी ग्राम्य, अकेली आत्मा से, मेरे नाम से जो उन्हें दौड़ा मारता है
बार-बार, बहुत बार हमने देखा है भोर के तारे को दहकते,
हमारी आँखों को चूमते।
और हमारे सिरों के ऊपर भूरे प्रकाश को खुलते घूमते पंखों से।

तुम पर बरसे मेरे शब्द, तुमको थपथपाते,
दीर्घ काल तक मैंने प्यार किया है, तुम्हारे शरीर की धुपायी सीप को।
जब तक नहीं विश्वास कर लिया मैंने कि तुम विश्व की मलिका हो।
मैं लाऊँगा तुम्हारे लिए पहाड़ों से खुश मिजाज फूल, सम्बुल,
श्याम-हरित शाखाएँ, और चुम्बनों की ग्रामीण टोकरियाँ,
मैं चाहता हूँ
तुम्हारे साथ वही करना जो वसन्त करता है
बदरी-वृक्ष के साथ।[1]

❐

---

1. Penguin Book, के पृष्ठ संख्या 27 व 29 पर छपी 1924 की लिखी अंग्रेजी में अनूदित, 'Every Day You Play शीर्षक नाम की कविता का हिन्दी अनुवाद। स्पेनी शीर्षक है Juegas todos los dias' अनुवादक हैं W.S. Merwin.संपादक हैं Nathaniel Tarn प्रकाशित हुई Penguin Book, Ltd. Harmondsworth, Middle, England. प्रकाशन तिथि है 1975.

आज रात मैं लिख सकता हूँ

आज रात मैं लिख सकता हूँ उदास से उदास पंक्तियाँ।

लिख सकता हूँ उदाहरण स्वरूप, 'चकनाचूर है रात
और दूर वहाँ काँपते हैं नीचे सितारे'।

आकाश में परिभ्रमण करता और गाता है नैश पवन।

आज रात मैं लिख सकता हूँ उदास-से उदास पंक्तियाँ
मैंने उसे प्यार किया था और कभी-कभार उसने मुझे भी प्यार किया।

इस रात जैसी रातों में आबद्ध किये रहा मैं उसे अपनी बाहों में।
बार-बार मैंने उसे चूमा अनंत आकाश के नीचे।
उसने मुझे प्यार किया, कभी-कभार मैंने भी उसे प्यार किया।
कैसे न कोई उसकी निश्चल बड़ी आँखों को प्यार करता।

आज रात मै लिखा सकता हूँ उदास से उदास पंक्तियाँ।
यह सोचते हुए कि मैं उसे प्यार नहीं करता,
यह महसूसते हुए कि मैंने उसे गँवा दिया है।
यों ही अछोर है रात, और भी अधिक अछोर है उसके बगैर
और कविता है कि आत्मा पर पड़ रही है ओस जैसे चरागाह पर पड़ती है।
क्या फर्क पड़ता है इससे कि मेरा प्यार न अपनाये रह सका उसे।
चकनाचूर है रात और वह नहीं है मेरे साथ।
यही है सब कुछ। कोई गा रहा है दूर वहाँ दूर।

मेरी आत्मा संतुष्ट नहीं है उसे खोकर
मेरी आँखें तलाशती हैं उसे उस तक जाने के लिए जैसे
मेरा दिल ढूँढ़ता है उसे, और वह नहीं है मेरे साथ।

वही रात उन्हीं पेड़ों को विरंजित किये है,
हम, उस समय के,अब न रहे वही।

अब मैं उसे प्यार नहीं करता, निश्चय ही,
किन्तु कैसा प्यार करता था मैं उसे।
मेरी आवाज हवा को खोजने की कोशिश करती थी कि
उसके सुनने में आ जाय।

दूसरों की–दूसरों की हो जायेगी वह–मेरे चुम्बनों के समान पहले
उसकी आवाज, उसकी दमकती देह, उसकी बड़ी आँखें।

अब मैं उसे प्यार नहीं करता, निश्चय ही,
किन्तु हो सकता है कि मैं उसे प्यार करता हूँ।
प्यार अल्पकालिक है, विस्मरण दीर्घकालिक।
क्योंकि इस रात जैसी रातों में आबद्ध किये रहा मैं उसे अपनी बाहों में
मेरी आत्मा संतुष्ट नहीं है उसे खोकर।

भले ही यह दर्द अंतिम दर्द हो जो वह मुझे दे रही है
और यह कविताएँ अंतिम कविताएँ हों जो मैं उसके लिये लिखता हूँ।[1]

❐

---

1. यह 1924 के काव्य संकलन "Veinte Poemas Deamor (Twenty Poems of Love) की कविता है। इसका स्पेनी शीर्षक है : Puedo escribir los versos. अंग्रेजी में अनूदित शीर्षक है : To night I Can Write'. इसका अंग्रेजी रुपान्तरण किया है : W.S. Meriwin ने. यह द्विभाषीय संस्करण के पृष्ठों 31 व 33 में है। इस संस्करण के सम्पादक हैं Nathaniel Tarn। इस संस्करण को छापा है : Penguin Books Ltd.। Hormonsworth,Meddlesex, England ने।

हो चुका अश्रु-गान

तुम जानोगे कि उस क्षेत्र से होकर मैं एक बार गुजरा डरते-डरते
रात थी विलोड़ित गूढ़ ध्वनियों से, जंगली अँधेरे में,
और मैं सरकता चला गया था लम्बान में एक ट्रक में सवार
उस विलक्षण विश्व में—
काले एशिया में, तमांध वन में, पावन भस्माञ्चल में,
और मेरी जवानी थी कि थर-थर काँपती थी जैसे काँपते हैं पंख किसी
मक्खी के
जो यहाँ से वहाँ संदिग्ध साम्राज्यों में भटकती रहती है।

एकबारगी रुक गये पहिये, ट्रक से नीचे उतर आये अपरिचित लोग
और मैं ही था वहाँ उनके बीच, एक विदेशी, जंगली सन्नाटे में,
रात से ग्रस्त, उस ट्रक में असहाय फँसा,
बीस वर्षीय युवक, मौत के इन्तजार में, अपनी भाषा में सिकुड़ा।

अनायास बज उठा था एक ढोल, जल उठी थी एक मशाल, मच गयी
थी एक हलचल,
और वे, जिन्हें मैंने वहाँ निश्चय ही अपना हत्यारा मान लिया था,
नाच रहे थे, जंगल के गगन भेदी अंधकार में
एक मुसाफिर को रिझाने के लिए जो उन दूरस्थ क्षेत्रों में
भटककर आ गया था।

सो यह हुआ कि जब इतने तमाम असगुन मेरे देहावसान का संकेत
दे रहे थे,

तभी प्रलम्ब ढोल, कुसुमित केश-कलाप, झलमलाते टखने
सब के सब एक विदेशी के लिए नाच रहे थे,
मुसकुरा रहे थे और गा रहे थे।

मैं यह कहानी तुमको सुनाता हूँ, प्रिये, क्योंकि एक सीख,
मानवीय सीख, प्रभासित होती है इसके
आश्चर्यजनक बहाने से।
और मुझमें वहाँ समाहित थे प्रभात के आधारभूत कारण-
तभी मेरे मस्तिष्क में कौंध गया यह विचार कि आदमी हैं भाई भाई।

ऐसा हुआ था वियतनाम में, सन् 1928 के वियतनाम में।

चालीस साल बाद, मेरे सहचरों के संगीत पर
पसर गयी हत्यारी गैस, पाँवों और संगीत को झुलसाती,
जलाती अरण्य का अनुष्ठानी अनालाप,
ध्वंस करती प्रेम को, चकनाचूर करती बच्चों की शांति।

अब बजते हैं ढोल-उठते हैं बोल : 'मुरदाबाद पाशविक आक्रामक',
नन्हें देश को संगुम्फित करते गँठीले प्रतिरोध में।
प्रिये मेरी, बता दिया मैंने तुमको सब-सब जो सिंधु और दिन में हुआ,
और मेरे अश्रुगान का चन्द्रमा था कि जलराशि में ऊँघ रहा था।
मेरे संतुलन के तंत्र ने इसे ऐसे ही सँजोया था
समुद्री वसंत के प्रथम चुम्बन की सनसनाहट से।
बता दिया मैंने तुमको-कि अपने मुसाफिरी संसार में
ले जाने में तुम्हारे आँखों की झलक,
गुलाब के फूल ने बना लिया अपना निजी कुसुमित स्थान
मेरे अंतरतम में
और मैंने कहा कि मैं तुमको देता हूँ इनके अलावा भी
बदमाशों और बहादुरों की स्मृतियाँ,

संसार का समस्त भैरव-निनाद मेरे चुम्बनों के तले गर्जन करता है–
वही था मेरे अश्रुगान में खुल गयी नाव का पथ।

किन्तु यही तो हैं हमारे दूषित वर्ष; दूरवासी आदमियों का रक्त
पुनः लड़खड़ाता है फेन में, हमको लांछित करती हैं लहरें,
कीचड़ लगा है चन्द्रमा।
दूर की यह यंत्रणाएँ हमारी यंत्रणाएँ हैं
और पीड़ित के लिये
लड़ी जा रही लड़ाई मेरे स्वभाव की दृढ़ शिरा है।
संभवतः यह लड़ाई भी दूसरी लड़ाइयों के समान बीतेगी,
जिन्होंने हमें अलग कर दिया था,
मरा जानकर हमें, हत्यारों के साथ मारकर हमें
लेकिन शर्म इस समय की अपनी दहकती अँगुलियाँ रखती है
हमारे चेहरों पर।
कौन मिटायेगा निर्दोष रक्त में छिपी बेरहमी ?

प्रिये मेरी, चौड़ी तट-रेखा की पूरी लम्बान में
धरती एक-एक पँखुरी से अपनी सुगंध देती है
और अब वसन्त का राज-लक्षण उद्घोषित कर रहा है
हमारी नित्यता, जो कम दर्दनाक नहीं है बवजह होने अल्पकालीन।

अगर जल-पोत बंदरगाह में कभी नहीं लौटता
अपनी ममतामयी अँगुलियों के साथ,
अगर गरजते सिंधु में अपनी गैल गहे रहा था अश्रुगान,
अगर मेरे बाहु-पाश में तुम्हारी सुनहरी कमर
खूबसूरती से लचक-लचक जाती थी,
तो आओ हम यहाँ पर समुद्र की वापसी को आत्म-समर्पण करें,
यही तो है हमारी नियति।

तो आओ हम दूसरी बदमिजाजी को बिना अधिक दिक्कत
के बर्दाश्त करें।

कौन कर सकता है स्वर-साम्य स्थापित
प्रवाह और अनुक्रमण के तात्विक रहस्यों से
जो हमें, क्रमिक चरणों में, सूर्य से प्रहर्षित करते,
फिर रुदन से विगलित करते हैं?
झुकती है एक पत्ती धरा की ओर अपनी डाल के अंतिम छोर से
और गिर जाती है पीले पवन में एक संयोग का साक्ष्य होकर।

सो रहे आदमी की ओर सरक गयी औरत अपनी 'जगहर' में
और सपनों में दोनों उतर गये नदियों में जो विलाप का कारण बनीं
और फिर एक बार बढ़े काले जानवरों और छायाओं से
लदी ट्रेनों के बीच
रात में उस हद तक कि पीले पत्थरों से अधिक कुछ न रह गये।

अब समय है, प्रिये, कि उस निरानंद गुलाब से सम्बन्ध विच्छेद करें,
सितारों को बंद करें और भस्म को जमीन में दफनायें;
और, पौ फटते ही, जगें जगाने वालों के साथ
या कि समाहित हो जायें स्वप्न में,
सागर के अपर पार पहुँचें जिसका कोई अपर पार नहीं है।[1]

❐

---

1. यह मूल स्पेनी कविता कवि के स्पेनी संकलन–La Barcarola (1967) से ली गयी है। इसका स्पेनी शीर्षक है–La barcarola termina. इसका अंग्रेजी शीर्षक है–The Watersong Ends. मैंने हिन्दी में इसका शीर्षक रक्खा है–हो चुका अश्रु-गान। मूल से अंग्रेजी के अनुवादक हैं–ALastair Reid। यह Pengain Poets सिरीज की पुस्तक Pablo Naruda—A bi-lingual Edition से ली गयी है। जहाँ यह पृष्ठ संख्या 233, 235 व 237 में छपी है। इस संस्करण के सम्पादक हैं–Nathaniel Tarn. प्रकाशक हैं : Panguin Book Ltd., Harmondsworth, England. प्रकाशन तिथि है—सन् 1975.

एकाकी सज्जन

प्रेमासक्त समलिंगी युवक और युवतियाँ,
और बीजित, उन्निद्र, प्रलापी बिधवाएँ
और सवादिन की गर्भिणी नौसिखिया गृहणियाँ,
मेरे बाग की छायाओं में गश्त लगाती बिल्लियाँ,
धड़कनों के गलहार के समान, मैथुनिक शुक्तियाँ,
मेरे अकेले मकान को घेरे हैं
मेरी आत्मा के विरुद्ध तैनात दुश्मनों के समान,
पैजामा पहने षड्यंत्रकारियों के समान
आदान-प्रदान करते हुए लुक-छिपकर प्रलम्ब, पीन चुम्बन।

यहाँ आकृष्ट कर ले आता है प्रेमियों को
गरमी का कांतिमय मौसम।
विषादी सैन्यदलों में
जिनमें होते हैं मोटे, थुलथुल, विनोदी, विषण्ण जोड़े :
खजूर के चारु पेड़ों के तले, ज्योत्सना ज्योतित समुद्र के किनारे,
वहाँ, अनवरत उत्तेजना, होती रहती है
पैजामों और पेटीकोटों की,
दुलराये गये मोजों की सुस्पष्ट ध्वनि,
द्युतिमान होते हैं ललनाओं के उरोज
उन्हीं के लोल लोचनों के समान।

स्पष्ट है यह अच्छी तरह कि स्थानीय लिपिक, भरपूर ऊबा,
अपने काम के दिन की थकान के बाद,
अभ्यस्त सोते समय सस्ती किताबें पढ़ने का,
अपनी पड़ोसिन को डोरे डालकर,
उसे ले जाता है दयनीय गर्हित गर्त्तों में
जहाँ के नायक होते हैं युवा युद्धाश्व या कि कामुक राजकुमार :
वह सहलाता है उसके मृदु रोमिल पावों की रोम-राशि को
अपने आर्द्र, तप्त हाथों से जिनसे गंध आती है
सिगरेट के धूम्रपान की
शील भंजकों की अपराह्न वेलाएँ, और अशिथिलित वैध रातें
एक साथ लपेट लेती हैं दोनों, चादरों के एक जोड़े की तरह,
दफनाये मुझे :
मध्याह्न के आराम के घंटों में जब अल्पवयस्क छात्र और छात्राएँ
और पादरी लोग अवकाश लेते हैं हस्त मैथुन करने के लिए,
और जब सरेआम आवारागर्दी में चक्कर लगाते हैं जानवर,
और खून को गंध मारते हैं भौंरे और कुपित भनभनाती हैं
ममाखियाँ,
और अपनी चचेरी बहनों के साथ चचेरे भाई
घुँघराये खेलते हैं,
और डाक्टर लोग रोगी युवतियों के पतियों को तरेरते-घूरते हैं,
और शिक्षक, आदतन, सुबह
पहले अपने दाम्पत्य-धर्म का पालन करता और फिर नाश्ता करता है,
और, तदुपरांत, परदारिक लोग, जो एक दूसरे को सचमुच प्रेम करते हैं,
ऊँचे और कुशादा बिस्तरों पर, जो समुद्रगामी, जहाजों के समान हैं-
निश्चय ही ऐसा और हमेशा यह महावन मुझे घेरे रहता है,

साँस लेता रहता है यह फूलों से
खुरों जैसे, जूत्तों की शक्ल वाले, काले बद्ध-मूल दाँतों के मुँह वाले
बड़े फूलों से।[1]

❐

मत्स्य-कन्या और पियक्कड़ों की पौराणिक कथा

यह सब लोग वहाँ अंदर थे
जब वह वहाँ पहुँची, सिर से पैर तक नंगी,
यह सब लोग सुरा-पान कर रहे थे, और उस पर थूकने लग गये थे।
नदी से निकलकर नयी आयी अभी-अभी, वह कुछ न समझ सकी।
वह राह भूल गयी एक मत्स्य-कन्या थी।
व्यंग-ही-व्यंग से सराबोर हो रही थी उसकी दमकती देह।
अश्लीलता-ही-अश्लीलता से लांछित हो रहे थे उसके कंचन-कुच।
आंसुओं से नावाकिफ, वह न रोयी।
कपड़ों से नावाकिफ, न पहने थे उसने कपड़े,
उन्होंने उसके जिस्म को गोद-गोद दिया
सिगरेट के बचे टुकड़ों और कार्क के जले टुकड़ों से,

---

1. मूल कविता स्पेनी भाषा में है। शीर्षक है 'Caballero Solo". इसके अंग्रेजी अनुवाद का शीर्षक है "Lone Gentleman." अंग्रेजी में अनुवाद किया है Nathaniel Tarn ने. यह नेरूदा की 1933 की कविता है। इसे मैंने Penguin Poets सिरीज में प्रकाशित "Pablo Neruda"—Selected Poems—द्विभाषीय संस्करण–सम्पादित द्वारा Nathaniel Tarn के पृष्ठ 49-51 में छपी पाया है। प्रकाशक है, Penguin Books ltd. Harmondsworth, Middle sex England, प्रकाशन वर्ष-1975.

और मारे हँसी के लोट-पोट हो गये वह कलवरिया के फर्श पर
वह न बोली क्योंकि बोलने से वह नावाकिफ थी।
स्वप्निल प्रेम के रंग से अनुरंजित थीं उसकी आँखें,
पुखराजों से मेल खाती थीं उसकी बाहें।
मूँगिया प्रकाश में उसके ओठ निश्शब्द चल रहे थे,
और अंत में वह द्वार से निकलकर वहाँ से चली गयी।
नदी में धँसते ही, सिर से पैर तक पोर-पोर से स्वच्छ और शुद्ध हो गयी,
फिर एक बार वह दमक उठी वृष्टि में धुले सफेद पत्थर के समान;
और बिना सिंहावलोकन किये, फिर एक बार वह तैरी-तिरी,
तैरी-तिरी न-कुछ-की ओर, तैरी-तिरी अपने अवसान की ओर।[1]

❐

स्पेन जैसा था

स्पेन था कसा और सूखा
विषण्ण बोल का एक वारीय ढोल,
एक मैदान, एक उकाब का ऊँचा घोसला, एक अनालाप,
कशाघात कर रहे मौसम के नीचे।

---

1. मूल कविता का स्पेनी शीर्षक : "Fabula de la Sirena los borrachos." अंग्रेजी शीर्षक है : Fable of the Mermaid and the Drunks. अंग्रेजी में अनुवाद किया है Alastair Reid ने। यह कविता Penguin के सन् 1975 में छपे Bilingual edition के संकलन की पृष्ठ संख्या 77 में छपी है। इस संकलन के सम्पादक है Nathaniel Tarn. इस संकलन का नाम है : Pablo Neruda Selected Poems. प्रकाशन Penguin Book Ltd. Harmondsworth Middlese England.प्रकाशन वर्ष 1975.

प्रलाप की हद तक, जी-जान से भी ज्यादा,
मैं प्यार करता हूँ तुम्हारी बंजर भूमि और तुम्हारी रूखी रोटी को,
तुम्हारी पीड़ित जनता को!
मेरे अंतरंग में
उगता है तुम्हारे गाँवों का लुप्त फूल,
अटल और कालातीत हैं
खनिज के तुम्हारे भू-भाग
चन्द्रमा के तले बूढ़ों की तरह उभरे,
जड़मति भगवान के द्वारा निगले गये।

तुम्हारे सभी विस्तार, तुम्हारा पाशविक एकान्त,
तुम्हारी राजकीय बुद्धिमत्ता से सम्बद्ध थे,
अनालाप के अमूर्तित पत्थरों से भूताविष्ट थे,
तेज थी तुम्हारी मदिरा, मीठी थी तुम्हारी मदिरा,
उग्र और उत्तम थीं तुम्हारी दाख-क्यारियाँ।

सूर्य का पत्थर, प्रदेशों में विशुद्ध,
रक्त और धातुओं का शिरालु स्पेन, नील और जयी,
पंखुरियों और गोलियों का सर्वहारा
अकेला, जीवित, निद्रालु, अनुनादित था।[1]

❐

---

1. मूल स्पेनी शीर्षक है : Como era Espana. अंग्रेजी शीर्षक है : The Way Spain Was . अंग्रेजी के अनुवादक हैं Nathaniel Tarn. Penguin Poets की Series की पुस्तक Pablo Neruda: Selected Poems के Bi-lingual Edition के पृ० सं. 109 में छपी है। प्रकाशक : Penguin Books Ltd., Harmondsworth Middlesex, England, प्रकाशन वर्ष 1975.

ओ धरा, मेरा इन्तजार करो

ओ सूर्य, लौटा दो मुझे
मेरी उद्दंड नियति को,
पुरातन अरण्य की वृष्टि,
वापस ले आओ मेरे लिए सुगंध और
मेघ-मंडल से गिरती तलवारें,

चरागाह और चट्टान की एकांतिक शांति,
नदी के तटों की आर्द्रता,
देवदारु के पेड़ की गंध,
प्रोन्नत अरौकारिया की
सांद्र-सघन बेचैनी में भी
धड़कते हृदय की तरह की जीवित हवा।

ओ धरा, वापस दे दो मुझे अपने अनाविल उपहार,
अनालाप के वे उत्सेध जो
अपनी जड़ों के समारोह में ऊर्ध्वगामी हुए।

मैं लौट जाना चाहता हूँ अपने न हुए अस्तित्व तक,
और सीखना चाहता हूँ लौट जाना ऐसी गहराइयों से,

जिन्हें सभी प्राकृतिक पदार्थों के मध्य,
मैं या तो जी सका या न जी सका;
कोई फर्क नहीं पड़ता एक और पत्थर का हो जाना,
स्याह पत्थर का हो जाना, अनाविल पत्थर का हो जाना
जिसे स्रोतस्विनी बहा ले जाती है।[1]

❐

1. मूल स्पेनी शीर्षक है : Oh, tierra, esperame. अंग्रेजी अनुवाद का शीर्षक है : Oh Earth, Wait for Me, अंग्रेजी के अनुवादक हैं Alastair Reid. यह कवि के स्पेनी संकलन–Memorial de Isla Negra (1964) की एक कविता है। यह Penguin Poets सिरीज की पुस्तक Pablo Neruda : Selected Poems-A bilingual Edition (1975), edited by Nathaniel Tarn, के पृष्ठ संख्या 223 पर छपी है। इसके प्रकाशक हैं : Penguin Books Ltd., Harmondsworth, Middlesex, England. हिन्दी का प्रोन्नत अंग्रेजी का Towering है। Araucaria (अरौकारिया) एक प्रकार का शंकुधारी सदाबहार पेड़ है, जो चिली के Arauco District में होता है। देवदारु है Larch, अनालाप है Silence, Towers हैं उत्सेध, Pure है अनाविल, Solomnity है समारोह, स्रोतस्विनी है River, Wild destiny है उद्दंड नियति।

नाज़िम हिकमत

तुर्किश कवि, नाटकार, उपन्यासकार और संस्मरणकार के रूप में प्रसिद्ध नाज़िम हिकमत का पूरा नाम था नाज़िम हिकमत रान (Nazim Hikmat Ran)। इन्हें 'रोमाण्टिक कम्युनिस्ट' और 'रोमाण्टिक क्रांतिकारी' के रूप में जाना जाता है। अपने राजनीतिक विचारों और प्रतिबद्धताओं के कारण इन्हें कई बार जेल या निर्वासन में रहना पड़ा।

15 जनवरी, 1902 को हिकमत बे (Hikmat Bey) और सेलिले हमीम (Celile Hanim) के यहाँ तत्कालीन ओट्टोमन साम्राज्य (Ottoman Empere) के सेलेनिक (Selanik) आज के ग्रीस के थेस्सालोनिकी (Thessaloniki) में जन्म हुआ।

1921 में तुर्किश की आजादी की लड़ाई में हिस्सा लेने यह अंकारा गये, जो तुर्किश मुक्ति-आन्दोलन का मुख्यालय था। वहाँ इनकी मुलाकात मुस्तफा कमाल पाशा (अतातुर्क) से हुई। इस लड़ाई में युवकों को भागीदारी के लिए इन्होंने कविता लिखी, जो बहुत सराही गयी, पर इनके कम्युनिस्टिक विचारों को स्वीकृति नहीं मिली, इससे खिन्न होकर, 1917 की रूसी क्रांति को अपने व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा जानने, समझने के लिए ये 30 सितम्बर, 1921 को जार्जियन सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिक के बतूमी (Batumi) आये। जुलाई, 1922 में ये मास्को पहुँचे। वहाँ ब्लादीमीर मायकोवस्की और लेनिन से बहुत प्रभावित हुए।

प्रारम्भिक कविताएँ इनकी आक्षरिक छंद (Syllabic meter) में हैं, जो आगे चलकर इन्हें नाकाफी लगा। इन्होंने मुक्त छंद अपनाया। इनकी तुलना फेडरिको गार्सिया, लोर्का, मायकोवस्की और पाब्लो नेरूदा जैसे कवियों से होती है।

नाज़िम हिकमत युद्ध के विरोधी और शांति के पैरोकार रचनाकार थे। 2 जून, 1963 को प्रातः 6.30 बजे इनकी मृत्यु अखबार उठाते समय अपने देश से दूर, मास्को में हुई। नाज़िम हिकमत अपने देश से, अपने देश की माटी से, वहाँ के लोगों से, वहाँ के गाँवों से, बहुत प्यार करते थे। Human Land Scape from my Country, The Epic of the War of the Independence तथा Force of the Nation आदि इसकी साक्षी हैं।

तुम्हारे हाथ और उनके असत्य

हाथ तुम्हारे पत्थर जैसे दृढ़ बलवान,
हाथ तुम्हारे बंदीगृह में गायी ध्वनियों जैसे म्लान,
हाथ तुम्हारे पशुओं जैसे मांसल और विशाल,
हाथ तुम्हारे उन भूखे बच्चों के मुँह-से जो ताने हैं भृकुटि-कमान,
हाथ तुम्हारे मधुमक्खी-से निपुण और श्रमशील,
हाथ तुम्हारे दूधभरी माँ की छाती-से, और प्रकृति-से साहसशील,
हाथ तुम्हारे कड़े चाम के तले छिपाये कोमल मित्र-स्वभाव।

❐

बीसवीं सदी

''आओ अब हम तुम सो जाएँ
और जगें सौ वर्षों के उपरांत प्रिये!''

नहीं–
पलायनशील नहीं मैं,
नहीं मुझे लगती है मेरी सदी भयंकर,
यद्यपि मेरी सदी शाप से ग्रस्त–लाज से लाल-गाल है,
फिर भी मेरी सदी साहसिक है, महान है, और वीर है।

इसका मुझको कुछ पछतावा नहीं, शोक भी नहीं
कि मैं कुछ पहले जन्मा,
बल्कि गर्व है मुझे कि मैं इस विंश सदी में जन्मा
बल्कि तोष है मुझे कि मैं हूँ वहाँ जहाँ मेरी जनता है,
और नयी दुनिया लाने के लिए लड़ाई हम लड़ते हैं.....
''सौ वर्षों के भीतर, प्रेयसि.....''

नहीं, और भी इससे पहले बावजूद प्रत्येक बात के
मेरी सदी कि जो मर-मरकर जी उठती है,
मेरी सदी कि जिसके अन्तिम दिवस बहुत ही सुन्दर होंगे।
प्रिये तुम्हारी आँखों-सी निश्चय चमकेगी सूर्यातप में।

❐

मैं कवि हूँ

मैं कवि हूँ
उन सब लोगों का
जो मिट्टी,
लोहे,
पावक से जीवन रचते :
मैं सैनिक हूँ कोटि जनों का.....

❐

आओ साथी! अब दस्तों में मिलो हमारे

आओ साथी! अब दस्तों में मिलो हमारे
नगर-भाग में
चौगानों में,
वृक्षारोपित जन-मार्गों में,
गीत हमारे अब गुंजारो!
गीत हमारे घर-घर गूँजें,
गीत हमारे घर-घर व्यापें,
एक साथ मिल हम सब गायें
एक विपुल संगीत सुनायें,
यदि मेरा दिल नहीं लपट की तरह लपकता,
तेरा दिल भी नहीं लपट की तरह लपकता,
नहीं हमारे हृदय लपट की तरह लपकते;
तो फिर कौन प्रकाश अँधेरा घुप्प हरेगा ?

❐

यहाँ युद्ध के लिए घृणास्पद सेना का परिचालन होता

यहाँ युद्ध के लिए घृणास्पद सेना का परिचालन होता,
ये साम्राजी उसी तरह से सेना का परिचालन करते दौड़ रहे हैं,
जैसे रवि के आ जाने से छायाएँ परिचालित होकर दौड़ रही हैं;
कूटनीति का ज्ञानी उज्ज्वल दस्तानों को जो पहने है–

बारूदी दुर्गंध छोड़ता,
फौजी जनरल जो कि मनुज का मांस बेचता,
गूढ़ दार्शनिक जो डालर से ग्रंथ तौलता,
एक रसायनविज्ञ मरण की किरनों का जो सट्टा करता,
और एक कवि जो पीनक की कविताओं से–
जनता को बेसुध करता है,
यह सब-के-सब,
बुरी तरह से अब सिर के बल,
लगा रहे हैं जोर युद्ध के परिचालन में।

❐

वहाँ लाल, पीले, काले, गोरेजन

वहाँ लाल, पीले, काले, गोरेजन
सब समान हैं!
वहाँ न पीड़ित है जनता जनता के द्वारा,
वहाँ न शोषित है मानव मानव के द्वारा।
केवल श्रम का मान वहाँ है!
नहीं वहाँ-सा और कहीं स्वाधीन मनुज है।
वहाँ झरोखों से सुख-रवि की किरनें आतीं।
वहाँ मनुज ही जन-जीवन का निर्माता है।

❐

और अधिक, डाक्टर, प्रभात में

और अधिक, डाक्टर, प्रभात में,
शुचि प्रभात में, जब प्राची को किरनें रँगतीं,
तब वह मेरा दिल निकालकर ले जाते हैं–
ग्रीस देश में मार डालने.....
और डाक्टर, दस वर्षों तक,
पूरे लम्बे दस वर्षों तक सदा डाक्टर,
मेरे हाथ रहे हैं खाली, मैं क्या देता कुछ जनता को
सिवा सेब के,
मेरे दिल के लाल सेब के।

❐

मायकोवस्की

पूरा नाम व्लादीमीर व्लादीमिरोविच मायकोवस्की (Vladimir Vladimirovich Mayakovsky) था।

14 साल की उम्र से ही इनका रुझान समाजवादी विचारधारा की ओर हो गया था। 1906 में पिता की मृत्यु के बाद ये अपनी माँ के साथ मास्को आये और मार्क्सवादी-साहित्य के प्रति इनका प्रेम सुदृढ़ होता गया। इन्होंने रसियन सोशल डिमोक्रेटिक लेबर पार्टी की अनेक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी की। 1908 में स्कूल की फीस जमा न कर पाने के कारण यह स्कूल से निकाल दिये गये। अपनी क्रान्तिकारी राजनीतिक गतिविधियों के कारण इन्हें तीन बार जेल भी जाना पड़ा। जेल में ही 1909 से इन्होंने कविताएँ लिखनी शुरू कर दी थीं, लेकिन ये कविताएँ जब्त कर ली गयी थीं। इनकी पहली दो प्रकाशित कविताएँ थी–Night तथा Morning। 1915 में लिखी A Cloud in Trousers उनकी पहली महत्त्वपूर्ण कविता थी, जिसमें प्रेम, क्रांति, धर्म, कला का चित्रण एक उत्कट प्रेमी के नज़रिये से किया गया।

मायकोवस्की रूस की अक्टूबर क्रांति के साक्षी थे। इस समय वे स्मोलनी (Smolny) पेट्रोग्राड में थे।

पेट्रोग्राड से मायकोवस्की रूस आये। यहाँ उन्होंने 1919 में अपनी कविताओं का पहला संग्रह 'Collected Works 1909-1919] प्रकाशित किया।

मायकोवस्की का प्रभाव केवल सोवियत रूस तक ही नहीं सीमित रहा, दूसरे देशों को भी उन्होंने प्रभावित किया। मास्को में 14 अप्रैल, 1930 की शाम को मायकोवस्की ने अपने को गोली मार कर अपनी इहलीला समाप्त कर ली। इस समय उनकी उम्र केवल 36 वर्ष की थी। उनका जन्म 19 जुलाई, 1893 को रूसी साम्राज्य के बगदाती (Beghdati) में हुआ था।

केदार बाबू की मायकोवस्की पर लिखी एक कविता भी नीचे दी जा रही है—

मायकोवस्की के प्रति

कविवर!
तेरी कविता बल है,
जीवित लोहू,
जागृत जल है।
कविवर!—
तेरी कविता घन है,
फौलादी
हँसियों का वन है।

— 7.1.1951

मैं चौतरफा

मैं
चौतरफा
जग में
घूमा,
नीचे
उसके
नाभि-भाग तक–
मैं जीवन
अच्छा
पाता हूँ,
रहन-सहन का
ढंग सुन्दर है।
और यहाँ
मेरे स्वदेस के
रचना क्रम में–
जीवन में
गौरव-गरिमा है।
अधिकाधिक,
उज्ज्वलतर,
किरनें पथ की;
मेरा वंदन
करती हैं
दीपक से दीपित।

यह मारग
यह पथ मेरा है।
मेरे घर
इसको घेरे हैं!
मुसकाती हैं
मुग्ध खिड़कियाँ।
भरी दुकानें,
अपनी रोचक
रुचिर खिड़कियाँ।
मेरे आगे
तश्तरियों सी
रख देती हैं।
यहाँ दीप्त फल,
दीप्त सुरा है,
दीप्त दिवस हैं।
अन्दर
कैसे
स्वच्छ साफ
कपड़ों के ढक्कन
हरकाते हैं
बुरी मक्खियाँ
वह पनीर
मक्खन जो रक्खा
वहाँ दीखता,
वह खाने का
सुन्दर सुन्दर
रुचिकर अम्बर

अब मेरा रूबल
खरीदता है
ज्यादा-सा।
हर्षित होकर
ज्यादा ज्यादा
गस्से खाओ।
दीपालोकित
यह लिक्खा है
''कमतर मूल्य।''
अह! मेरी
रंगीन सुघर
सहयोग-समितियाँ
बढ़ती हुई अनेकों!
श्रेष्ठ स्वास्थ्य!
मैं तुझसे खुश हूँ,
तू मेरी सम्पत्ति बढ़ाता।
मैं
मास्को की ग्रन्थ-दुकानें
छोड़ न सकता;
मेरा उन्नत वक्ष
निकट तड़काता शीशा।
ग्रन्थों की सब फौजें चलतीं
मेरे नामोच्चारण पर ही
घोषित करतीं—
मायकोवस्की कवि की मेहनत,
होड़ लगाती है
मेहनत से प्रजातंत्र की!
वे मोटे-ओठीले टायर

मेरी मोटर पर
मेरा बोझा ढोते हैं;
चक्कर पर चक्कर वे खाते
धूल उड़ाते मेरे पथ पर।
मेरे डिप्टी गण बैठे हैं
लाल सभा में;
कोई नहीं ''सोअक्कड़'' उनमें।
मेरा
लाल-कपोली फौजी
थपकाता है
अपने काले
चमड़े का बंदूक-गिलाफ;
साहस झूमा
उसके दिल में
और अधिक है
न्याय-सहारा।
वह मेरी
रखवाली करता
रात दिवस है;
चौराहों पर
पथ-निर्देशन
द्वारा मुझको
ठीक चलाता।
मैं कहता हूँ
''वाह खूब है!''
वह ओठों से
मुसकाता है
मेरे पथ पर,

''वाह खूब है!''
हम सलाम देते हैं उसको
''वाह खूब है।''
आच्छदित है
मेरे ऊपर कैसा अम्बर!
अति अगाध,
अतिशय अनंत,
सुखकर आँखों को,
नील रेशमी
आँचल मेरे महाकाश का!
इसके विस्तृत तह में उड़ते
वायुयान के चालक मेरे;
रवि की किरनें,
शशि की किरनें,
यानों के पंखों पर पड़तीं,
सानु चूमते,
मेघ चीरते,
नभ में विजयी
चालक मेरे
अपने पथ पर
आगे उड़ते!
दृढ़ शरीर हूँ,
विटप तुल्य
मैं खड़ा हुआ हूँ,
अपनी बाहें ऊपर खोले,
युद्ध छिड़ा यदि
कृत्य निरख तब
व्योम-विहारी

इन पुरुषों के,
विश्व हिलायेगा
अवश्य सिर!
दृष्टि दूर तक मेरी जाती,
समाचारपत्रों को पढ़ती,
मैं विलोकने का इच्छुक हूँ
कहाँ कहाँ
मजदूर उभरते;
कहाँ कहाँ
पूँजीपतियों की,
पदाघात से,
रीढ़ तोड़ते;
दुनिया कैसे
ज्वालमयी है,
भभक रही है,
एक महानल
इन पृष्ठों पर
नाच रहा है
एक लोक की चीजें चलतीं
अपनी दैनिक यात्राओं पर;
एक मरोड़ झकोर रहा है
एक हजार वकील जिले के।
अच्छा है,
बकवाद व्यर्थ
इनके सम्पादक
को करने दो
और असत्यों का
पुराण कहने दो लम्बा।

बड़े जोर से
भय से
इनको चिल्लाने दो,
भय-स्वेदित है
वह तो पीली धुँधली आभा;
वह दलील
है अपदस्थों का
शिशु सा-रोदन!
शीघ्र,
अरे, इतिहास-कर्ण में
यह दलील सब खो जायेगी
मंद गूँज हो तिरोहितों की।
मेरी फौजें
मैं निहारता।
वाह खूब है!
तीव्र दुंदभी,
साफ राइफल
अच्छा जूता।
तुम सुडौल संक्रमणकारियो,
प्रभापूर्ण हैं नेत्र तुम्हारे,
पग प्रवीण हैं,
वृहत् वक्ष हैं,
उन्नत सिर हैं!
अब युद्धास्त्र
चूर होता है।
लाल-गृहांकित तारिका-अङ्कित हे जन!
सुनो,
लाल काव्य-कर्त्ता मैं कवि हूँ,

सहगामी हूँ,
साथ तुम्हारे मुख निहारता!
एक साथ हूँ
एक पंक्ति में।
शत्रु तुम्हारे
मेरे अरि हैं!
क्या वे घुसते?
अति अच्छा है
हम अपने आदेश जानते
उन्हें धूल-सा
फूँक उड़ा देंगे हम निश्चय
जो सीमान्त हमारे छूते!
सावधान
हे धूम्र-छोड़ती ट्रेन
हमारी देश-वायु से!
दूर पुरों से
कृषी,
कृषी में
ग्राम,
ग्राम में पलता
कृषक कूर्च धर।
पीछे
हलकी
पंक्ति पंक्ति के
पिंड तोड़ता,
पद्य बनाता,
शीघ्र पुष्ट
श्रम के करने में

प्रतिवासी से होड़ लगाता।
ऐसे धरती
बोई जाती,
धेनु-पयोधर
दुहना होता,
और पकाई जाती रोटी,
जल में पकड़ी जाती मछली,
और जगाई जाती दुनिया।
अपनी रचना
देश हमारा
ऐसे करता :
ऐसे,
लखता है
अपने को
दिन दिन बढ़ते।
देश दूसरे
फुसफुस कहते
मृत्यु कथाएँ।
मुक्त हुआ
घुटती साँसों से,
व्यर्थ रहस्यों के चक्कर से,
हत्याओं से।
यह देखो
यह युवा सत्य है,
और युवक की
नव साँसों का
एक नया इतिहास बना है!
रचना होती,

खोजें होतीं,
नित्य प्रयोग निरंतर होते,
और खुशी छलकी पड़ती है
कर्म कर्म से,
राष्ट्रो,
अपने हाथ पसारो
उमँड़े सुख को।
राह हमारे जन की गह लो,
तुम देखोगे–
संघर्षों के वृद्ध हमारे
अब भी शिशु हैं,
कन्याएँ हैं,
शक्ति हमारी
दिन दिन दूनी
फूल रही है।
जैसे नूतन शाखा फूले,
नित्य नये सत्;
घन अरु कविता
गुण गाते हैं
तरुण देश के!

❐

पेरिस में जीवन

पेरिस में जीवन
फूलों की सेज नहीं है
उस नारी के लिये
करे जो काम बिके मत।

❐

उसके गाने

उसके गाने
उसकी कविता–
बम औ' झंडा–
कवि का स्वर
उन्नत करता है
श्रमिक वर्ग को।

❐

कवि की कविता सारतत्व रेडियम के सम है :

कवि की कविता सारतत्व रेडियम के सम है
शुद्ध धातु तो दो रत्ती है, टनों खनिज है।
वाग्बहुल के महामेरु से कवि चुनता है
वह संजीवन शब्द प्राण जिसमें रहता है।

❐

अपनी झंकृत काव्य-शक्ति को

अपनी झंकृत काव्य-शक्ति को
वीर जुझारू वर्ग तुम्हीं को मैं देता हूँ।

❐

मेरा दिल मुझसे सहमत है–

मेरा दिल मुझसे सहमत है–
यह मेरा कर्तव्य परम है :
मैं लिखने के लिए बाध्य हूँ।

❐

हमको दो वह ओजस कविता

हमको दो वह ओजस कविता
जिये एक युग तक जो जग में,
नहीं निरर्थक वह दो कविता
जो ढलुवाँ हो और ढँकी हो।
वह कविता दो,
जो गूँजा ही करे निरन्तर,
जो कि हमारे प्रजातंत्र की–
और समय की गौरव कृति है!

❐

बंदूक की बराबरी मेरी कलम करे,

बंदूक की बराबरी मेरी कलम करे,
उद्योग में लोहे की तरह धाक जमाये,
पी० बी० के एजेन्डा में यह पहला शुमार हो,
स्तालिन का लेख हो
''कविता के सृजन पर''.....

❐

पर जब वे तुक-ताँत तानते

पर जब वे तुक-ताँत तानते,
मनगढ़न्त कर प्रेम और बुलबुल की गाते–
बिना जीभ का पथ मुँड़ता है और तड़पता–
बतियाने रोने के काबिल
नहीं रहा है कुछ भी बाकी।

❐

जहाँ हवाएँ कभी झुलसती थीं हरियाली

जहाँ हवाएँ कभी झुलसती थीं हरियाली,
जहाँ मरुस्थल को दहकाती थी सूरज की आग कराली,
वहाँ तरुण तरु घनी हरेरी प्रकट हुई है,
और कर्म की क्रिया निरन्तर अब चालू है।

❐

मैं कहता हूँ

मैं कहता हूँ :
एक नगर आबाद बनेगा
यहाँ मनोहर!
एक पार्क धरती के उर पर
यहाँ खिलेगा बेहद सुन्दर!

❐

अब, अपनी पूरी ऊँचाई पाकर उठकर

अब, अपनी पूरी ऊँचाई पाकर उठकर,
तुम,
जिसका जीवन उनके रण पर तर्पण है,
कब, उनसे पूछोगे उनके सिर पर चढ़कर :
हम क्यों लड़ते? किस मतलब से?

❐

बारूदी पीपों के करतब मुरदाबाद

बारूदी पीपों के करतब मुरदाबाद।

❐

ब्रिटिश पुतलियाँ, सरल काम है उन्हें नचाना

ब्रिटिश पुतलियाँ, सरल काम है उन्हें नचाना
कई आवाजें,
एक डोर से झटका क्रमशः
उन्हें लगाना!

❐

अगर तुम्हारी आँख अंध है

अगर तुम्हारी आँख अंध है,
नहीं शत्रु को खड़ा देखती;
अगर तुम्हारी शक्ति घृणा की मरी पड़ी है–
इधर पधारो,
इस पथ से
न्यूयार्क नगर में।

❐

साथी लोगो!

साथी लोगो!
अब अमरीका
मजदूरों के राज-संघ पर
युद्ध लादता।

❐

मुझे खुशी है

मुझे खुशी है
मैं यूनियन का एक अंग हूँ
सब है सबका
आँसू की बूँदें भी अपनी।

❐

शांति बढ़ाओ

शांति बढ़ाओ
बस रण से रण ठानो।

❐

जन-जहाज हैं

जन-जहाज हैं।
सूखी धरती नहीं रुकावट।

❐

मैं

मैं
स्वयं को
माँजा करता
लेनिन द्वारा,
ताकि बढ़ूँ मैं
क्रांति-सिंधु में
अब से आगे।
तो भी मुझको डर लगता है
अपनी कविता-लिखी पंक्ति से
जैसे डरता है नौसिखिया
छाया-छल से।
वह सिर है अब पुष्प-प्रतिष्ठित
पूर्ण प्रकाशित।
मैं उत्सुक हूँ बस इसके हित
छल मत ढाँके
खरा
पारखी
महामानवी
महाभयंकर
लेनिन का वह उन्नत मस्तक!
मैं डरता हूँ
यह समाधि-घर

और अफसरी समारोह यह,
यह संस्थापित न्याय-व्यवस्था-अंकित लीला
रुद्ध न कर दे
अति अभिषेकित कर
लेनिन की सरल सादगी।
मैं कँपता हूँ
लेनिन के हित
ज्यों अपने दृग-तारा के हित
मैं कँपता हूँ
क्योंकि करे मत कोई लांछित
तुच्छ कोटि की सुन्दरता से।

❐

कुछ को जीवन महानंद है, मधु मक्खन है

कुछ को जीवन महानंद है, मधु मक्खन है,
कुछ को जीवन अनाहार है, कटु क्रन्दन है।

❐

गन्दे ग्रन्थों को गीतों को मैं लाघूँगा

गन्दे ग्रन्थों को गीतों को मैं लाघूँगा
जीवित जन हूँ,
जीवित जन से मैं बोलूँगा।

❐

हम चलते हैं

हम चलते हैं
लेनिन के दरसाये पथ पर,
दूजे पथ हैं
टेढ़े-मेढ़े दुर्बल कातर.....

❐

वाल्ट ह्विटमैन

वाल्ट यानी वाल्टर ह्विटमैन एक अमेरिकी कवि, निबंधकार, पत्रकार और मानववादी थे। इनका जन्म 31 मई, 1819 को लांग टापू पर हंटिग्टन (Huntington) कस्बे के वेस्ट हिल्स में वाल्टर और ल्युइसा वान वेल्सर ह्विटमैन (Louisa Van Velsor Whitman) के यहाँ हुआ था। उन्होंने कई तरह के काम किये, मसलन-पत्रकारिता, अध्यापकी तथा सरकारी बाबूगीरी आदि।

वह अन्तर्ज्ञानवाद (Transcendentalism) और यथार्थवाद के संक्रमण का एक हिस्सा थे। उनकी ख्याति का आधार-ग्रंथ है उनकी कविताओं का संकलन Leaves of Grass. ह्विटमैन अमेरिका के सबसे प्रभावशाली कवि माने जाते हैं। उन्हें बहुधा मुक्त छंद का जनक भी कहा जाता है। राजनीति में भी उनकी गहरी दिलचस्पी थी।

72 साल की उम्र में 26 मार्च, 1892 को कैमडेन (Camden), नयी जर्सी में उनका देहवसान हुआ।

ह्विटमैन पर केदारजी ने एक कविता लिखी है, जो नीचे प्रस्तुत है—

ह्विटमन बाबा

'ह्विटमन बाबा! मुझे तुम्हारी कविता प्रिय है; / इतनी प्रिय है, इतनी प्रिय है, इतनी प्रिय है,/ जितनी हमको धरती प्रिय है,/ और तुम्हारी दाढ़ी प्रिय है।/ क्या कविता है—फसलों का दाड़िम सोना है;/ बौराई आँखों का मद है; चितवन का जादू टोना है;/ बूढ़े बाबा! यह सोना, यह मद, यह जादू/ तुमको कैसे, कहाँ मिला यह मुझे बता दो;/ इन्हें प्राप्त कर लूँ; मैं भी कर लूँ कविताई।

11.10.1957

मैंने बाजी नहीं लगायी

मैंने बाजी नहीं लगायी उन चिड़ियों से , जो गाती हैं मीठे स्वर से,
मैंने अपनी होड़ लगायी है उड़ने से, और दूर तक मँडराने से,
श्येन, समुद्री-पक्षी, मेरा मन हरते हैं इतना ज्यादा
जितना ज्यादा, मैना और महोख नहीं मेरा मन हरते,
मैंने जाना नहीं कुहकना, स्वर थहराना वह चाहे जितना अच्छा हो,
मैंने जाना है बस उड़ना, आजादी से उड़ना उड़ना उड़ना
स्वेच्छा से, साहस से, बल से मुग्ध, मगन मन उड़ना!

❐

अनगिन, लुप्त, अगोचर कलियाँ

अनगिन, लुप्त, अगोचर कलियाँ,
बर्फीली पर्तों के नीचे, अन्धकार में,
एक एक घन इंच–आयताकार इंच में,
बीज-वाहिनी, परम अनूठी, ललित द्रुभांगी,
सूक्ष्म शरीरी और अजन्मी,
गर्भाशय के शिशुओं जैसी, गूढ़, लपेटी, सांद्र, प्रसुप्ता;
अरबों और महाशंखों की संख्याओं में बाट जोहतीं,
(जल में–थल में–सकल विश्व में–नभ में जहाँ चमकते तारे)
क्रमशः शक्ति लगाकर आगे आगे बढ़तीं, होती हुईं असंख्यों,
फिर भी पीछे बाट जोहती हैं उनसे भी अधिक असंख्यों!

❐

गरुण राज के चंगुल-सी जो नंगी-बूची परतदार हैं

गरुण राज के चंगुल-सी जो नंगी-बूची परतदार हैं,
नहीं क्षीण हैं, यह एकाकी गूढ़ डालियाँ;
यही कदाचित् किसी नये आये वसन्त के
किसी धूप-से-भरे दिवस में,
हरियाली से लद सकती हैं और छाँह से भर सकती हैं;
यही कदाचित् सेब और अंगूर आदि से
पौष्टिक फल भी दे सकती हैं,
यही कदाचित् सुदृढ़ अङ्ग भी वन-विटपों की बन सकती हैं,
और खुली स्वच्छंद हवा भी ताजी-ताजी दे सकती हैं,
यही प्रेम-प्रत्यय, गुलाब की तरह खिलाकर,
महर-महर महका सकती हैं!

❐

झर झर झरती मृदु फुहार से मैंने पूछा

झर झर झरती मृदु फुहार से मैंने पूछा
तू क्या है? तो उसने उत्तर दिया बताया :
मैं इस पृथ्वी की कविता हूँ, पावस का स्वर
मैं उठती अव्यक्त निरंतर अतल सिंधु से–
इस भूतल से, ऊर्ध्व गगन में चढ़ जाती हूँ,

जहाँ न जाने कैसे अस्थिर रूप ग्रहणकर,
पूर्ण बदलकर, फिर भी अपनी सत्ता रक्खे,
मैं आती नीचे नहलाने अनावृष्टि को,
कंकालों को, मिट्टी की प्यासी पर्तों को,
और दबे सोये अनजनमे सब बीजों को,
और हमेशा मैं निशि-वासर निज उद्‌गम को
फिर जीवन दे स्वच्छ बनाकर सुन्दर करती :
(गान जहाँ से उठता, उड़ता और घुमड़ता,
चाहे कोई सुने नहीं या सुने, प्रेम से
काम-काज अपनाकर पूरा, वहाँ पहुँचता।)

❐

नहीं कभी कुछ नष्ट हुआ है और न होगा

नहीं कभी कुछ नष्ट हुआ है और न होगा,
नहीं जन्म, तारुण्य, शरीर—नहीं जगत की कोई वस्तु;
जीवन नहीं, नहीं बल-विक्रम, और नहीं सब गोचर चीज;
दृश्यमान भी नहीं विफल-कृत,
बुद्धि नहीं चकराये तेरी देख देखकर बदले मंडल।
समय और आकाश विपुल हैं,
विपुल प्रकृति की चित्रपटी है।
जो तन शीतल, शिथिल, वृद्ध हैं,
जो अङ्गारे प्रथम अग्नि के चले गये हैं,
जो उजियाला मंद हो गया है आँखों में,
यथासमय फिर से लपटों से चमक उठेंगे;
अब पच्छिम में जो रवि डूबा वही—

प्रात में दुपहरिया में सदा निकलता और;
हिम-आहत मृत भू-खंडों पर नव-वसन्त फिर फिर आता है,
द्रुम-दल पल्लव अन्न फूल फल सब लाता है!

❐

मैं खड़ा हूँ चोंच पर जैसे गरुण के जो बली है

मैं खड़ा हूँ चोंच पर जैसे गरुण के जो बली है,
पूर्व में निस्सीम सागर नील-हर्षित मोहता है,
(कहीं कुछ भी नहीं—केवल व्योम वारिध है चतुर्दिक)
देखता हूँ मैं यहाँ से दूर पर जलयान डगमग,
फेन, ऊपर को उछलती और उमड़ी हुई लहरें,
व्यग्र हलचल, कुटिल कुंचित नीर के कुंतल हिमानी—
वायु-प्रेरित मुक्त उड़ते खोजते निर्दिष्ट तट को।

❐

युगों युगों से हरी घास उगती आयी है

युगों युगों से हरी घास उगती आयी है
युगों युगों से जल-फुहार पड़ती आई है,
युगों युगों से भूमि श्रमण करती आयी है।

❐

मैंने लोगों को बतियाते बहुत सुना है,

मैंने लोगों को बतियाते बहुत सुना है, आदि-अन्त की बातें करते,
किन्तु सृष्टि के आदि-अन्त की कोई बात नहीं करता मैं।
जैसा उपक्रम अधिक आज है वैसा पहले कभी नहीं था,
नहीं आज से अधिक वयस अथवा यौवन था,
और न होगा कभी आज से अधिक भविष्यत् में परिपाक,
नहीं आज से अधिक नरक या स्वर्ग यहाँ पर होगा।

प्रसव-प्रेरणा, प्रसव-प्रेरणा, प्रसव-प्रेरणा,
अखिल भुवन की प्रसव-प्रेरणा है गतिमान।

दुरालोकता से बाहर अभिमुख समवर्ती आगे ही बढ़ते जाते हैं,
सदा शक्ति-संपन्नशील संपत्तिवान होते जाते हैं,
सदा अधिक से अधिक अधिक होते जाते हैं,
सदा भोग-सम्भोग-रमण करते जाते हैं,
सदा संघटित होते होते एक रूप होते जाते हैं,
सदा एक-से-एक श्रेष्ठ होते जाते हैं,
सदा एक ही वंश और कुल जीवन का होते जाते हैं।

❐

गंधों से भरे हुए गेह और कमरे हैं,

गंधों से भरे हुए गेह और कमरे हैं, गंधों से गमक रहे आले हैं,
साँसों ही साँसों से परिमल को पीता हूँ, परिमल यह अच्छा है,
परिमल यह मदमय है, उन्मद यह कर देगा,
लेकिन नामुमकिन है यह मुझको मतवाला कर डाले!

गंध नहीं आकाशी मंडल है, मंडल में स्वाद नहीं मद का है,
गंधहीन मंडल है, यह मेरे मुख का है, प्यार मुझे इससे है,
जंगल में तट को मैं जाऊँगा और वहाँ वस्त्रहीन नंगा मैं होऊँगा,
मंडल से मिलने को मतवाला आतुर हूँ।

मेरी इन साँसों का सूक्ष्म धुआँ,
प्रतिध्वनियाँ, चल लहरें, अस्फुट रव, प्रेम-मूल, रश्मितार, अंकुश अंगूर लता,
श्वास और मेरी प्रश्वास-क्रिया, मेरा यह हृदय-गान,
मेरे इस फुप्फुस से वायु और शोसित का गमनागम,
हरे हरे पत्तों का—सूख गये पत्तों का—वेला का नासा-खुर
सागर की साँवली शिलाओं का—खलिहानी चारे का नासा-स्वर,
मारुत में व्याप्त हुआ मेरा गम्भीर घोष,
गिनती के गिने हुए हल्के से चुम्बन कुछ,
कभी-कभी मिल पायें आलिंगन,
बाहों में भर लेने वाला क्रम
नमनशील शाखों के बार बार हिलने से
पेड़ों पर धूप और छाया का खेलकूद।

एकाकी हर्ष कभी, भीड़-भरी सड़कों का हर्ष कभी,
खेतों का हर्ष कभी, पर्वतीय विचरण का हर्ष कभी;
स्वास्थ्य की सुखानुभूति, पूर्ण चन्द्र का प्रकम्प,
सूरज से मिलने को शय्या से उठा हुआ मेरा संगीत मधुर,
(इनकी भी जीवन में गणना है।)

क्या तुमने गिन डाले एकड़ हैं दस सौ से ज्यादा भी?
क्या तुमने नापा है धरती को ज्यादा?
क्या तुमने ज्यादा दिन सीखा है पढ़ना भी?
क्या तुमने कविताएँ पढ़ने पर अर्थों को पाकर भी,
ऐसे यश गौरव को जाना है।?
निशिवासर तुम मेरे साथ रहो प्राप्त करो उद्‌गम से कविताएँ,
प्राप्त करो सद्‌गुण में भू का भी, रवि का भी,
(अनगिन रवि हैं बाकी)
तब बासी दुखासी वस्तु नहीं भायेगी,
और किसी मुरदे की आँख से न देखोगे,
नहीं किताबों में कंकालों पर रीझोगे,
और नहीं मेरी आँखों से भी देखोगे,
नहीं देय भी मेरा तुम स्वीकार करोगे,
कान लगाये चारों ओर सुनोगे सब कुछ,
फिर अपनी आत्मा के माध्यम से छानोगे।

❐

घर की मजबूत सुरक्षित दीवारों से

घर की मजबूत सुरक्षित दीवारों से,
मजबूत सुरक्षित तालों के बंधन से,
चौकस चिपके जकड़े हुए किवाड़ों से,
अन्त समय अब मुझे, प्यार से,
बाहर आकर उतराने दो।
जाने दो—आगे बढ़ने दो मुझको चुपके;
कोमलता की चाभी से अब
मुझे खोलने दो वे ताले—
धीमे स्वर से
मुझे खोल लेने दो
आत्मा के जकड़े दरवाजे।
प्रबल तुम्हारा आकर्षण है मेरे मर्त्य शरीर।
प्रबल तुम्हारा आकर्षण है मेरे मधुर सनेह।

❐

जब दरवाजे के आँगन में पिछली बार बकाइन फूली

जब दरवाजे के आँगन में पिछली बार बकाइन फूली
और रात के पश्चिम नभ में एक बड़ा-सा तारा टूटा
मैंने उस पर शोक मनाया और मनाऊँगा आगे भी

लौट लौटकर नव वसन्त के आने पर भी।
लौट लौटकर आने वाले ओ वसन्त तुम,
अपने साथ त्रयी लाते हो मेरे खातिर;
नित्य फूलती हुई बकाइन, और टूटने वाला पश्चिम नभ का तारा,
यादें उसकी जो मुझको है अतिशय प्यारा।

ओ पच्छिम नभ के ओजस्वी टूटे तारे!
ओ निशि की काली छायाओ! ओ उदास आँसू से भीगी श्यामा रजनी!
ओ निष्ठुर-कर बाम विधाता मेरे बल को हरने वाले!
ओ मेरी असमर्थ दुखात्मा!
ओ मेरी आत्मा में व्यापे अंधकार के दुर्दम बादल!

खरिया से पोते बाड़ों के पास पुरानी खेत-कुटी के आगे वाली अँगनाई में,
हृदयाकार हरे पत्तों की लम्ब बकाइन उगी खड़ी है,
नाजुक फूल नुकीले उसके महक रहे हैं
उन फूलों की महक मुझे बेहद प्यारी है,
अद्‌भुत उसकी हर पत्ती है!
रंग-बिरंगे फूलों वाली, हृदयाकार हरे पत्तों की,
अँगनाई की इस झाड़ी से
मैंने फूल-लदी छोटी-सी टहनी तोड़ी!

एक छिपी संकोची चिड़िया
गान-मुखर है वहाँ जहाँ निर्जन दलदल है।
बड़ी दूर तजकर आबादी
आत्म-लीन संन्यासी जैसी,
एकाकी असहाय सारिका
खुद गाती है खुद सुनती है अपना गाना।
कंठ-गान है कंठ-रक्त-सा बहता,

प्राण-गान है मृत्यु-गान-सा बहता,
(मुझे ज्ञात है मेरी बहना!
यदि तुझको यह गान न मिलता और न तू गाने ही पाती
तब तू निश्चय ही मर जाती,
कभी न जीती।)

❐

मधु वसन्त के वक्षस्थल पर

मधु वसन्त के वक्षस्थल पर इस धरती के ऊपर चलकर,
शहरों से, गलियों से और वनों से होकर–
जहाँ वनफ्शे कुछ दिन पहले मिट्टी के मलवे से झाँके–
गलियों के दायें-बायें खेतों में उपजी हुई घास से होकर,
फैली सीमा-हीन घास से होकर,
सोन-तोमरी पीले गेहूँ के समीप से होकर,
काली भूरे खेतों की पर्तों से ऊपर
उभरे-निकले दाने-दाने के समीप से होकर,
श्वेत गुलाबी फूले फूलों वाले सेबों के बागों से होकर,
शव को लेकर, उसे कब्र में रखने के हित,
एक जनाजा यात्रा करता है निशि-वासर!

❐

मैं तुम्हारे पास होऊँ

मैं तुम्हारे पास होऊँ इसलिए बहुधा
चुपचाप चला आता हूँ वहाँ पर तुम हो जहाँ,
साथ चलने में तुम्हारे या पास बैठने में,
या तुम्हारे साथ कमरे में रहने में,
आग बिजली की तुम्हारे लिए जो मेरे हृदय में भभक उठती है
रंच भी उसको नहीं तुम जानते हो।

❐

वह चाहे सब के पीछे हो,

वह चाहे सब के पीछे हो, पर सदैव–सा अनत सुदृढ़ वह,
प्रखर प्रवाहों में भी अविकल–
दुर्निवार मारक मन–मंथन में भी अविकल,
माथा ऊँचा किये खड़ा है
भुज–बलीन जो कर्णधार है।

❐

वसंत का प्रथम डैंडेलियन

शीत के पलायन पर
ऐसा वह स्वच्छ, सरल, सुघर हुआ,
जैसे वह फैशन, व्यवसाय, राजनीतिक उपाय से नहीं हुआ,
अपने ही ताप से शस्य-श्याम कोने से
निर्विकार, हेमवर्ण, निष्कलंक, ऊषा-सा,—
पहला फूल फूला हुआ अबकी वसन्त का—
दिखलाता है अपना डैंडेलियन मुखड़ा।

❐

स्वर्ण, लोहित, बैंगनी, हीरक, हरा, मृगदेहिया

स्वर्ण, लोहित, बैंगनी, हीरक, हरा, मृगदेहिया,
ये रंग हैं, इनसे विपुल विस्तार भू का रँग गया है
और नाना रूपधारी तेजधारी यह प्रकृति भी रँग गयी है
यह उजाला, यह पवन की अब इन्हीं से रँग गया है;
वे अनेकों रंग अब तक जो अजाने हो रहे हैं
अब प्रकट होकर असीमित हो गये हैं
नहीं केवल पश्चिमी आकाश में ही—
अपितु उत्तर और दक्खिन, सब कहीं—
वह मध्य-नभ में छा गये हैं;
मूक छायाएँ जहाँ भी जो मिली हैं—
शुद्ध भास्वर रंग उनसे अब वहाँ पर
प्राणपण से लड़ रहे हैं।

❐

मैंने लुसियाना में देखा

मैंने लुसियाना में देखा बाढ़ छोड़ते हुए एक सिंदूर वृक्ष को
अदग अकेला खड़ा और शैवाल झुकाये शाखाओं से,
बिना किसी संगी-साथी के,
श्याम-हरित अपने पातों से सुख सरसाये,
अपना रूप अभद्र अनम्र, सतेज बनाये,
उसे देखते ही मैंने अपने को देखा;
और अचम्भित हुआ अधिक मैं यही सोचकर :
मैं तो नहीं खड़ा रह सकता फिर यह कैसे–
सब अपने सुख-पात पसारे,
बिना मित्र अथवा प्रेमी के,
वहाँ अकेला खड़ा हुआ है;
इसी बीच तब मैंने उसकी पल्लववसना छोटी एक प्रशाखा तोड़ी,
और उसे शैवाल लपेटे मैं घर लाया–
कमरे में आँखों के सम्मुख मैंने रक्खा;
नहीं, जरा भी नहीं कि वह मेरे प्यारे मित्रों की मुझको याद दिलाये
(क्योंकि आजकल वही याद आते हैं मुझको और नहीं कुछ मन में आता :)
यह शाखा मुझको लगती है बड़ी अनोखी
और बाध्य करती है मुझको पुरुष-प्रेम पर फिर मैं सोचूँ;
इस सब पर भी, यद्यपि अब भी
लुसियाना में, चौड़ी-चपटी महामही पर,
एकाकी सप्राण खड़ा सिंदूर वृक्ष वह दमक रहा है,
श्याम-हरित अपने पातों से सुख सरसाये
आजीवन रह बिना मित्र अथवा प्रेमी के
मैं तो नहीं खड़ा रह सकता उसके जैसा।

❐

क्यों आये हो और कहाँ से तुम आये हो?

क्यों आये हो और कहाँ से तुम आये हो?
हमको मालूम नहीं कहाँ से हम आये हैं (यह उत्तर था)
हमको मालूम है यह केवल हम सब साथ चले हैं,
मन्द गमन कर रहे पिछड़ते—अन्त समय बिन डूबे—
हम आ गये यहाँ हैं,
वर्षा की जाती फुहार की अन्तिम बूँदें होकर!

❐

संतरणशील जलयान

उर पर—असीम इस सागर पर,
संतरणशील जलयान एक, सब पाल तान,
शशि-पालों को भी लिये साथ,
जैसे-जैसे गति सानुभाव से ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता है
वैसे-वैसे उसका केतन त्यों-त्यों उड़ता ऊपर को है
नीचे जयेच्छु लहरें सहयोगी बलखातीं बल देती हैं
भास्वर-वर्तुल-फेनिल-प्रकम्प का वलय बनाये रहती हैं!

❐

आत्मगीत का 21वाँ भाग

मैं शरीर का–मैं आत्मा का कवि हूँ,
मेरे पास स्वर्ग के सुख हैं, मेरे पास नरक के दुख हैं,
मैं सुख को आत्मीय बनाकर परिपोषण करता हूँ उनका,
मैं दुख को नव वाणी देकर अनुवादित करता हूँ उनको।

मैं नारी का उतना कवि हूँ जितना नर का,
मैं कहता हूँ नारी होना बड़ी बात है वैसे जैसे नर होना है,
मैं कहता हूँ पुरुषों की जननी होने से बढ़कर कोई बात नहीं है।

मैं गुन गाता हूँ विकास के और गर्व के,
हम पहले ही खेल चुके हैं खेल बहुत ही ओछेपन के,
मैं बतलाता हूँ विकास ही तो आकृति है!

क्या तुम सबसे बढ़े-चढ़े हो? प्रेसीडेन्ट हो?
यह तो कोई बात नहीं है, उनमें से हर एक वहाँ पर पहुँचेगा ही,
और वहाँ से गुजरेगा ही।

मैं वह हूँ जो मृदु गहराती हुई निशा के साथ भ्रमण करता रहता है
मैं पुकारता हूँ वसुधा को और सिंधु को–
जो अधजकड़े पड़े हुए हैं नैश-पाश में।
दक्षिण-पवन प्रसेवित रजनी–
मणि-मालाओं से आभूषित मनहर रजनी!
अब भी इंगित करती रजनी–

उन्मद, नग्न, ग्रीष्म की रजनी!
निरावरण उर से अपने तू मुझे लगा ले,
अधिक निकट से अधिक निकट कर—
सम्मोहक परिपालक रजनी! आलिंगन-आबद्ध मुझे कर!

शीत-प्रश्वासी ओ विषयातुर युवती-वसुधा!
निद्रित विटपों-तरलायित तरुओं की वसुधा!
सिंदूरी सूर्यास्त-प्रथक-कृत विह्वल वसुधा!
कूहाच्छन्न मेरु की चोटी वाली वसुधा!
पूर्णचन्द्र की नील-विचुम्बित कांचन छवि-वर्णन की वसुधा!
छवि-छाया से नदियों का तन चित्रित करने वाली वसुधा!
स्वच्छतोय धूसर जलदों को मेरे लिए रुचिरतर
और विमलतर करने वाली वसुधा!
दूर-दूर तक गरुणपंख से उड़ने वाली
और झपटने वाली वसुधा!—
अब कर-टेके बैठी वसुधा!
सेब-सुमन से फूली, श्री-सम्पन्न हुई ओ वसुधा!
अब तेरा प्रेमी आता है, मंद मधुर मुसका तू!!

❐

आत्मगीत का 22वाँ भाग

मैं तुझ पर भी न्यौछावर होता हूँ सागर।
खूब समझता हूँ मैं तुझको : मुझे बुलाता है तू तट से
उठा उठाकर वक्र उँगलियाँ :
और हटेगा नहीं बिना ले चले मुझे तू :
तेरी इच्छा है कि आज हम लपटें-लिपटें दोनों,

अच्छा तो मैं वस्त्र उतारूँ और दूर ले चले मुझे तू जल्दी,
वहाँ जहाँ से भूमि न गोचर होवे,
गुदगुद आसन पर मुझको बैठाना,
लहरों के झूले पर मुझको खूब झुलाना
जिससे मेरी आँखों में निंदिया बौराये,
और मुझे फिर कामुक जल से यहाँ पटकना,
मैं उपकार चुका सकता हूँ तेरा!

❐

सुघर, कुठार, विवर्ण, दिगम्बर

सुघर, कुठार, विवर्ण, दिगम्बर,
शीश तुम्हारे भूमिगर्भ से बाहर निकला,
मांस तुम्हारा काठ-अस्थि है लोहा,
अंग तुम्हारा एक—ओठ भी एक अकेला,
फलक तुम्हारा अरुण आम के उगे पात-सा भूरा-नीला,
घिरे घास से—पड़े घास पर—
झुके-झुकाये तुम करते विश्राम।

❐

ऊहापोह-विवाद नहीं करती है वसुधा

ऊहापोह-विवाद नहीं करती है वसुधा,
करुणा-पात्र, कृपा की याचक, कब बनती है वसुधा,
कोई नहीं प्रबंध-कभी करती है वसुधा,
जल्दी करती नहीं, नहीं चिल्लाती वसुधा,
धमकी देती नहीं, नहीं वादा करती है वसुधा,

भेदभाव या विनय नहीं करती है वसुधा,
असफल होती नहीं कल्पना में भी वसुधा,
गोपन, अस्वीकार नहीं कुछ भी करती है वसुधा,
बंद नहीं पट आगन्तुक को करती वसुधा!

❐

गायक को है गीत

गायक को है गीत—उलटकर गीत उसी को शतशः मिलता,
शिक्षक को है ज्ञान—उलटकर ज्ञान उसी को शतशः मिलता,
घातक को है घात—उलटकर घात उसी को शतशः मिलता,
तस्कर को है हरण—उलटकर हरण उसी को शतशः मिलता,
प्रेमी को है प्रेम—उलटकर प्रेम उसी को शतशः मिलता,
दानी को है दान—उलटकर दान उसी को शतशः मिलता,
दान नहीं असफल हो सकता,
वक्ता को वक्तव्य, नटी-नट को अभिनय है—
किन्तु नहीं वह दर्शक को है,
अपनी नेकी और बड़ाई अथवा अपने किये इशारे
जो करता है वही समझता—कोई दूजा नहीं समझता!

❐

निश्चयपूर्वक शपथ-ग्रहणकर मैं कहता हूँ

निश्चयपूर्वक शपथ-ग्रहणकर मैं कहता हूँ :
वसुधा उसके लिये पूर्ण है जो नर-नारी स्वयं पूर्ण है,
वसुधा उसके लिये मग्न है जो नर-नारी स्वयं मग्न है,
वसुधा उसके लिये दंश है जो नर-नारी स्वयं दंश है।

❐

अलेक्सी सुरकोव

रूसी कवि अलेक्सी सुरकोव का जन्म सेरेद्नेवो [SEREDNEVO, जिसे अब रिबन्सिकी (RYBINSKY) कहते हैं।] के एक गाँव में सन् 1899 में एक ग़रीब किसान परिवार में हुआ था। उनकी मृत्यु 1983 में हुई थी।

सुरकोव एक कवि होने के साथ-साथ योद्धा भी थे। यह रूसी गृह-युद्ध में शरीक होने के साथ-साथ, द्वितीय विश्वयुद्ध में भी शमिल हुए थे। सुरकोव की कविताएँ और उनके गीत सन् 1930 से ही प्रकाशित होने शुरू हो गये थे। सुरकोव स्वयं को अपनी पीढ़ी के उन लाखों लोगों के खालिस प्रतिनिधि के रूप में मानते थे, जो अधिकार-विहीन थे, अकिंचन थे, जिन्होंने अक्तूबर क्रान्ति को साकार किया था और जो साम्यवाद के निर्माता थे। वह जन पक्षधरता और जनतान्त्रिक सिद्धान्तों में आस्था रखनेवाले कवि थे। ये तत्त्व उनकी कविताओं में कलात्मक ढंग से प्रस्तुत हुए हैं। साहित्य में कलावादियों, दम्भी और सौन्दर्यवादी ताकतों से उन्होंने लगातार मोर्चा लिया। फन्तासी के मोहक रोमाण्टिकवाद का तिरस्कार करते हुए ज़िन्दगी की कड़वी सच्चाइयों पर भरोसा किया।

युद्ध के दौरान लिखी गयीं उनकी कविताएँ ज्यादा जानी और सराही गयीं।

सुरकोव 1944 से 1946 तक लिटरेरी गज़ट और 1945 से 1953 तक ओगोन्योक (OGONYOK) के सम्पादक रहे। 1953 से 1959 तक सोवियत लेखक संघ के पहले सचिव के रूप में काम किया। 1969 में इन्हें 'हीरो ऑव सोशलिस्ट एफर्ट' से सम्मानित किया गया। 1962 से मृत्युपर्यन्त अर्थात् 1983 तक वह 'द कन्साइज इनसाइक्लोपीडिया ऑव लिटेरचर' के भी सम्पादक रहे। सुरकोव सोवियत शान्ति परिषद् के स्थायी सदस्य भी थे। आजीवन, इनकी उपस्थिति सोवियत संघ के साहित्य-जगत् में एक महत्त्वपूर्ण हस्ती के रूप में दर्ज़ रही।

शांति

उस भारत की विस्तृत विशाल गर्वोन्नत भू पर सभी ओर
कलकत्ता हो कि अजन्ता हो या सुदूर का बंगलोर
जब भी हमने अभिवादन में कह ''मित्र मीर'' उर प्रकटाया
तब ही हमने अभिवादन में ''हे मित्र शांति'' उत्तर पाया

बुनकर किसान जन, खनिक वृन्द आये अपार थे दर्शनार्थ
रक्ताभ नेत्र थे समुत्सुक्य आनन प्रफुल्ल थे स्वागतार्थ
सस्वर सप्रेम सुन शांति-शब्द सबके प्रदीप्त हो गये हृदय
हम हुए मित्र वे हुए बंधु ऐसा सनेह हो गया उदय

हमसे बोले : हम भी तुमसे हैं मित्र-भावना के प्रतीक
निष्कलुष, स्वप्नमय, आशामय, वाणी उनकी थी मांगलीक
भारत का परिचय प्रभा-पूर्ण वे रहे बताते हृदय खोल
होगा उनका स्वर्णिम भविष्य दिन-दिन उनके श्रम से अमोल

जब जहाँ हुए जलसे जुलूस वे खड़े मिले हमको करोड़
उल्लसित आँख, प्रज्ज्वलित आत्म वे शक्ति साम्य से लिये होड़

गाते गुमान से गीत-गान सस्वर सओज घन के समान
मानव को रण से मिले त्राण सर्वत्र शांति सुख हो महान

वह प्रवहमान स्वर-सिन्धु-गान, संवर्धमान वह भूमि-रोर
ऊपर उठता बढ़ता अघोर छूकर ढँककर अम्बरी छोर

कर रहा हमें था मंत्र-मुग्ध तन्मय तरंग से बार-बार
वह ऋषियों का आत्मिक प्रकाश गुरु गर्जन करता था अपार

मेरे मित्रो! जब शिखर-पार ऊपर उड़कर तुम गगन-भेद
रवि-किरनों में होकर निमग्न नीचे उतरोगे अब अक्लेद
तब तुम्हें मिलेगा कान्तिवान वह ज्ञानवान भारत महान
तब स्वागतार्थ बाहें पसार बंधुत्व-भाव से भरे प्राण

उस महादेश के बनो मित्र, हों रूस और भारत अभिन्न
फिर समय, शत्रु, या विधि-विधान कर सके न मैत्री कभी छिन्न
रूसी भाषा में कहो ''मीर'' मेरे मित्रो फिर बार-बार
हिन्दी में उत्तर सुनो ''शांति'' कल-कल कंठों से बार-बार

❐

परम अपावन पथ पर चलकर

परम अपावन पथ पर चलकर,
सारी दुनिया के आँखों में दोषी होंगे।
डालर नहीं,
न झूठी बातें,
और न ऐटम बम की घातें,
उनकी रक्षा कर पायेंगे;
वे जनता के क्रोधानल में जल जायेंगे।

❐

आग उगलती तोपें गरजें इससे पहले

आग उगलती तोपें गरजें इससे पहले,
ऐटम बम भी सर पर बरसे इससे पहले,
सच्चे लोगो! तुम अपनी आवाज उठाओ,
जन-विध्वंसक हत्यारों की पोल दिखाओ।

❐

ऐसा कोई गेह नहीं है

ऐसा कोई गेह नहीं है,
बालक, अथवा नीड़ नहीं है,
जो न भग्न हो,
जो न ध्वस्त हो,
रक्तपात से जो न त्रस्त हो।
ऐसे में फिर कैसे कोई–
कोमल दिल का रूस निवासी,
ऐसा सत्यानाश निहारे,
प्यारा पंछी मरता देखे,
पत्थर-सा निष्ठुर हो जाये,
इससे व्याकुल होकर बोला
कुर्स्क निवासी एक सुरँगिया :

''मैं कैसे उस दुख को मेटूँ
जो व्यापारिक
रण-लिप्सा से पैदा होता?
मेरा मत है,
उन तरुओं पर
जिन तरुओं पर
पहले सुन्दर नीड़ बने थे,
नीड़ नये निर्माण करें अब सभी सुरँगिया।''
ऐसी कोई नहीं कुल्हाड़ी
नहीं बजी जो,
काठ काटते-कटते में जो
उड़ी चिप्पियाँ
फैली वहाँ-जहाँ फैला था
भू पर लोहू।
कोई आरा नहीं बचा जो नहीं चला हो,
चीर चले
सब आरे चलकर
झुलसी लकड़ी,
कीचड़ के खुदने पर निकलीं
मुरचा खाई ललखर कीलें।
धनागार के सिक्कों जैसा,
सूरज भी चमचम चक्रों-सा,
भू पर त्यागे–
भालों की नोकों पर नाचा।
आज सभी हम कारीगर हैं,
कारीगर के औजारों को
कर में लेने में हमको आनंद अमित है!

❐

संसार का हृदय

अंधकार में जल-वर्षा के शर चलते हैं,
कोमल-तन दुर्बल दूर्वा के दल छिलते हैं;
नैश विहंगम स्वर करता है, उड़ पड़ता है,
निद्रित उपवन कम्पित होकर जग पड़ता है;
मेरी आँखें खुल जाती हैं, तंद्रा भगती,
मेरे उर से गीत-निरूपित लहरी उठती।

वर्षा थमती बादल फटता, गुंठन खुलता,
तारक-मंडित नभ का मंडल छवि से सजता,
मैं सब प्यारी पावन बातें गुन गुन गुनता,
गाता गीत, उन्हें गा गाकर घोषित करता,

वर्षा बीती, बूँद न पड़ती, दृश्य झलकता,
मैं निज जीवन और हृदय-घन झिलमिल लखता;
मैं कर बंद कपाट नयन के देखा करता :
प्यारा मास्को निद्रा में है डूबा रहता।

बेलोरसिया का पंकिल-थल अवगत होता,
इंद्रिय-गोचर ऊँचा-नीचा भूतल होता,
मास्को के पटलों से व्यापक दर्शन होता,
चारों ओर दिशाओं का अवगाहन होता।

मेरा मास्को! जग की आशा, अति प्यारा है,
मंगल-थल का एक प्रदीपित ध्रुव-तारा है!

मास्को सोता है ग्रीष्म की निशि से लिपटा,
लेकिन वह कमरे में जगता रहता चलता—
सूर्योदय की आभा से आवेष्टित रहता
जो मेरे स्वर को पर देता गर्वित करता।

कैसे पाऊँ शब्द, कहाँ से मैं ले आऊँ,
जन-जनता के प्रिय नेता की बात सुनाऊँ!
कैसे कहूँ कि निद्रा परिहर कैसे रहता
नेता निशि में जागृत अथकित कैसे रहता!

दिन का जब कोलाहल कोई नहीं उमड़ता,
रवि-कर क्रमलिन की मीनारें नहीं परसता,
तब माँ-धरती स्तालिन को सब भेद बताती,
मानव-मन की इच्छाओं को है प्रकटाती।

भाग्य हमारे और हमारी अभिलाषाएँ
स्तालिन के उर में रहती हैं नीड़ बनाये।
वह सुनता है घास-प्रदेशी कल की ध्वनियाँ,
वह लखता है अन्न-उपज की अनुपम निधियाँ!

जन-स्वप्नों को जन-आशा को, जन-यंत्र को
स्तालिन उर में पालन करता तज विघ्नों को।
शुद्ध, विवेकी, निर्मल उसका भाषण होता।
हम को, युग को भाषण से आश्वासन होता!

निशि जाती है, पौ फटती है, दिन आता है,
दूर वहाँ मास्को-सरिता से, मुसकाता है।
सत्वर कुहुकेंगी फैक्टरियाँ, स्वर सँवरेगा,
देश-दिशाओं की सीमाओं को भर लेगा।

चौड़ी है, फहरी है मेरी देश-पताका,
मेरी भू के चारु चरण हैं प्राण-प्रदाता।
उज्ज्वल नव-दिन द्वारे आया, मन को भाया,
जय का, श्रम का, मुद-मंगल का नव दिन आया!

❐

एज़रा पाउंड

एज़रा पाउण्ड का पूरा नाम–एज़रा वेस्टन लूमिस पाउण्ड (Ezra Weston Loomis Pound) था। यह एक अमेरिकन कवि, बौद्धिक और समीक्षक थे। 20वीं शती की पहली अर्द्ध शताब्दी के आधुनिकतावादी आन्दोलन की महत्त्वपूर्ण हस्तियों में से यह एक थे। कविता में आधुनिकतावादी सौंदर्यबोध के परिभाषाकार और उसके प्रवक्ता के रूप में इनकी ख्याति है। यह विम्बवाद के प्रबल समर्थक कवि थे। पाउण्ड की संगीत में भी गहरी पैठ थी।

एज़रा पाउण्ड का जन्म 30 अक्टूबर, 1885 को संयुक्त राज्य अमेरिका के इदाहो राज्यक्षेत्र (Idaho Territory) के हैली (Hailey) में होमर लूमिस (Homer Luomis) और इसाबेल वेस्टन पाउण्ड (Isabel Weston Pound) के यहाँ हुआ था।

एज़रा पाउण्ड ने अनेक देशों की यात्राएँ की और वहाँ रहे भी। इनकी मृत्यु 1 नवम्बर, 1972 को 87 वर्ष की अवस्था में इटली के वेनिस शहर में हुई।

उनकी कृतियाँ हैं–A Lume Spento, Homage to Sextus Propertius, Hugh Selwyn Mauberley, The Pisan Cantos, Secrets of The Federal Reserve, तथा Cantos आदि।

पाउण्ड एक अनुवादक भी थे। चीनी, जापानी, ग्रीक तथा लैटिन कविता को अंग्रेजी पाठकों तक पहुँचाने में उनकी अग्रणी भूमिका रही है।

यीट्स, इलियट, राबर्ट फ्रास्ट, डी० एच० लारेंस, हेमिंग्वे आदि को आगे बढ़ाने में पाउण्ड की महती भूमिका थी।

पाउण्ड की कविताओं ने एलेन गिन्सबर्ग तथा अन्य वीट्स कवियों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

मैं, हाँ मैं, हूँ वह

मैं, हाँ मैं, हूँ वह
जो सड़कें जानता है
आकाश की,
और मेरा शरीर है
वहाँ की हवा
मैं देख चुका हूँ
जीवन की सुन्दरी,
मैं, हाँ मैं,
प्रभात के पखेरुओं के
साथ उड़ने वाला।
हरा और भूरा है
उसका वस्त्र
हवा के साथ उड़ रहा।
मैं, हाँ मैं, हूँ वह
जो सड़कें जानता है
आकाश की,
और मेरा शरीर है
वहाँ की हवा।
'मानस एनियम पिन्सिट'
मेरी लेखनी है
मेरा हाथ

कि वह लिखे स्वीकारने योग्य शब्द
कि मेरा मुँह शुद्ध संगीत गाये!
किसका है ऐसा मुँह
कि इसे ग्रहण करे
कूमी के कमल का गायन,
मैं, हाँ मैं, हूँ वह
जो सड़कें जानता है
आकाश की
और मेरा शरीर है
वहाँ की हवा।
मैं लपट हूँ
सूर्य में आग उठी,
मैं, हाँ मैं,
प्रभात के पखेरुओं के
साथ उड़ने वाली।
चन्द्रमा है मेरे ललाट पर,
हवाएँ हैं मेरे ओठों पर
चन्द्रमा है एक बड़ा मोती
नीलम के जल में,
बहता पानी
ठंढा लगता है
मेरी अँगुलियों को।
मैं, हाँ मैं, हूँ वह
जो सड़कें जानता है
आकाश की
और मेरा शरीर है
वहाँ की हवा।

❐

आओ, हम यहाँ

आओ, हम यहाँ
स्थापित करें अनुपम मैत्री,
संकट काट चुके हैं यहाँ
आग के हाथ,
शरद के स्वप्न,
और प्रेम का हरा गुलाब
यही है वह आश्चर्य की जगह;
जहाँ यह रहे हैं,
उपयुक्त, योग्य है यह जगह
पवित्र है यह धरती!

❐

और दिन हैं

और दिन हैं
कि पूरे मरे नहीं हैं
और निशा है
कि पूरी मरी नहीं हैं
और जीवन है
कि खेत के चूहे की तरह
मर रहा है
बगैर हिलाये हुए घास

❐

कैसे यह शोभा

कैसे यह शोभा
अब मैं चला जाऊँगा बहुत दूर
मुझे छाप लेगी फिर से आकर
और घेर लेगी मेरा मस्तिष्क!

कैसे यह घंटे,
जब बुढ़ा जायेंगे हम दोनों,
बनकर आयेंगे,
नलिन का ज्वार,
और हमें डुबा लेंगे!

❐

परिवार की हालत खराब हो रही थी

परिवार की हालत खराब हो रही थी,
और इस वजह से छोटी औरिलिया,
जो हँसती चली आई थी अठारह वसन्तों तक
अब बरदाश्त कर रही है फिडीप्पस के वृद्ध आलिंगन को।

❐

पेड़ प्रविष्ट हो गया है मेरे हाथों में

पेड़ प्रविष्ट हो गया है मेरे हाथों में,
गूदा चढ़ आया है मेरी भुजाओं में,
पेड़ उग आया है मेरे सीने में –
अधोमुख,
डालियाँ उग आयी हैं मुझसे बाहर, भुजाओं के समान।
पेड़ तुम हो,
कोई तुम हो,
तुम हो गुलबनफ्शे के फूल जिनके ऊपर हवा है,
एक बच्ची–इतनी ऊँची–तुम हो,
औब सब यह मूर्खता है संसार के लिए।

❐

ऐसी ठंढी

ऐसी ठंढी जैसे घाटी की कोई के पीले भीगे पल्लव
वह लेटी थी मेरे पास बगल में तड़के

❐

इरिन्ना है एक आदर्श दम्पति

इरिन्ना है एक आदर्श दम्पति,
कि उसके बच्चे नहीं जान सके उसके व्यभिचारों को।
लालेज भी है एक आदर्श दम्पति,
कि उसकी सन्तान है मोटी और खुश!

❐

ओ सफेद रेशम के पंखे

ओ सफेद रेशम के पंखे,
जैसे दूर्वादल पर स्वच्छ तुषार,
तुम भी त्यक्त पड़े हो।

❐

मेरे बगल में चलता है काला चीता

मेरे बगल में चलता है काला चीता,
और मेरी उँगलियों पर
वहाँ तैरती हैं

पंखुरियों के समान लपटें।
दुग्ध-धवल लड़कियाँ
नहीं झुकतीं सदाबहार पेड़ों से
और उनका हिम-सफेद चीता
ताकता है हमारा अतापता पाने के लिए।

❐

अवश्य, वह यहाँ से होकर निकल गई है

अवश्य, वह यहाँ से होकर निकल गई है
और असीसती गई है अनाज के पूरों को
बड़े बागीचों को, घास-भूसे के अरम्बों को और प्रशान्त खेतों को,
तमाम भूरी-पीली और गहरी लाल पत्तियों को
अवश्य, वह निकल गयी है अपनी भुजाओं में भरे पोस्ते के फूल
सांध्य-तारा की छाया में छिपा लेने वाले कोहरे से होकर
और असीसती गयी है संसार को और चली गयी है
बिना किसी मनुष्य के जाने।

मंद अनमने चरन और थकी आँखों से
और आ रही नींद से भार भरी पलकों से,
आहों की उठान से उठाये ऊपर छोटे कुचों को,
वह निकल गयी है जैसे निकल जाएँ छायाएँ मेड़ों के बीच से
जब धरती स्वप्न देख रही थी
और मैं ही अकेला अवगत था
उसके मुलायम बालों से उड़ आयी मंद सुगंध से।

निर्वाक सपनों की शांति में डूबा पड़ा था धरातल,
न कोई स्वर मुखर था पावन प्रशाखाओं में
न कोई शोक-संगीत था उसके झरनों में,
केवल मैंने देखी थी उसकी भवों में छाया
केवल मैंने जाना था उसे वार्षिकी हत्या के लिए
और रोया था मैं, और रोता हूँ मैं
उसके फिर से न आने तक।

❐

याकूब कोलास

इस बेलारूसी कवि और लेखक (Yakub Kolas, Jakub Kolas) का वास्तविक नाम था–कैन्सटैण्ट्सिन मित्सकेविच (Kanstantsin Mitskievich)। इनका जन्म 3 नवम्बर, 1882 को हुआ था। 1926 में इन्हें बेलारूस के लोगों के कवि के रूप में स्वीकारा गया। 1928 में बेला रूसियन एकेडमी ऑफ साइन्स के सदस्य बने। 1929 में इसके उपाध्यक्ष बने।

इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं–Songs of Captivity (1908), Songs of Grief (1910) A New Land (1923), Simon the Musician (1925) The Fisherman Hut (1947) तथा एक त्रयी At a Cross roads (1954)

याकूब कोलास को 1946 तथा 1949 में सोवियत रूस के राज्य सम्मान से सम्मानित किया गया।

इनकी मृत्यु 13 अगस्त, 1956 को बेलारूस के मिन्स्क (Minsk) में हुई।

आओ

आओ,
लेकिन दुख देने को,
और सताने को मत आओ।
लाओ,
जनता को मुद-मंगल,
नव जीवन, नव आशा लाओ।

❐

कोई उनको जान न पाया

कोई उनको जान न पाया,
उनके दुख को बाँट न पाया।
केवल शोक-पवन ने गाया,
मारग ने भी धूल उड़ाया।

❐

अब लोगों के घर अपने हैं

अब लोगों के घर अपने हैं,
अब उनकी धरती उनकी है।
मैं हार्दिक स्वर से कहता हूँ :
मेरे देश! फलो-फूलो तुम
सबको सम्पति नित्य लुटाओ।

❐

निकोला वाप्त्सरोव

पूरा नाम–निकोला यॉन्कोव वाप्त्सरोव (Nikola Yonkov Vaptsarov)। जन्म 7 दिसम्बर, 1909 को बल्गेरिया के बैन्स्को (Bansko) में। वारना (Varna) के नेबेल मशीनरी स्कूल (अब नेवेल अकादमी) में प्रशिक्षित यह ताज़िन्दगी मशीनिस्ट के रूप में काम करते रहे। खाली समय में कविताएँ लिखते थे। इस बल्गेरियन कवि की पहचान एक कवि, कम्युनिस्ट और क्रांतिकारी के रूप में है। सरकार के विरुद्ध भूमिगत कम्युनिस्ट गतिविधियों के कारण इन्हें गिरफ्तार किया गया और 23 जुलाई, 1942 को महज 32 साल की उम्र में मौत के घाट उतार दिया गया।

उनकी शहादत को सम्मान देते हुए 1949 में बल्गेरियन नेवेल अकादमी का नाम निकोला वाप्त्सरोव नेवेल अकादमी कर दिया गया। मरणोपरांत अन्तर्राष्ट्रीय शांति पुरस्कार से भी उन्हें सम्मानित किया गया। उनकी इकलौती कविता पुस्तक है–1940 में प्रकाशित मोटरिंग वर्सेस (Motoring Verses) जिसका लगभग 100 भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। केदारजी ने इनपर एक कविता लिखी है, जो नीचे प्रस्तुत की जा रही है–

निकोला वाप्त्सरोव के प्रति

'अंग्रेजी के माध्यम द्वारा, / तुम पुस्तक में छपकर आये।/ स्वागत में हम लोग तुम्हारे,/ खड़े हुए हैं, बाँह पसारे !!/ यद्यपि तुम परलोक सिधारे!/ हमने तुमको/ तुमने हमको, / पुस्तक के ही/ द्वारा देखा/ जी भर देखा!/ कभी न भूलेंगे हम तुमको/ कभी न भूलोगे तुम हमको!!/ तुमने हमको काव्य सुनाया/ इंसानी छंदों में गाया।/ जीने का अभिलाष जगाया।, तुमने हमको मित्र बनाया।/ अब हम दोनों,/ दूर देश के दोनों वासी,/ एक हुए हैं।/ मेरा भारत, / देश तुम्हारा/ अब तो दोनों एक हुए हैं!!/, यह रचनाएँ हमको प्रिय हैं,/ उतनी जितनी तुमको प्रिय हैं!।/ इनको गाकर हम कहते हैं : / यह सीना है आशावादी!/ यह सीना तो है फौलादी!!/ इस सीने को–/ तोड़ न सकती कोई गोली/ खूनी प्यासी कोई गोली!!

24.10.1955

हमने बल से बाँहें जकड़ीं

हमने बल से बाँहें जकड़ीं,
जैसे हम आलिंगन रत हों।
मेरे दिल से लोहू टपका,
तब तुम लुढ़के! फिर क्या होता?–
एक व्यक्ति ही मुँहकी खाता,
एक व्यक्ति ही जीता गाता,
और पराजित व्यक्ति तुम्हीं हो।

❐

मैं निशिदिन साँसें लेता हूँ

मैं निशिदिन साँसें लेता हूँ,
काम यहाँ करता जीता हूँ,
मैं अपनी कविता लिखता हूँ
(सर्वोत्तम इसको देता हूँ)।
जीवन मुझको, मैं जीवन को
वक्र दृष्टि से हेरा करते।
मैं जीवन से पूरे बल से
लोहा लेता लड़ते-लड़ते
जीवन मुझसे, मैं जीवन से
आपस में झगड़ा करते हैं,
किन्तु नहीं निष्कर्ष निकालो–
मैं जीवन से नफरत करता।
नहीं, नहीं, मैं इस जीवन को,

जिसके पंजे फौलादी हैं–
तीक्ष्ण, कुटिल हैं, आघाती हैं,
–चाहे मेरा सर्वनाश हो–
प्यार सहित अब भी पालूँगा।

❐

एक कलघर

एक कलघर।
और ऊपर तोमतम बादल धुएँ के।
लोग–सीधे और सादे,
जिन्दगी–कटु और ऊबी।
दूर चरबी को लपेटे जिन्दगी परदा पड़ी है–
एक बर्बर श्वान दाँतों को निपोरे भूँकता है।
तुम करो संघर्ष अथकित,
दृढ़ रहो,
जमकर लड़ो,
टक्कर लगाओ।
क्रुद्ध पशु रोंआ फुलाये जो खड़ा है–
दाँत से उसके दबी रोटी छिनाओ।
छाँह में पट्टे मशीनों के तमाचे मारते हैं,
यंत्र की लम्बी धुरी सिर पर भयंकर चीखती है।
और ऐसी वायु नीरस है यहाँ की,
स्वाँस गहरी ले नहीं सकते सहज तुम!

❐

एलेक्ज़ेण्डर पुश्किन

इस महान् रूसी लेखक का पूरा नाम एलेक्ज़ेण्डर सेरेगेईविच पुश्किन (Alexander Sergeyevich Pushkin) था। 6 जून, 1799 को मास्को में जन्मे पुश्किन रोमाण्टिक-काल के महान्तम कवि और आधुनिक रूसी-साहित्य के संस्थापक माने जाते हैं। अपनी कविताओं और अपने नाटकों में देशज बोलियों के प्रयोग के लिए भी वे याद किये जाते हैं। 15 वर्ष की उम्र में इनकी पहली कविता प्रकाशित हुई थी।

इनके पिता का नाम सेरेगेई ल्वोविच पुश्किन (Seregeye Lvovich Pushkin), माँ का नाम नाड्जा ओसीपोब्ना हैनिबल (Nadezhda Ossipovna Hannibal) तथा पत्नी का नाम नाताल्या गोञ्चारोवा (Natalya Goncharova) था।

पुश्किन सामाजिक बदलाव के लिए समर्पित एक विद्रोही कवि थे। इसके लिए इन्हें सरकार का कोप-भाजन भी बनना पड़ा।

एक कवि, उपन्यासकार और नाटककार के रूप में विख्यात पुश्किन की मौत 10 फरवरी, 1837 को मात्र 37 वर्ष की उम्र में सेण्ट पीटर्सबर्ग में हुई।

उनकी रचनाएँ हैं–The Bronze Horsman (Poem), The Stone Guest (Drama), Mozart and Salieri (Poetic short drama), Eugene Onegin (verse novel), Onegin (novel), Ruslam and Ludmila (Poem), The Prisioner of Caucasus (Peoms), The Gabrielad (Poem) The Robber Brothers (Poems) Bores Godunov (Drama), The Little Tragidies (Drama) आदि।

नहीं किसी ने निर्मित की मेरी समाधि है

नहीं किसी ने निर्मित की मेरी समाधि है;
नहीं राष्ट्र का पथ मंजिल तक घास ढँकेगी।
जार अलेक्जेंडर की सेना के दस्तों से
अधिक प्रतापी और उग्र यह लोक-राष्ट्र है।

❐

दीर्घ काल तक जनता मुझको प्यार करेगी

दीर्घ काल तक जनता मुझको प्यार करेगी,
मैंने उसके मृदु भावों का सरगम गाया,
भय के युग में आजादी का जोश बढ़ाया
मैंने खंडित आत्मा से आशा अपनाया।

❐

प्लेतान वोरोन्को

ठौर चुना बंजर में हमने काम लगाया

ठौर चुना बंजर में हमने काम लगाया,
लौह गलाया, हमने सीमेंट साथ मिलाया,
गौरव है हमको जो हमने नगर बसाया,
नीलाम्बर की पड़ती है उस पर छवि छाया।
जन्म वहाँ बच्चों ने पाया, सूरज चमका,
धूप रुपहली में तपकर, उनका मुख दमका।
यूरल लोगों ने मणियाँ अनमोल लुटायीं,
चन्द्रकान्त मणि आदि अनेकों उन्हें चढ़ायीं।
फैक्टरियों ने अरु खेतों ने उपज बढ़ायी,
उनके खातिर उपहारों की हाट सजाई।
देश इन्हीं बच्चों के खातिर लड़ा लड़ाई,
जियें, बढ़ें, सुख-शांति रहे, बज उठे बधाई।

❐

मूसा जलील

तातार कवि मूसा जलील का जन्म सोवियत संघ के गणराज्य तातार के एक शहर ओरेनबर्ग (ORENBURG) के एक छोटे से गाँव मुस्ताफिनो में सन् 1906 में हुआ था। सोवियत क्रान्ति के पहले ग़रीबी, बदहाली, भूख, बदसलूकी के क्या मायने होते थे, इसे मूसा जलील बचपन से ही जानते थे—जानते क्या थे—उसके भुक्तभोगी थे। 1921 में जब भयंकर अकाल पड़ा, तो घर छोड़कर इसलिए चले गये, ताकि परिवार पर एक और पेट भरने का भार कम हो जाय। बाद में सोवियत शासन ने उन्हें शिक्षा दी और एक सम्माननीय नागरिक बनाया।

उनकी प्रसिद्धि का मूलाधार है 'द मोबिट नोटबुक्स' (THE MOABIT NOTE BOOKS) की कविताएँ। यह उनकी तथा साथ-साथ तातार कविता का शिखर काव्य-ग्रन्थ है। ये कविताएँ स्वनिर्मित नोटबुक्स में मूसा जलील ने तब लिखी थीं, जब वह द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान; एक सैनिक टुकड़ी के साथ अगस्त 1943 में जर्मनी में गिरफ्तार हुए थे और वहाँ के मोबिट जेल में रखे गये थे। इनका प्रकाशन उनकी मृत्यु (अप्रैल 1945) के बाद सम्भव हुआ। उन्हें मरना कबूल था, पर गुलाम रहना नहीं।

मूसा जलील की कविता किसी खास ढर्रे या शिल्प की कविता नहीं है। सामाजिक सरोकार के कवि होने के नाते जब-जैसी जरूरत हुई, वैसी कविताएँ लिखीं; मसलन—गीत, व्यंग्य, प्रचारात्मक, नारेबाजी आदि अनेक तरह की कविताएँ लिखीं। कविताओं के अलावा लेख, निबन्ध और रिपोर्ताज भी लिखे। मूसाजलील ने बच्चों की कविताएँ भी लिखीं। बच्चों की दो पत्रिकाओं 'लिटिल कामरेड्स' तथा 'चिल्ड्रेन ऑव अक्तूबर' का सम्पादन भी किया।

मूसा जलील लोकप्रियता में सबसे ऊपर हैं। उनकी कविताओं के संस्करणों की एक लाख प्रतियाँ बिकने में महज चन्द महीने लगते हैं। कज़ान संस्करण की तो ढाई लाख प्रतियाँ छपी थीं। दुनिया की तमाम भाषाओं में इनकी कविताएँ अनूदित हो चुकी हैं।

मूसा जलील सोवियत संघ के अकेले ऐसे लेखक हैं, जिन्हें मरणोपरान्त सोवियत संघ के दो सर्वोच्च सम्मानों—'हीरो ऑव सोवियत संघ' (व्यक्तिगत साहस और उत्कृष्ट कर्त्तव्य परायणता के लिए) तथा 'लेनिन पुरस्कार' (द मोबिट नोटबुक्स के लिए) से एक साथ सम्मानित किया गया।

मेरा उपहार

काश आ सकते पुनः वे पास मेरे
जिन्दगी के पुष्प विद्रोही घनेरे
मित्र मेरे! तब तुम्हें उपहार देता
पुष्प तुम पर जन्म-भू के वार देता

किन्तु उपवन और घर-सब प्राण प्यारा
दूर है, अब दूर है निज मुक्ति-धारा
पुष्प भी अब हैं यहाँ के म्लान छाया
भूमि भी अब है यहाँ की मृत्यु-काया

पास मेरे है दहकता हृदय मेरा
घेर पाया नहीं तम का उसे घेरा
अस्तु कविता इस हृदय की गुनगुनाता
पुष्प वासंतिक स्वरों के मैं चढ़ाता

मृत्यु के उपरांत मेरा काव्य होगा
देश में सर्वत्र जन का श्राव्य होगा;
बंदियों के भी हृदय में फूलते हैं
पुष्प कविता के, सुकोमल झूलते हैं

❐

जॉन कॉर्नफोर्ड

इस अंग्रेजी कवि का पूरा नाम था रूपर्ट जॉन कॉर्नफोर्ड (Rupert John Cornford)। यह एफ० एम० कॉर्नफोर्ड और फ्रैन्सेस कॉर्नफोर्ड (Frances Cornford) की संतान थे। अपनी माँ के पक्ष की ओर से यह प्रख्यात प्रकृतिवादी चार्ल्स डार्विन के परनाती थे।

कॉर्नफोर्ड 27 दिसम्बर, 1915 को कैम्ब्रिज में पैदा हुए थे। इतिहास में स्नातक करने के दौरान ही वह ग्रेट ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बन गये थे। 1933 से ही कम्युनिस्ट पार्टी के कामों में सीधी भागीदारी करने लगे। स्पेनिश सिविल वार के दौरान वह कॉरडोबा (Cordoba) के पास लोपेरा (Lopera) में 28 दिसम्बर, 1936 को मारे गये। इस समय इनकी उम्र ठीक 21 वर्ष थी।

जार्ज ऑरवेल की राय में इन्होंने अपनी कविताओं में पुरानी शाही परंपराओं को ही आगे बढ़ाया है।

नहीं कभी

नहीं कभी
कुछ भी
जन्मा है
बिना आर्त्तरव
और रक्त के।

❐

ऐंड्रियाई मैलीश्को

हाँ, निश्चय ही, अविचल रहकर अडिग खड़े वे

हाँ, निश्चय ही, अविचल रहकर अडिग खड़े वे,
नहीं झुकेंगे—नहीं बिकेंगे।
निज स्वत्वों के लिये निरन्तर युद्ध करेंगे,
स्वप्न सत्य कर स्वर्ग रचेंगे।

❐

एक चीनी कविता

कटैयों का गीत

हमारे नगरों के चहुँ ओर
सिपाही लड़ते हैं झकझोर
उमड़ता रहता है रण रोर
तड़पती जनता है सब ओर
हमें दुख भारी है

हृदय में आता एक विचार
गलाएँ युद्धों के औजार
बनाएँ खेती के औजार
काम में लायें कृषक-कुमार
इसी की बारी है

करोड़ों लोगों में हो चाह
हिलोरें लेता हो उत्साह
कुमारी धरती का हो ब्याह
बैल हल खीचें भरे उछाह
जुताई जारी हो

खेत में उपजे अन्न अपार
कटाई का आये त्यौहार
मगन मन नाचे नव संसार
गीत का उमड़े पारावार
सुहागिन नारी हो

❐

शेली, कीट्स, डब्ल्यू. एस. लेण्डर
तथा
रवीन्द्रनाथ टैगोर
की कविताओं के अनुवाद,
जिन्हें 'सम्मान : केदारनाथ अग्रवाल'
समारोह (1986)
के अवसर पर
डॉ० रामविलास शर्मा ने
केदारजी के आवास पर
सम्पादक को लिखवाई थीं।
इन्हें वह अपने साथ खास इसी उद्देश्य से
दिल्ली से ले आये थे।

शेली

अंग्रेजी के इस अति महत्त्वपूर्ण रोमाण्टिक गीतात्मक कवि का नाम था पर्सी बाइश शेली (Percy Bysshe Shelly) इनका जन्म 4 अगस्त, 1792 को होरशम (Horsham) इंगलैण्ड में हुआ था। इनके पिता सर तिमोती शेली (Sir Timolhy Shelly) थे।

शेली का पूरा जीवन मात्र 29 साल का रहा; पर उनकी प्रतिभा हज़ारो-हज़ार साल तक अपना लोहा मनवाती रहेगी। उनके लेखन ने अपने बाद की तीन-चार पीढ़ियों को प्रभावित किया। उनसे प्रभावित होनेवालों में रॉबर्ट ब्राउनिंग, लार्ड टेनीसन, दाँते, लार्ड बायरन, यीट्स, जीवनानंद दास, सुब्रमण्यम भारती आदि उल्लेखनीय नाम हैं।

कार्ल मार्क्स, जार्ज बर्नार्ड शा, बर्ट्रेण्ड रसल आदि विश्व की अनेक महान् विभूतियों ने शेली की प्रशंसा की है। कहा जाता है कि शेली के सविनय अवज्ञा (Civil Disobedience) से गाँधी जी इतने प्रभावित हुए थे कि आगे चलकर उन्होंने इसे आजादी की लड़ाई के एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। शेली की 'The Masque of Anarchy' गाँधी जी को बहुत प्रिय थी। उनकी अन्य महत्त्वपूर्ण काव्य-कृतियाँ हैं –Ozymandias, Ode to the West Wind, To a Skylark, Prometheus Unbound, Alastar, Adonais, The Revolt of Islam इत्यादि।

कविताओं के अलावा शेली ने नाटक, उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं। इनकी मृत्यु 8 जुलाई, 1822 को इटली में एक नाव दुर्घटना में हुई।

क्या तुम नभ पर चलते चलते

क्या तुम नभ पर चलते चलते
संगी साथी बिना विचरते,
अवनी अपलक, नित्य निरखते,
घटते बढ़ते और बदलते,
प्यार न पाकर पियराए हो,
शून्य नयन से पथराए हो ?[1]

12–8–1956

❐

कर्ण प्रिय कोमल स्वरों के पतन पर भी

कर्ण प्रिय कोमल स्वरों के पतन पर भी
गीत का संगीत स्मृति में गूँजता है।
नयन प्रिय मनहर सुमन के निधन पर भी
रूप शय्या पर पँखुरियाँ राजती हैं।
प्रेमिका के त्याग पर–प्रस्थान पर भी,
प्रेम को सुधियाँ प्रिया की पालती हैं॥[2]

8–2–1957

❐

---

1. शैली की कविता 'टू दि मून' का अनुवाद।
2. शैली की कविता 'म्यूजिक ह्वेन सॉफ्ट वाइसेस ड्राई' का अनुवाद।

डब्ल्यू. एस. लेण्डर

अंग्रेजी के रचनाकार वाल्टर सेवेज लेण्डर (Water Savage Lander) का जन्म 30 जनवरी, 1775 को वारविक (Warwick) इंगलैण्ड में हुआ था। इनके पिता का नाम डॉ० वाल्टर लेण्डर और माँ का नाम एलिजाबेथ सेवेज था। पत्नी जूलिया थुइलिया (Julia Thuillier) थीं, जिनसे 1811 में शादी की।

लेण्डर कवि होने के साथ-साथ एक महत्त्वपूर्ण गद्यकार और राजनीतिक लेखक थे। उनका काल्पनिक संवाद (Imaginary Conversation) उनके महान् गद्यकार होने का श्रेष्ठतम उदाहरण है।

उन्होंने अंग्रेजी और लैटिन दोनों भाषाओं में रचनाएँ की।

उनकी कुछ कृतियाँ है–"The Poems of Water Savage Lander, Moral Epistle, Rose Aylmer, Gebir, Simonidea आदि।

इन्होंने अनेक देशों की यात्राएँ की। लेण्डर एक अति संवेदनशील कवि माने जाते हैं। प्रेम कविताओं में इनकी संवेदनशीलता चरम पर प्रकट होती है। अपने विरोधियों और राजनेताओं पर इन्होंने हास्य-परक व्यंग्य भी लिखे हैं।

1 मई, 1864 को 89 वर्ष की उम्र में यह महान् रचनाकार इस दुनिया से कूच कर गया।

विदाई

लड़ा नहीं है, अपनी मैंने जोट न पाई;
पुण्य प्रकृति की ललित कला ही मुझको भाई;
जीवन-अग्नि जलाई–मैंने देह तपाई,
मंद हुई वह अग्नि, बुझी, दो मुझे विदाई।

12-8-1956

❐

जॉन कीट्स

जॉन कीट्स का जन्म 31 अक्टूबर, 1795 को, 85 मूरगेट, लंदन, इंग्लैण्ड में हुआ था। पिता का नाम थामस कीट्स और माँ का नाम फ्रैन्सेस जेनिंग्स कीट्स (Frances Jennings Keats) था। 1804 में इनके पिता और 1805 में इनके दादा का देहान्त हो गया। 1810 में इनकी माँ भी तपेदिक से चल बसीं। 25 वर्ष की आयु में कीट्स भी तपेदिक के काल के गाल में समा गये।

अंग्रेजी साहित्य के रोमांटिक आन्दोलन के वह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कवि थे। उनके बाद के जिन अनेक कवियों पर उनकी कविता का प्रभाव देखा जा सकता है, उनमें से अल्फ्रेड टेनीसन भी थे।

उनके सम्बोधन गीतों में अलंकृत शब्द-चयन और ऐन्द्रिक बिम्बात्मकता अंग्रेजी साहित्य की अनूठी धरोहर है।

कीट्स की मृत्यु 23 फरवरी, 1821 को रोम के पैपल (PAPAL) स्टेट में हुई।

उनकी प्रमुख काव्य-रचनाएँ है– Isabella, St. Agnes Eve, Lamia, Hyperion, Endymion.

कविता की गम्भीर पंक्ति

कविता की गम्भीर पंक्ति के शान्त विभव के सुस्पंदन में
हम निहारते हैं लहराते देवदारु का पेड़ मेड़ पर
और कथानक जब रूपायित हो जाता है सुन्दरता से
हम अनुभव करते हैं रक्षित हुए किसी 'हायोर्न' कुंज का
लेकिन जब वह अपने चिंतित पंख पसारे आगे चलता
उसके मनमोहक आलेखन में आत्मा अपनी खोती है।[1]

---

1. कीट्स की 'आई स्टुड टिपटो अपॉन लिटिल हिल' की 127 से 130 पंक्तियों का अनुवाद।

गिरि गह्वर के गहन छाँह छाए विषाद में

गिरि गह्वर के गहन छाँह छाए विषाद में
पूरा डूबा, दूर प्रात की स्वस्थ स्वास से
दूर प्रखर मध्याह्न–ताप–संध्या–तारा से
शिला खंड–सा जड़ बैठा था श्वेत–केश शनि
निज निवास के अनालाप–सा वाणी वंचित;
वन–पर–वन सिर के समीप थे घन–पर–घन से।
जीवन भी ऐसा अक्षम था जैसा अक्षम
ग्रीष्म दिवस में होके हटाए नहीं बीज लघु
पंखिल शाद्वल के शरीर को धीमे छूकर
उपरत पात पड़ा था भू पर जहाँ गिरा था।
निर्झर भी नि:स्वन बहता था वहीं निकट से
अधिकाधिक जड़ जठर रूप धर तम–सा फैला,
निज देवत्व–पतन पीड़न के कटु कारण से
जल की परी घिरी नरकुल के बीच अकेली
ओठों पर तर्जनी हिमानी धरे खड़ी थी।[1]

8–2–1957

❐

---

1. कीट्स की 'हाइपीरियन' के पहले स्टैंजा का अनुवाद।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर

भारतीय मनीषा की अद्‌भुत मिसाल गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई, 1861 को देवेन्द्रनाथ टैगोर और शारदा देवी के यहाँ कलकत्ता में हुआ था। आठ साल की उम्र में उन्होंने पहली कविता लिखी। 16 साल की उम्र में 'भानुसिंह' के छद्‌म नाम से उनकी पहली कविता प्रकाशित हुई। 1877 में बंगला की पहली कहानी टैगोरकृत 'भिखारिनी' मानी जाती है।

अपने पिता के साथ टैगोर ने 1873 में ही पूरे भारत का भ्रमण किया। 1878 में अध्ययन के लिए इंग्लैण्ड गये। यूनिवर्सिटी कालेज लंदन में कानून की पढ़ाई की, पर बिना डिग्री के ही 1980 में वापस आ गये। 1883 में मृणालिनी देवी से शादी की। 1901 में टैगोर शांतिनिकेतन गये। वहाँ एक आश्रम की स्थापना की, जो अपने आप में एक अनोखा प्रयोग था–प्रकृति की गोद में बसा शिक्षा, संगीत, चित्रकला, नाट्यकला आदि का अद्‌भुत संसार। 1913 में टैगोर को साहित्य का नोबल सम्मान मिला। 1915 में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें 'नाइट हुड' की उपाधि दी, लेकिन 1919 में जब जलियाँवाला बाग काण्ड हुआ, तो उन्होंने यह 'नाइट हुड' वापस कर दी।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने दुनिया के तमाम देशों की यात्राएँ की, वहाँ भाषण दिये। उन्होंने दुनिया की अनेक महान् विभूतियों से मुलाकात की। इनमें रोम्यां रोला, बर्टेण्ड रसेल, आइन्स्टीन, यीट्स, एज़रा पाउण्ड, जार्ज बर्नार्ड शा, एच० जी० वेल्स, राबर्ट फ्रास्ट आदि प्रमुख हैं।

टैगोर आधुनिक बंगाल के शिल्पी थे। बँगला साहित्य और बँगला संगीत को एक नया जीवन दिया–एक नयी ऊँचाई दी। रवीन्द्र संगीत नाम से एक नयी धारा ही चल पड़ी। टैगोर शायद पहले ऐसे कवि हैं, जिन्होंने दो-दो देशों को उसका राष्ट्रगान दिया 'जनगणमन' भारत का राष्ट्रगान है और 'आमार सोनार बाँगला' बाँगला देश का।

उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं–मानसी, सोनार तारी, गीतांजलि, गीतिमाल्या, बलाका (सभी कविताएँ); वाल्मीकि प्रतिभा, विसर्जन, राजा, डाकघर, मुक्तधारा, रक्तकरवी, चण्डालिका, चित्रांगदा (सभी नाटक); चतुरंग, शेशेर कविता, चार अध्याय, नौका डूबी, घरे बाहरे (सभी उपन्यास) तथा 'गल्पगुच्छ' (कहानी) आदि।

गुरुदेव का देहावसान 7 अगस्त, 1941 को 80 वर्ष की उम्र में कलकत्ता में हुआ।

गुरुदेव पर केदारजी ने एक कविता लिखी थी जो यहाँ उद्धृत की जा रही है।

महाकवि रवीन्द्रनाथ के प्रति

कवि! वह कविता जिसे छोड़कर
चले गये तुम, अब वह सरिता
काट रही है प्रान्त-प्रान्त की
दुर्दम कुण्ठा—जड़ मति-कारा
मुक्त देश के नवोन्मेष के
जनमानस की होकर धारा।

काल जहाँ तक प्रवहमान है
और जहाँ तक दिक्-प्रमान है
गये जहाँ तक वाल्मीकि हैं
गये जहाँ तक कालिदास हैं
वहाँ—दूर तक प्रवहमान है
आँसू-आह-गीत की धारा
तुमने जिसको आयुदान दी
तुमने जिसका रूप सँवारा।
आज तुम्हारा जन्म-दिवस है
कवि, यह भारत चिरकृतज्ञ है।

8-5-1961

दिन अँधेरा–मेघ झरते

दिन अँधेरा–मेघ झरते,
खल पवन के, आक्रमण से
वन दुखी बाहें उठाये
रोर हाहाकार करता
चपल चपला जलद पट को
छिन्न करके झाँकती है
हास बंकिम हृदयभेदी
शून्य से भू पर बरसता।[1]

5–11–61

❐

1. रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविता 'मेघदूत' के आठवें स्टैंजा का अनुवाद।

मूल कवि के नामोल्लेख से वंचित कविताएँ

हे भगवान

हे भगवान, मेरी आँख के रोग को सहारा दो
कहीं ऐसा न हो कि असीम दिक् और प्रलम्ब पुरातन
मेरा हृदय निचोड़ लें
और इस भयंकर भूमि पर
मेरे छोटे शंख को
बड़ी हवा सस्वर मार डाले।

❐

लुढ़कता रहा हूँ

लुढ़कता रहा हूँ मैं अन्दर आकाश की सलवटों में
मार्ग का तल था एक स्वप्न के समीप
तो भी आसमान के चौड़े मुख से
मैंने खरोंच ली अपने आँखें बाहर
देखने के लिए
वाष्प के मृदुल उरोजों के पार
और मैंने सुन लिये बिगुल बजते
भौतिक स्वरों के।

❐

केदारनाथ अग्रवाल
का रचना संसार